

Springboard
ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS PRELIMS

2024 - 2025

**भारत का
प्राचीन इतिहास
प्रारम्भिक परीक्षा**



नरेन्द्र सर

पाठ्यक्रम

प्राचीनकाल :-

- ☑ भारत के सांस्कृतिक आधार - सिंधु एवं वैदिक काल, छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा और नये धार्मिक विचार - आजीवक, बौद्ध तथा जैन।
- ☑ प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ : मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल।
- ☑ प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु।
- ☑ प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास : संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1-9
2.	वैदिक साहित्य, ऋग्वैदिक काल, उत्तरवैदिक काल	10-22
3.	महाजनपदकाल	23-25
4.	धार्मिक क्रांति - बौद्ध धर्म, जैन धर्म, भागवत धर्म, शैव धर्म, शाक्त धर्म, आजीवक सम्प्रदाय	26-40
5.	मौर्य वंश	41-55
6.	मौर्योत्तर काल कुषाण व सातवाहन वंश	56-63
7.	गुप्त काल, भारतीय दर्शन	64-80
8.	संगम काल	81-83
9.	चालुक्य, पल्लव, चोल वंश	84-91
10.	त्रिपक्षीय संघर्ष	92-96
11.	प्राचीन भारतीय साहित्य - संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल	97-99

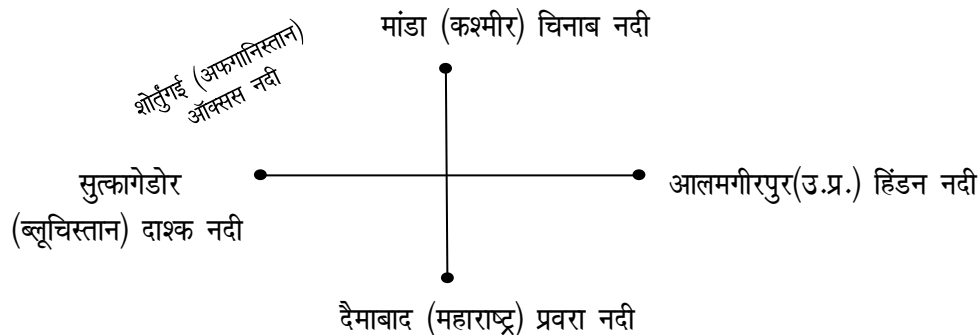
भारत का प्राचीन इतिहास

सिंधु घाटी सभ्यता

- समय — 2600—1900 BC
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है।
- “मेसोपोटामिया सभ्यता” विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है।

नोट — “हम्मूरावी संहिता” — यह कानून/आचार संहिता का विश्व में प्राचीनतम स्रोत है।

- यह सभ्यता दजला और फरात नदी के किनारे पर स्थित है। (ईराक)
- सिंधु घाटी सभ्यता एक “शहरी/नगरीय सभ्यता” थी।
- यह सभ्यता अपनी ‘सुदृढ़ जल निकासी व्यवस्था’ के लिए प्रसिद्ध है।
- 1826 — चार्ल्स मेसन ने सर्वप्रथम इस सभ्यता पर प्रकाश डाला।
- 1853 — “अलेक्जेंडर कनिंघम” ने हड़प्पा का सर्वे और उत्खनन किया।
- 1856 — जॉन बर्टन और विलियम बर्टन लाहौर से करांची के बीच रेलवे लाइन बिछा रहे थे एवं उन्होंने अनजाने में हड़प्पा की ईंटों का प्रयोग किया।
- 1856 — अलेक्जेंडर कनिंघम ने दूसरी बार हड़प्पा का सर्वे किया।
- 1861 — भारतीय पुरातत्व विभाग (ASI) की स्थापना की। (अलेक्जेंडर कनिंघम - ASI का जनक)
- 1922 — सर जॉन मार्शल ने राखलदास बनर्जी को मोहनजोदड़ो का उत्खनन करने हेतु नियुक्त किया।
- 1924 — सर जॉन मार्शल ने सिंधु घाटी सभ्यता की घोषणा की।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य नाम -
 1. हड़प्पा सभ्यता
 2. सिंधु सरस्वती सभ्यता
- इतिहासकार पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिंधु घाटी सभ्यता की “जुड़वाँ राजधानियाँ” कहा।
- सिंधु घाटी सभ्यता -
 - यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता है।
 - लगभग 13 लाख Km² क्षेत्र में फैली हुई है।
 - विस्तार (तीन देशों में) - भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान।
 - IVC एक त्रिभुजाकार एवं कांस्ययुगीन सभ्यता है।



- **काल** - समय का निर्धारण C-14 (कार्बन डेटिंग) पद्धति से किया जाता है।
 - 2600 BC – 1900 BC → नई NCERT के अनुसार
 - 2350 BC – 1750 BC → पुरानी NCERT के अनुसार
 - 3250 BC – 2750 BC → सारगोन अभिलेख के अनुसार

☑ सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल –

1. हड़प्पा –

- स्थिति - मोंटगोमरी (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान)
(वर्तमान - शाहीवाल जिले में)
- रावी नदी के तट पर स्थित।
- उत्खननकर्ता - दयाराम साहनी
- अवशेष/साक्ष्य -
 1. कब्रिस्तान - (R-37)
 2. विदेशी की कब्र - (एक लकड़ी के ताबुत में दफनाया गया।)
 3. इक्का गाड़ी
 4. शृंगार पेटिका
 5. स्वास्तिक का निशान
 6. 12 अन्नागार (रावी नदी के तट पर) - पास में चबूतरों (18) के साक्ष्य
- श्रमिक आवास (15) के साक्ष्य
 7. हड़प्पा से प्राप्त एक मुहर जिसमें देवी के गर्भ से एक पौधा निकलता हुआ दर्शाया गया है।
जिसे “**धरती माता/पृथ्वी माता**” कहा जाता है।

2. मोहनजोदड़ो –

- स्थिति - लरकाना जिला (सिंध, पाकिस्तान)
- सिंधु नदी के तट पर स्थित।
- उत्खननकर्ता - राखलदास बनर्जी
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ - “मृतकों का टीला”
- अवशेष /साक्ष्य -

1. विशाल स्नानागार -

- आकार - 39×23×8 फीट
- पक्की ईंटों से निर्मित।
- जल रिसाव रोकथाम हेतु बिटुमिनस/जिप्सम का लेप किया गया है।
- स्नानागार के उत्तर तथा दक्षिण में नीचे उतरने के लिए चौड़ी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।
- चारों तरफ बरामदे हैं। बरामदों के पीछे तीन तरफ कई कक्ष बने हुए हैं।
- जलापूर्ति हेतु कुआँ भी बना हुआ है।
- प्रथम तल के कमरों का प्रयोग संभवतः पुरोहित वर्ग करते होंगे।
- इस विशाल स्नानागार का प्रयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठानों के लिए किया जाता रहा होगा।
- ‘सर जॉन मार्शल’ ने इसे “तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत” बताया है।

2. नर्तकी की मूर्ति -
 - निर्माण - लॉस्ट वैक्स (मोम तकनीक) कास्टिंग से हुआ है।
 - कास्यं से निर्मित मूर्ति।
 - नग्न अवस्था में (केवल आभूषण धारण किए हुए)
 - इसके एक हाथ में चूड़ियाँ एवं दूसरे हाथ में ताबीज एवं कड़ा है।
 - गले में हार है।
 - भारतीय नृत्य की 'त्रिभंगा शैली' में खड़ी है।
3. पुरोहित राजा की मूर्ति -
 - शैलखड़ी पत्थर से निर्मित मूर्ति।
 - ध्यान की अवस्था में है आँखे आधी बंद एवं खींची हुई है।
 - इसने शॉल ओढ़ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है।
 - आकार - 17.5 cm. (ऊँचाई) एवं 11 cm (चौड़ाई)
4. विशाल अन्नागार -
5. महाविद्यालय के साक्ष्य
6. सूती कपड़े के साक्ष्य
7. हाथी दाँत/शंख का कपालखण्ड
8. मेसोपोटामिया की मुहर - बेलनाकार एवं विदेशी व्यापार का साक्ष्य है।
9. घोड़े का दाँत
10. शंख का स्केल (पैमाना)
11. पशुपतिनाथ की मुहर -
 - इसके बांयी ओर गेंडा तथा दांयी ओर हाथी और चीता तथा सामने दो हिरण है।
 - सर जॉन मार्शल ने इसे "आद्य शिव" एवं "पशुपतिनाथ" कहा है।
 - सर जॉन मार्शल ने इसे भगवान शिव का एक रूप माना है।
 - पशुपतिनाथ का मंदिर - काठमांडू (नेपाल)

नोट - यहां से किसी कब्रिस्तान का अवशेष प्राप्त नहीं होता है इसका तात्पर्य है कि यहां लोगों का दाह संस्कार किया जाता था।

3. लोथल -

- स्थिति - गुजरात
- भोगवा नदी के किनारे स्थित।
- उत्खननकर्त्ता - एस.आर.राव (रंगनाथ राव)
- यह एक व्यापारिक नगर था।
- अवशेष/साक्ष्य -

1. गोदीवाड़ा (डॉक्यार्ड) - सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति माना जाता है।
2. मनके बनाने का कारखाना
3. चावल और बाजरा के साक्ष्य

4. चालाक लोमड़ी के साक्ष्य
5. फारस की मुहर प्राप्त जो गोलाकार व बटननुमा है।
6. घोड़े की मृण्मूर्तियाँ
7. शतरंज बोर्ड मिलता है
8. चक्की के दो पाट
9. लोथल एकमात्र स्थल था जिसमें घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते थे।
10. नावों के खिलौने

4. धौलावीरा -

- स्थिति - खाडिरबेट द्वीप, कच्छ मरुभूमि, वन्य जीव अभयारण्य (गुजरात)
- खोजकर्ता - जगतपति जोशी (1967 ई.)
- उत्खननकर्ता - रवीन्द्र सिंह बिष्ट (1990 से 2005 ई.)
- क्षेत्रफल - लगभग 120 एकड़
- धौलावीरा मनसर एवं मनहर जलधारा के मध्य स्थित है।
- नोट - धौलावीरा शहर किसी भी नदी के किनारे स्थित नहीं है।
- शहर तीन भागों में विभाजित है - दुर्ग, मध्य भाग व निम्न भाग
- अवशेष/साक्ष्य -
 1. 16 कृत्रिम जलाशय -
 - आकार 23 फीट गहरा व 256 फीट लम्बा है।
 - 2014 में एक जलाशय मिला जो 10 फीट गहरा, 241 फीट लम्बा एवं 96 फीट चौड़ा था।
 2. सूचना पट्ट -
 - जिप्सम से निर्मित दस अक्षरों/प्रतीकों वाला लकड़ी का बोर्ड मिला है।
 - प्रत्येक लगभग 37 cm. ऊँचा और 27 cm. चौड़ा एवं 3 मीटर लम्बा है।
 - सबसे पुराना साइन बोर्ड माना जाता है।
 3. स्टेडियम के साक्ष्य
 4. मनके बनाने के औजार
 5. रिंग
 6. मिट्टी के बर्तन
 7. टेराकोटा सील
 8. प्रस्तर (पत्थर) के साक्ष्य
 9. मध्यमा के साक्ष्य

नोट - वर्ष 2021 में यूनेस्को ने गुजरात के धौलावीरा को भारत के 40वें विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया है।

5. चन्हूदडो -

- स्थिति - सिंध, पाकिस्तान
- उत्खननकर्ता - एन.जी.मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी थी)
- यह एक औद्योगिक नगरी थी।
- अवशेष/साक्ष्य -
 1. मनके बनाने के कारखाने
 2. कुत्तों द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य
 3. लिपस्टिक के साक्ष्य
 4. कार्नेलियन मनके के अवशेष

6. सुरकोटड़ा -

- स्थिति - गुजरात
- खोजकर्ता - जगतपति जोशी
- अवशेष/साक्ष्य - घोड़े की अस्थियाँ

7. रोजदी -

- स्थिति - गुजरात
- अवशेष/साक्ष्य - हाथी के साक्ष्य

8. कुणाल - (पूर्व हड़प्पा स्थल है।)

- स्थिति - हरियाणा
- अवशेष/साक्ष्य -
 - चाँदी के दो मुकुट
 - लापिस लाजुली

9. दैमाबाद -

- स्थिति - महाराष्ट्र
- अवशेष/साक्ष्य - कांस्य (धातु) के चार रथ - (रथ, हाथी, गेंडा, भैंस)

10. रोपड़ (रूपनगर) -

- स्थिति - पंजाब
- अवशेष/साक्ष्य - मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

11. आमरी - (सिंध, पाकिस्तान) - गैंडे के साक्ष्य

12. बनावली -

- स्थिति - हरियाणा
- घग्घर नदी के किनारे
- उत्खननकर्ता - रवीन्द्र सिंह बिष्ट
- अवशेष/साक्ष्य -
 1. मिट्टी से निर्मित हल का खिलौना
 2. मातृदेवियों की मूर्तियाँ
 3. “जौ” (Barley) के साक्ष्य
 4. धावन पात्र (वॉश बेसिन)

13. राखीगढ़ी -

- स्थिति - हरियाणा
- घग्घर नदी के किनारे
- उत्खननकर्ता - अमरेन्द्रनाथ
- सिंधु घाटी सभ्यता का “सबसे बड़ा स्थल”

14. कालीबंगा -

- स्थिति - हनुमानगढ़, राजस्थान
- घग्घर नदी के किनारे
- उत्खननकर्ता - अमलानंद घोष
 - बी.बी.लाल
 - बी.के.थापर
- अवशेष/साक्ष्य -

1. बड़ी मात्रा में काली चूड़ियाँ एवं जुते हुए खेत के साक्ष्य
2. दोहरी फसलों के साक्ष्य
3. कच्ची ईंटें व अलंकृत ईंटें
4. लकड़ी की नालियाँ
5. यहाँ नाली व्यवस्था का अभाव है।
6. यहाँ एक खोपड़ी मिलती है जिसमें छः छेद हैं अतः इन्हें शल्य चिकित्सा का ज्ञान था।
7. यज्ञ वेदिका या हवन कुण्ड के साक्ष्य मिलते हैं।

नोट -

1. कालीबंगा, राखीगढ़ी, बनावली = प्राक् - हड़प्पा स्थल है।
2. रंगपुर, रोजदी (गुजरात) = उत्तर हड़प्पा स्थल है।
3. कोटला निहंग खा (रोपड़) और रंगपुर (गुजरात) आजादी के समय भारत में स्थित दो स्थल थे।
4. शोर्तगुई व मुंडिगाक स्थल = अफगानिस्तान में स्थित।

सिंधु घाटी सभ्यता का नगर नियोजन -

- सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- यह अपनी विशिष्ट नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध है।
- नगर दो भागों में बंटे हुए थे-
 - पश्चिमी भाग - यह हिस्सा दुर्गिकृत होता था एवं ऊँचे टीले पर स्थित होता था।
 - पूर्वी भाग - आवासीय भाग होता था।
- शहर 'आयताकार ग्रिड पैटर्न पर बसे' (शतरंज बोर्ड) हुए थे।
- सड़के एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी।
- घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर नहीं खुलते थे। (अपवाद - लोथल)
- एक घर में सामान्यतः तीन या चार कक्ष, खुला आँगन, स्नानागार एवं रसोई हुआ करते थे।
- उन्हें सीढ़ियों का भी ज्ञान था।
- कुछ घरों में 'कुओं के साक्ष्य' भी मिलते हैं। (मोहनजोदड़ो से लगभग 700 कुएँ मिलते हैं)
- नगर 'उत्कृष्ट जल निकासी व्यवस्था' के लिए प्रसिद्ध थे।
- प्रत्येक घर नाली व्यवस्था से जुड़ा हुआ होता था।
- नालियाँ पक्की ईंटों से निर्मित एवं ढकी हुई होती थी।
- मुख्य मार्ग पर नालियों को साफ करने के लिए नियमित अंतराल पर हौदिया बनी होती थी।
- यह व्यवस्था किसी अन्य समकालीन सभ्यता से नहीं मिलती है।
- सामान्यतः पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे।

- कुछ स्थानों से कच्ची ईंटों के साक्ष्य भी मिलते हैं।
- ईंटों का अनुपात 1 : 2 : 4 होता था।

राजनैतिक स्थिति -

- जानकारी का अभाव।
- सम्भवतया: पुरोहित वर्ग के पास शासन रहा होगा।

सामाजिक स्थिति -

- संभवतः मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे।
- समाज सम्भवतः चार भागों में विभाजित था।
 1. पुरोहित
 2. व्यापारी
 3. किसान
 4. श्रमिक/मजदूर
- बड़ी मात्रा में मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती हैं।
- शान्ति प्रिय समाज था।
- पुरुष एवं महिलाएँ श्रृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे।
- लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी थे।
- प्रिय खेल - शतरंज, मुर्गे की लड़ाई।
- अंतिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था - 1. पूर्ण शवाधान 2. आंशिक शवाधान 3. दाह संस्कार
- लोथल से तीन व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलते हैं।

आर्थिक स्थिति -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था व अधिशेष उत्पादन था।
- प्रमुख फसलें - गेहूँ, सरसों, चना, मटर, खजूर, तरबूज, जौ, तिल।
- चावल व बाजरे का ज्ञान नहीं था।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है।
- लोथल से चावल व बाजरे के साक्ष्य मिलते हैं।
- कपास की खेती विश्व में सर्वप्रथम भारत में प्रारम्भ हुई।
- शोर्तगुई (अफगानिस्तान) - नहरों के साक्ष्य मिलते हैं।
- धौलावीरा (गुजरात) - जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं।
- पशुपालन भी करते थे
- बैल, भैंस, भेड़, बकरी, खरगोश, सुअर इनके प्रिय पशु थे।
- यह ऊँट, घोड़ा व हाथी से परिचित नहीं थे।
- विदेशी व्यापार होता था।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु घाटी सभ्यता को 'मेलुहा (नाविकों का देश)' कहा गया है।

- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है।
- दिलमुन (बहरीन) व माकन/मगान (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था।
- वस्तु विनिमय होता था।
- सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे। लेकिन लोहे से अपरिचित थे।
- बालाकोट एवं नागेश्वर से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं।

धार्मिक स्थिति -

- बहुदेववाद, प्राकृतिक बहुदेववाद
- पुरुष व महिलाओं, देवताओं की पूजा तथा पशु-पक्षियों की भी पूजा करते थे।
- वह लिंग पूजा व योनि पूजा करते थे।
- जल एवं प्रकृति की पूजा तथा शाश्वत आत्मा में विश्वास करते थे।
- कर्म फल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- अंधविश्वास को मानते थे एवं पशु बलि देते थे।
- कालीबंगा से हवनकुंड मिलते हैं।
- ध्यान एवं योग का ज्ञान था।
- मोहनजोदड़ो से एक मुहर मिलती है जिस पर आद्यशिव/पशुपतिनाथ का चित्र है।

लिपि -

- IVC के लोगों को लिपि का ज्ञान था।
- भाव चित्रात्मक लिपि थी।
- लेखन शैली - दायें से बायें क्रम में लिखी जाती थी।
- इसे 'गौमूत्राक्षर लिपि' (हलासर लिपि) कहा जाता है।
- इसमें 375-400 भावों/चित्रों का प्रयोग किया जाता था।
- इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।

मूर्तिकला एवं मुहरें -

- सिंधु घाटी सभ्यता से तीन तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
 1. धातु की
 2. शैलखड़ी/पत्थर की
 3. मिट्टी (टेराकोटा) की
- मोहनजोदड़ो से धातु की 'नर्तकी की मूर्ति' प्राप्त होती है।
- दैमाबाद (दायमाबाद) से धातु का रथ मिलता है।
- मोहनजोदड़ो से मिट्टी का वृषभ (बैल) मिलता है।
- मोहनजोदड़ो से 'शैलखड़ी की पुरोहित राजा की मूर्ति' प्राप्त होती है। जो ध्यान की अवस्था में है।
- टेराकोटा की मातृदेवीयों की मूर्तियाँ मिलती हैं।
- ज्यादातर मुहरें शैलखड़ी की बनी हुई हैं।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी।

- मुहरें वस्तुओं की गुणवत्ता एवं स्वामित्व की पहचान की द्योतक थी।
- सर्वाधिक मुहरें मोहनजोदड़ों से मिलती हैं।
- सर्वाधिक 'लेखयुक्त मुहरें' हड़प्पा से मिलती हैं।
 1. एकसिंगा (सर्वाधिक)
 2. कूबड़ वाला सांड के चित्र

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के कारण -

क्र.सं	विचारक	पतन के कारण
1.	गार्डन चाइल्ड, मार्टीमार व्हीलर, पिग्गट	आर्यों का आक्रमण
2.	S.R राव, सर जॉन मार्शल व मैके	बाढ़
3.	सर जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
4.	अमलानंद घोष	जलवायु परिवर्तन (सबसे बड़ा कारण माना गया है)
5.	कैनेडी	प्राकृतिक आपदा
6.	माधोस्वरूप वत्स	नदियों ने अपना रुख बदल दिया
7.	IIT खड़गपुर सर्वे की रिपोर्ट	900 वर्षों के लगातार पड़े सूखे के कारण पतन

निष्कर्ष - इतनी विशाल सभ्यता के पतन के लिए बहुत सारे कारण उत्तरदायी रहे होंगे।

वैदिक काल (1500 BC - 600 BC)

1500-1000 BC

↓
ऋग्वेद

1000-600 BC

↓
3 वेदों की रचना

- | | | | | |
|-------------|---|--------------|---|---|
| 1. वेद | } | कर्म आधारित | } | यह वैदिक साहित्य है। इसे श्रुति साहित्य भी कहा जाता है। |
| 2. ब्राह्मण | | | | |
| 3. आरण्यक | } | ज्ञान आधारित | | |
| 4. उपनिषद् | | | | |

- | | | |
|------------|---|--|
| 1. वेदांग | } | यह वैदिक साहित्य नहीं है। इसे स्मृति साहित्य भी कहा जाता है। |
| 2. स्मृति | | |
| 3. पुराण | | |
| 4. रामायण | | |
| 5. महाभारत | | |

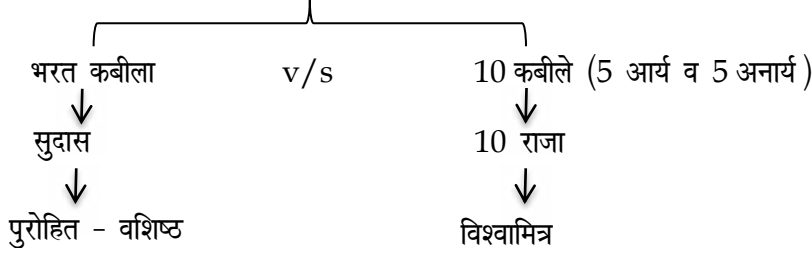
वेद -

- शाब्दिक अर्थ - 'ज्ञान'
- वेदों का संकलन 'कृष्ण दैपायन वेदव्यास' ने किया है।
- वेदों की रचना आर्यों ने की थी। (आर्यों को संघ लोक सेवा आयोग ने 'भाषायी समूह' माना है।)
- आर्य का शाब्दिक अर्थ 'कुलीन या श्रेष्ठ वर्ग' होता है।
- क्लासिकीय संस्कृति में आर्य शब्द का अर्थ - 'एक उत्तम व्यक्ति'
- वेद - नित्य, प्रमाणिक, अपौरुषेय है।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को 'दृष्टा' कहते थे।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाली महिलाओं को 'ऋषि' कहा जाता था।
- वेदों की संख्या चार है। (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)

1- ऋग्वेद -

- प्राचीनतम वेद
- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10600/10552 मंत्र/ऋचा है।
- पहला एवं दसवाँ मण्डल बाद में जोड़े गए थे।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को 'परिवार मण्डल/वंशमण्डल' कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख।
 - गायत्री मंत्र सवितृ/सूर्य को समर्पित है।
 - गायत्री मंत्र की रचना 'विश्वामित्र' ने की थी।

- गायत्री मंत्र को स्वर्ग को मंत्र बताया गया है।
- सातवें मण्डल में 'दशराज्ञ/दशराजन युद्ध' का उल्लेख मिलता है।



- परिणाम - भरत कबीला विजय रहा।
- यह युद्ध रावी नदी के तट पर लड़ा गया था।
- युद्ध का कारण - पुरोहित पद हेतु लड़ा गया था।
- सातवें मण्डल में 'महामृत्युंजय मंत्र' मिलता है।
- आठवें मण्डल में विदुषी/ऋषि महिलाओं के नामों का उल्लेख मिलता है।

1.	घोषा	2.	विश्वरा
3.	सिकता	4.	लोपामुद्रा
5.	अपाला	6.	काक्षावृती

- नौवां मण्डल सोम देवता को समर्पित है।
 - सोम देवता का निवास स्थान मुजवन्त पर्वत है।
- दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में चार वर्णों का उल्लेख मिलता है।
 - ब्राह्मण
 - क्षत्रिय
 - वैश्य
 - शुद्र
- दसवें मण्डल के नासदीय सूक्त में 'निर्गुण भक्ति' का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले को होतृ कहते थे।
- प्रत्येक वेद का एक उपवेद होता है जैसे ऋग्वेद का उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद -

- यजुर्वेद में 'यज्ञ करने की विधियाँ एवं कर्मकाण्ड' का उल्लेख है।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं -
 - कृष्ण यजुर्वेद - गद्य व पद्य में लिखित
 - शुक्ल यजुर्वेद - वाजसनेई/वाजसनेय संहिता भी कहते हैं।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले को 'अध्वर्यु' कहते हैं।
- यजुर्वेद में 'शून्य' का उल्लेख मिलता है।
- यजुर्वेद का उपवेद = धनुर्वेद

3. सामवेद -

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत है
- साम का शाब्दिक अर्थ - गायन से है।
- सामवेद ऋग्वेद के मंत्रों पर आधारित वेद है।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद 'सामवेद' है।
- सामवेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले को 'उद्गाता' कहते हैं।
- सामवेद का उपवेद = 'गंधर्ववेद'

4. अथर्ववेद -

- अन्य नाम -
 1. अथर्वगिरस वेद
 2. भेषज्य वेद (चिकित्सा)
 3. मही वेद (पृथ्वी)
- यह 'भौतिकवादी' वेद है।
- काला जादू/टाने, टोटके (तंत्र-मंत्र) का उल्लेख किया गया है।
- इसमें चिकित्सा पद्धतियों और औषधियों के बारे में उल्लेख मिलता है।
- अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले को 'ब्रह्म' कहते हैं।
- अथर्ववेद का उपवेद = 'शिल्पवेद'

नोट- वेदत्रयी/त्रयी -

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद

क्र.सं	वेदों के प्रकार	मंत्रोच्चारणकर्ता	उपवेद
1.	ऋग्वेद	होतृ	आयुर्वेद
2.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	धनुर्वेद
3.	सामवेद	उद्गाता	गंधर्ववेद
4.	अथर्ववेद	ब्रह्म	शिल्पवेद

☑ **ब्राह्मण साहित्य -**

- ब्राह्मण साहित्य में यज्ञ करने की विधि विधान व पद्धतियों को सरल भाषा में समझाया गया है।

क्र.सं.	वेदों के प्रकार	ब्राह्मण
1.	ऋग्वेद	1. ऐतरेय ब्राह्मण
		2. कौषितिकी ब्राह्मण
2.	यजुर्वेद	1. तैत्तिरीय/तैत्तरेय ब्राह्मण
		2. शतपथ ब्राह्मण
3.	सामवेद	1. पंचविश ब्राह्मण
		2. षड्विंश ब्राह्मण
		3. जैमिनीय ब्राह्मण
4.	अथर्ववेद	1. गोपथ ब्राह्मण

☑ **आरण्यक साहित्य -**

- इनकी रचना जंगलों/वनों में की गई थी।
- विषयवस्तु - दार्शनिक तत्व एवं रहस्यात्मक ज्ञान

क्र.सं.	वेदों के प्रकार	आरण्यक
1.	ऋग्वेद	1. ऐतरेय आरण्यक
		2. कौषितिकी आरण्यक
2.	यजुर्वेद	1. तैत्तिरीय/तैत्तरेय आरण्यक
		2. मेत्रायणी आरण्यक
		3. वृहदारण्यक
3.	सामवेद	1. तलवकर आरण्यक
4.	अथर्ववेद	कोई आरण्यक नहीं है।

☑ **उपनिषद् साहित्य -**

- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ - 'गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना'।
- यह वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है। इसलिए इसे 'वेदान्त' कहा जाता है।
- विषयवस्तु - दार्शनिक तत्व एवं रहस्यात्मक ज्ञान
- उपनिषद् गद्य व पद्य में है।
- स्वामी विवेकानंद एवं राजा राममोहन राय उपनिषदों के समर्थक थे।
- उपनिषदों की संख्या = 108

★ कुछ महत्वपूर्ण उपनिषद् -

1. कठोपनिषद्/कठ उपनिषद् -
 - यम व नचिकेता का संवाद।
 - इस उपनिषद् में अनुष्ठानों व कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है।
2. जाबालोपनिषद्/जाबाल उपनिषद् - इसमें चार आश्रमों के बारे में बताया गया है।
3. छांदोग्य उपनिषद् -
 - इस उपनिषद् में पहली बार भगवान श्री कृष्ण का उल्लेख मिलता है।
 - भगवान कृष्ण को देवकी का पुत्र एवं गुरु अंगीरस का शिष्य बताया गया है।
 - भगवान कृष्ण का वंश - 'वृष्णि वंश'
 - इसमें सत्यकाम - जाबाल की कहानी का उल्लेख है।
 - यह एक अविवाहित माता की कहानी है
 - सत्यकाम के गुरु - गौतम ऋषि थे।
 - जाबाल ऋषि का उल्लेख रामायण में है।
 - इसमें बौद्ध धर्म के 'पंचशील सिद्धान्त' का उल्लेख मिलता है।
4. वृहदारण्यक उपनिषद् -
 - यह सबसे बड़ा उपनिषद् है।
 - गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का संवाद (यह संवाद राजा जनक के दरबार में आत्मा के प्रश्न पर हुआ था।)
 - इसमें 'पवमान मंत्र' का उल्लेख मिलता है। (अस्तो माँ सद्गम्य.....)
5. मुण्डकोपनिषद् - 'सत्यमेव जयते' (सत्य की ही विजय होती है।) शब्द इस उपनिषद् से लिया गया है।
6. तैत्तिरीय उपनिषद् - बौद्ध धर्म के 'अष्टांगिक मार्ग' का उल्लेख।

नोट - प्रस्थानत्रयी - उपनिषद् + भगवद्गीता + ब्रह्मसूत्र (ब्रह्मसूत्र बादरायण की रचना है।)

☑ वेदांग -

- वैदिक साहित्य को समझने हेतु 'वेदांग' की रचना की गई है।
- इनकी संख्या '6' है।

1. शिक्षा - ■ शब्दों के उच्चारण की जानकारी। ■ पुस्तक - प्रातिशाख्य	2. व्याकरण - ■ पाणिनी रचित 'अष्टाध्यायी' ■ 'अष्टाध्यायी' व्याकरण की प्रथम पुस्तक है।
3. ज्योतिष - ■ "वेदों की आँख" ■ लगध मुनि का ज्योतिष वेदांग	4. छन्द - ■ "वेदों के पैर" ■ इसकी रचना पिंगल ने की थी।
5. कल्प - ■ "वेदों के हाथ" ■ यज्ञ सम्बन्धित दिशा निर्देश। ■ शूल्ब सूत्र की जानकारी।	6. निरुक्त - ■ "वेदों के कान" ■ निघण्टु/जटिल शब्दों की जानकारी मिलती है। ■ निरुक्त की रचना 'यास्क' ने की थी।

☑ पुराण -

- शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन आख्यान'
- पुराणों की रचना - गुप्त काल में।
- इनकी संख्या 18 है।
- पुराणों की रचना 'लोमहर्ष एवं उग्रश्रवा' ने की।
- पुराणों का ऐतिहासिक महत्व है।
- सर्वप्रथम पॉर्जीटर ने पुराणों के ऐतिहासिक महत्व को बताया था।

क्र. सं.	पुराण	संबंधित जानकारी
1.	मत्स्य पुराण	- प्राचीनतम पुराण। - इसमें शुंग एवं सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है।
2.	विष्णु पुराण	- मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त। - सबसे छोटा पुराण है।
3.	वायु पुराण	गुप्त वंश की जानकारी प्राप्त।
4.	मार्कण्डेय पुराण	- दुर्गासप्तशती की जानकारी प्राप्त। - भगवान शिव तथा विष्णु की जानकारी मिलती है।
5.	स्कन्द पुराण	सबसे बड़ा पुराण है।
6.	अग्नि पुराण	गणेश पूजा की जानकारी है।

☑ स्मृति साहित्य -

क्र.सं	स्मृति	संबंधित जानकारी
1.	मनुस्मृति	- यह प्राचीनतम स्मृति है। - इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है। - जर्मन दार्शनिक 'नीत्शे' कहता है - “बाइबल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ” - शुंग एवं सातवाहन वंश के समय इसकी जानकारी मिलती है। - विलियम जोन्स ने मनुस्मृति का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। - टीकाकार - भारूची - कुल्लक भट्ट - मेधातिथि - गोविन्दराज
2.	याज्ञवल्क्य स्मृति	टीकाकार - विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क।
3.	नारद स्मृति	दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है।
4.	कात्यायन स्मृति	आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख किया गया है।

ऋग्वैदिक काल (1500–100 BC)

- “विंटरनिज” ने ऋग्वैदिक काल के समय का निर्धारण किया था।

आर्यों की भौगोलिक स्थिति -

1. दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
2. बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव बाल गंगाधर तिलक की पुस्तकें - ✓ The Arctic Home of Aryans/Vedas. ✓ Orion ✓ Secret of Geeta.
3. डॉ. पेंका व हर्ट	जर्मनी
4. एल.डी. कल्ला	कश्मीर
5. गंगाधर झा	मध्य भारत/बृहन्न ऋषि देश
6. मेक्सम्युलर	मध्य एशिया (सर्वाधिक मान्य मत)

❖ बोगाजकोई अभिलेख -

- ✓ समय = 1400 BC
- ✓ प्राप्ति स्थल - तुर्की/एशिया माइनर
- ✓ चार ऋग्वैदिक देवताओं के नामों का उल्लेख
 1. इन्द्र
 2. वरुण
 3. मित्र
 4. नासत्य
- आर्य आरम्भ में सप्त सैधव में बस गए थे।
- सिंधु नदी आर्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।
- सरस्वती नदी सबसे पवित्र नदी थी।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में सरस्वती नदी को नदीतमा/महातमा कहा गया है।
- ऋग्वेद में गंगा एवं सरयू नदी का उल्लेख (एक बार) एवं यमुना नदी का उल्लेख (तीन बार) किया गया है।
- ऋग्वेद में सिंधु नदी की 5 सहायक नदियों का उल्लेख मिलता है।

क्र.सं	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
1.	विपाशा	व्यास
2.	सतुद्री	सतलज
3.	वितस्ता	झेलम
4.	पुरुष्णी	रावी
5.	अस्किनी	चिनाब

- ऋग्वेद में अफगानिस्तान की नदियों का भी उल्लेख मिलता है

जैसे -

क्र.सं	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
1.	गोमल	गोमती
2.	क्रुमु	कुर्रम
3.	स्वास्तु	स्वात
4.	कुभा	काबुल

- ऋग्वेद में एक 'मुजवंत पर्वतमाला' का भी उल्लेख मिलता है।

आर्यों की राजनैतिक स्थिति -

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।
- राजा को जनस्य गोप/गोप्ता कहा जाता था।
- कालांतर में गोप का पद वंशानुगत हो गया था।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।
- अधिकतर लड़ाईयाँ जानवरों तथा पशुओं हेतु लड़ी जाती थी।
- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी -
 1. विदथ -
 - प्राचीनतम संस्था
 - यह लूट के धन का बंटवारा करती थी।
 2. सभा -
 - वरिष्ठ व कुलीन लोगों का समूह।
 - ऋग्वेद में आठ बार सभा का उल्लेख किया गया है।
 3. समिति -
 - जनप्रतिनिधियों का समूह
 - ऋग्वेद में नौ बार समिति का उल्लेख किया गया है।
- राजा की सहायता हेतु बारह मंत्री होते थे जिन्हें 'रत्निन' कहा जाता था।
जैसे -
 - पुरोहित
 - युवराज
 - सेनानी
 - ब्राजपति/व्रजापति - गोचर भूमि का प्रमुख
 - सुत - रथ सेना का प्रमुख
 - पालागल - राजा का मित्र/दूत
 - भागदूध - राजस्व अधिकारी
 - बलि - राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर/उपहार।
 - प्रशनविनाक - न्यायाधीश/जज
 - स्पश - गुप्तचर

- राजनैतिक इकाईयाँ प्रमुख

जन	-	गोप
विश	-	विशपति
ग्राम	-	ग्रामणी
कुल	-	कुलुप

आर्यों की आर्थिक स्थिति -

- आर्य यायावर/घुमन्तु जीवन व्यतीत करते थे।
- प्रिय पशु - घोड़ा एवं गाय
- आर्य पशुपालन करते थे।
- ऋग्वेद में 'कृषि' शब्द का उल्लेख मात्र 24 बार मिलता है। उसमें से 21 क्षेपक है। (बाद में जोड़े गए)
- मुद्रा प्रणाली का अभाव था।
- वस्तु विनिमय होता था।
- व्यापार में **निस्क/निस्का** नामक सोने के जवाहरात का प्रयोग करते थे। (निस्क - गले का एक आभूषण)

आर्यों की सामाजिक स्थिति -

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार प्रणाली थी।
- वर्ण व्यवस्था - कर्म आधारित।
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरुष सुक्त में वर्ण व्यवस्था का वर्णन है।
- जाति व्यवस्था व सामाजिक असमानता नहीं थी।
- महिलाओं की स्थिति अच्छी थी।
- महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था।
- घोषा, सिकता, अपाला, लोपामुद्रा आदि विदुषी महिलाएँ थी।
- विशफला - एक योद्धा महिला थी।
- दहेज का कोई प्रावधान नहीं था।
- विवाह के समय दुल्हन को दिए जाने वाले उपहार 'वहतु' कहलाते थे।
- बाल विवाह का कोई उदाहरण नहीं है।
- विधवा पुनर्विवाह व अन्तरजातीय विवाह होता था।
- नियोग प्रथा का प्रचलन था।
- जो महिलाएँ शिक्षा ग्रहण हेतु कभी विवाह नहीं करती थी। उन्हें 'अमाजू' कहा जाता था।
- महिला {
 - **ब्रह्मवादिनी** - विदुषी महिलाएँ जो अक्सर विवाह नहीं करती थी
 - **सधैवधू** - विदुषी महिलाएँ जो विवाह करती थी इन्हें आदर्श पत्नि/आदर्श माता कहा जाता था।
- महिलाओं के साथ समान व्यवहार होता था।
- महिलाओं को दो अधिकार नहीं थे - 1. सम्पत्ति में अधिकार 2. प्रत्यक्ष राजनीति का अधिकार
- ऋग्वेद में दास/दासता का उल्लेख है।
- आर्य बुद्धिमान एवं योद्धा थे।

आर्यों की धार्मिक स्थिति -

- प्राकृतिक बहुदेववाद
- बहुदेववाद
- एकाधिदेववाद -
 - यह अवधारणा जर्मन दार्शनिक मैक्स मुलर द्वारा दी गई है।
 - मैक्स मूलर के अनुसार आर्य देश, काल एवं परिस्थिति के सापेक्ष एक देवता को मुख्य देवता मान लेते हैं तथा अन्य देवताओं का अस्तित्व गौण हो जाता है, एकाधिदेववाद कहलाता है।
- एकेश्वरवाद -
- निर्गुण भक्ति
- प्रमुख देवता -
 1. घोष - सबसे प्राचीनतम देवता।
 2. इन्द्र -
 - ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्वपूर्ण देवता है।
 - ऋग्वेद में सर्वाधिक उल्लेख इन्द्र का है।
 - इन्द्र को 'युद्ध एवं वर्षा का देवता' माना गया है।
 - इन्द्र स्वर्ग का राजा है।
 3. अग्नि -
 - ऋग्वैदिक काल के दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता है।
 - अग्नि को हमारे एवं देवताओं के बीच मध्यस्थ या दूत माना गया है।
 4. वरुण -
 - ऋग्वैदिक काल के तीसरे महत्वपूर्ण देवता।
 - वरुण को ऋग्वेद में 'ऋत का नियामक' माना गया है।
 - नोट - 'ऋत' - इस जगत की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋग्वेद में ऋत कहा गया है।
 - वरुण एक हजार सोने के स्तम्भों वाले महल में निवास करते हैं।
 5. पूषन - 'पशुओं के देवता'
- अनुष्ठान और यज्ञ बहुत सरल थे।
- परिवार का मुखिया यज्ञ कर सकता था।
- पुरुष देवताओं की पूजा सर्वाधिक होती थी।
- देवताओं की तीन श्रेणियाँ
 - आकाश के देवता - सूर्य, मित्र, वरुण, घोष।
 - वायुमण्डलीय देवता - इन्द्र, वायु, मरुत।
 - पृथ्वी के देवता - सोम, अग्नि, पृथ्वी।

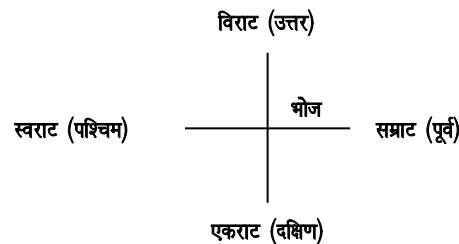
उत्तर वैदिक काल (1000–600 BC)

भौगोलिक स्थिति -

- ऋग्वैदिक काल के बाद आर्य गंगा-यमुना दोआब की तरफ फैल गए थे।
- गंडक नदी (सदानीरा) आर्यों की पूर्वी सीमा थी।
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार - राजा विदेध माधव एवं उनका पुरोहित गौतम राहुगणा सदानीरा नदी तक पहुँच गए थे।
- उत्तर वैदिक काल के साहित्य में तीन पर्वत मालाओं का उल्लेख -
 1. त्रिककुंद
 2. केंज
 3. मेनाक

राजनैतिक स्थिति -

- क्षेत्रगत साम्राज्य का गठन।
- राजा का पद शक्तिशाली एवं गरिमामय हो गया था।
- राजा कई उपाधियाँ धारण करने लगा था।



- राजा कई 'यज्ञ समारोह' आयोजित करते थे -
 1. **राजसूय यज्ञ** -
 - राज्यभिषेक समारोह के समय।
 - राजा इस यज्ञ के दौरान खेत की जुताई/हल चलाता था।
 - राजा को उसके रत्न/मंत्रियों द्वारा भोज हेतु आमंत्रित किया जाता था।
 2. **अश्वमेध यज्ञ** - साम्राज्यवादी यज्ञ
 3. **वाजपेय यज्ञ** -
 - राजा द्वारा खेल गतिविधियों का आयोजन
 - राजा स्वयं 'रथ दौड़' में हिस्सा लेता एवं सदैव विजय होता था।
- उत्तर वैदिक काल में विदध का उल्लेख नहीं किया गया है।
- सभा एवं समिति भी शक्तिशाली नहीं थी।
- अथर्ववेद में 'सभा एवं समिति' को 'प्रजापति की दो पुत्रियाँ' बताया गया है।
- राजा को दिया जाने वाला नियमित कर - 'बलि'
- राजा के पास कोई स्थायी सेना नहीं थी।

सामाजिक स्थिति -

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार।

समाज 4 वर्णों में विभाजित -

ब्राह्मण	अदायी
क्षत्रिय	बलिहर
वैश्य	अन्नस्य बलिकृत
शुद्र	अन्नस्य प्रेश्य

- जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था शुरू हुई।
- “कुल” व “गौत्र” शब्द का प्रयोग करते थे।
- जाति व्यवस्था नहीं थी।
- सामाजिक असमानता नहीं थी।
- ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक सर्वोच्चता प्रदान की गयी।
- क्षत्रियों का अधिशेष उत्पादन पर प्रभाव था।
- महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई।
- अथर्ववेद में बेटी को ‘दुःख का कारण’ बताया गया है।
- मैत्रायणी संहिता - महिला को ‘जूए एवं शराब के समान बुराई’ बताया गया है।
- वृहदारण्यक उपनिषद् - ‘याज्ञवल्क्य और गार्गी का संवाद’
- महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था। (जैसे - गार्गी और मैत्रेयी)
- विधवा विवाह, नियोग प्रथा, घरेलू दासों का प्रचलन था।
- बाल विवाह का कोई उदाहरण नहीं मिलता जबकि बहुविवाह होते थे।

आर्थिक स्थिति -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था।
- अथर्ववेद के अनुसार- ‘राजा पृथुवैन्यु ने कृषि आरम्भ’ की थी।
- अथर्ववेद में - ‘कृषि की विधियों’ का उल्लेख है।
- अथर्ववेद में टिड्डियों का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण के काठक संहिता में - ‘24 बैलों द्वारा खींचे गए हल’ का उल्लेख मिलता है।
- आर्य पशुपालन करते थे। (प्रिय पशु - गाय व घोड़ा)
- अधिशेष उत्पादन होता था।
- अधिशेष उत्पादन के कारण शहरी संस्कृति का विकास हुआ।
- कपड़ा, चमड़ा, धातु उद्योग विकसित हुए।
- मुद्रा प्रणाली शुरू नहीं हुई थी।
- मुद्रा के रूप में गाय व निस्क का प्रयोग करते थे।
- वस्तु विनिमय होता था।

धार्मिक स्थिति -

- बहुदेववाद, एकाधिदेववाद, एकेश्वरवाद, निर्गुण भक्ति लोकप्रिय थे।
- ब्रह्मा, विष्णु, महेश(शिव) मुख्य देवता थे।
- इन्द्र, अग्नि, वरुण अब मुख्य देवता नहीं रहे।
- यज्ञ अनुष्ठान जटिल हो गए थे।
- **मुंडकोपनिषद्** में - यज्ञ/अनुष्ठान/कर्मकाण्ड को 'टूटी हुई नौका के समान' बताया गया है।
- **पूषन** - शूद्रों के देवता
- ज्ञानमार्ग की अवधारणा लोकप्रिय हुई।
- शूद्रों को यज्ञ एवं उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य को '**द्विज**' कहा जाता था।
- मूर्ति पूजा एवं मंदिरों के साक्ष्यों का अभाव।
- काले जादू व अंधविश्वासों को मानते थे।

महाजनपद काल (600–322 BC)

- ☑ 16 महाजनपद
- ☑ मगध का उत्थान
- ☑ धार्मिक क्रांति -
 - ✓ बौद्ध धर्म
 - ✓ जैन धर्म
- ☑ फारसी आक्रमण
- ☑ ग्रीक आक्रमण

16 महाजनपद -

- यह दूसरी नगरीय क्रांति थी।
- 16 महाजनपदों का वर्णन -
 - बौद्ध साहित्य - अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय
 - जैन साहित्य - भगवती सूत्र

क्र.सं.	महाजनपद	राजधानी
1.	कम्बोज	हाटक और राजपुर
2.	गांधार	तक्षशिला
3.	कुरु	इंद्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
4.	पांचाल	अहिच्छत्र/काम्पिल्य
5.	अश्मक	पाटन/पोटली
6.	मल्लसंघ	कुशीनगर/पावा
7.	वज्जिसंघ	विदेह/वैशाली
8.	अंग	चम्पा
9.	मगध	गिरिव्रज/राजगृह और पाटलिपुत्र
10.	काशी	वाराणसी (वरुणा + अस्सी नदी)
11.	वत्स	कौशाम्बी
12.	चेदी	शुक्तिमती
13.	शूरसेन	मथुरा
14.	मत्स्य	बैराठ/विराटनगर
15.	अवन्ति	(i) उज्जैनी (ii) महिस्मती
16.	कोसल	श्रावस्ती/साकेत

मगध का उत्थान -

- कारण -
 - उपजाऊ भूमि।
 - नदियों का बहाव क्षेत्र।
 - नदियों का प्रयोग सिंचाई एवं नौकायन में किया जाता था।
 - खनिज (लोहा)
 - घने जंगलों में हाथी पाए जाते थे।
 - हाथियों का उपयोग - परिवहन एवं युद्ध में किया जाता था।
 - महत्वाकांक्षी शासकों की शृंखला।
 - मगध का संस्थापक 'बृहदर्थ' था।

हर्यक वंश (545—412 BC)

बिम्बिसार -

- श्रेणिक/क्षेत्रोजस नाम से प्रसिद्ध।
- पहला साम्राज्यवादी शासक।
- इसने वज्जिसंघ की राजकुमारी चेलन्ना से विवाह किया। जो लिच्छवी राजकुमारी/चेटक की बहिन थी।
- इसने कोसल की राजकुमारी कौशला देवी/महाकौशला देवी से विवाह किया जो कि प्रसेन्नजीत की बहिन थी एवं काशी इसे दहेज में मिला था।
- इसने मद्रदेश की राजकुमारी क्षेमा/खेमा देवी से विवाह किया।
- इसने अंग प्रदेश को जीत लिया और अपने बेटे अजातशत्रु को अंग का गवर्नर नियुक्त किया।
- इसने अपने चिकित्सक 'जीवक' को 'प्रद्योत' के दरबार में उज्जैन भेजा था जब प्रद्योत बीमार था।
- जीवक की शिक्षा - 'तक्षशिला'
- अजातशत्रु ने बिम्बिसार की हत्या कर दी थी।

अजातशत्रु -

- यह 'कुणिक' के नाम से प्रसिद्ध था।
- इसने काशी पर अधिकार कर लिया था।
- इसने प्रसेन्नजीत की बेटी वजीरा से विवाह किया।
- इसने अपने मंत्री 'वस्सकार' को 'वज्जिसंघ' में फूट डालने के लिए भेजा।
- अजातशत्रु ने वज्जिसंघ पर हमला किया एवं 'रथमूसल एवं महाशिलाकंटक' जैसे हथियारों का प्रयोग किया था।
- इसने 'प्रथम बौद्ध संगीति' (483 ई.पू.) का आयोजन करवाया।
- अजातशत्रु के पुत्र उदायिन ने इसकी हत्या कर दी इसलिए इसे पितृहन्ता वंश कहते हैं।

उदयन/उदयिन -

- यह जैन धर्म का अनुयायी था।
- इसने गंगा एवं सोन नदी के किनारे पर पाटलिपुत्र शहर की स्थापना की थी एवं पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।

नागदशक/नागदर्शक -

- इस वंश का अन्तिम शासक।
- शिशुनाग ने इसकी हत्या करके शिशुनाग वंश की स्थापना की।

शिशुनाग वंश (412–344 BC)

शिशुनाग -

- इसने अवन्ति को जीत लिया था।
- इसने वैशली को अपनी राजधानी बनाया।

कालाशोक/काकवर्ण -

- द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।
- राजधानी को पुनः पाटलिपुत्र स्थानान्तरित किया।

नन्द वंश (344–322 BC)

महापदमनन्द -

- संस्थापक
- उपाधियाँ -
 1. सर्वक्षत्रातक
 2. दूसरा भार्गव
- यह जैन धर्म का अनुयायी था।
- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार -
इसने कलिंग पर आक्रमण किया और कलिंग से 'जिनसेन की मूर्ति' लेकर आया।
- इसने कलिंग में 'नहर का निर्माण' करवाया था।
- अष्टाध्यायी के लेखक पाणिनी इसके समकालीन थे।

धनानन्द -

- इसने कई कर लागू किए।
- चाणक्य/कौटिल्य/विष्णुगुप्त का अपमान किया था।
- चंद्रगुप्त मौर्य की सहायता से चाणक्य ने धनानन्द की हत्या करवा दी थी।

धार्मिक क्रांति

बौद्ध धर्म

- संस्थापक - गौतम बुद्ध
- जन्म - 563 BC (लुम्बिनी, नेपाल) - (आधुनिक नाम - रूमिनदेई)
- बचपन का नाम - सिद्धार्थ
- पिता - शुद्धोधन (शाक्य कुल के राजा)
- माता - महामाया - सिद्धार्थ के जन्म के कुछ दिन बाद महामाया की मृत्यु हो गई थी।
- सौतेली माता - प्रजापति गौतमी (बुद्ध का पालन-पोषण किया था)
- कुल - शाक्य (इसलिए बुद्ध को शाक्यमुनि कहा जाता है)
- गौत्र - गौतम (गौतम बुद्ध)
- पत्नि - यशोधरा
- पुत्र - राहुल
- सिद्धार्थ कपिलवस्तु में बड़े हुए थे।
- कौडिन्य नामक ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की थी कि सिद्धार्थ महान सम्राट/साधु बनेगा।
- 4 घटनाओं ने बुद्ध के जीवन को प्रभावित किया-
 1. बीमार व्यक्ति
 2. वृद्ध व्यक्ति
 3. मृत व्यक्ति
 4. सन्त/फकीर/साधु
- 29 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने गृह त्याग किया।
- गुरु - आलार-कलाम - सांख्य दर्शन के आचार्य थे। गौतम बुद्ध ने इनसे सांख्य व योग की शिक्षा ग्रहण की।
- गुरु - रामपुत्र (द्वितीय)
- प्रिय शिष्य - आनंद/नंद
- प्रमुख शिष्य - उपालि, सारिपुत्र
- सिद्धार्थ उरुवेला/बोधगया चले गए।
- सिद्धार्थ ने कौडिन्य एवं अन्य चार साथियों के साथ कठिन तपस्या की।
- सुजाता नामक लड़की ने सिद्धार्थ को खीर खिलायी थी।
- सिद्धार्थ ने 'मध्यम मार्ग का सिद्धान्त' दिया। (बौद्ध धर्म का सबसे व्यावहारिक दर्शन कहा जाता है।)
- इस घटना के 49 दिन बाद भगवान बुद्ध को -
 - ✓ 35 वर्ष की अवस्था में
 - ✓ बोधगया में
 - ✓ निरंजना नदी के तट पर
 - ✓ पीपल वृक्ष के नीचे
 - ✓ वैशाख पूर्णिमा के दिन
 - ✓ ज्ञान/बोधि की प्राप्ति हुई थी।

- अब सिद्धार्थ शाक्य मुनि, गौतम बुद्ध व तथागत के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- बुद्ध ने सारनाथ में संघ की स्थापना की एवं अपना प्रथम उपदेश कौडिन्य व उसके साथियों को दिया। (मृगदाव उद्यान)
- बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए एवं सर्वाधिक वर्षाकाल श्रावस्ती में व्यतीत किए।
- अवन्ति के शासक प्रद्योत ने बुद्ध को आमंत्रित किया था लेकिन बुद्ध ने अवन्ति की यात्रा नहीं की।
- बुद्ध ने अन्य कुछ साधुओं को अवन्ति भेजा था।
- शिष्य आनन्द के कहने पर बुद्ध ने वैशाली में 'महिलाओं को संघ में प्रवेश' दिया था।
- संघ में प्रवेश पाने वाली प्रथम महिला प्रजापति गौतमी थी।
- अंगुलिमाल बुद्ध का शिष्य बन गया था।
- वैशाली की प्रसिद्ध नगरवधू आम्रपाली बुद्ध की शिष्या बन गई थी।
- 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर (मल्लसंघ) में भगवान बुद्ध की मृत्यु हो गयी थी।

क्र.सं.	भगवान बुद्ध के प्रतीक एवं घटनाएँ	
1.	सफेद हाथी	भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक/महामाया का सपना
2.	कमल/सांड	जन्म
3.	घोड़ा	गृहत्याग का प्रतीक
4.	बोधिवृक्ष/पीपल	ज्ञान का प्रतीक
5.	पद्मचिन्ह	निर्वाण का प्रतीक
6.	स्तूप	मृत्यु का प्रतीक

✧ महाभिनिष्क्रमण - 29 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने ज्ञान प्राप्ति के लिए गृहत्याग किया।

✧ सम्बोधि -

- गृहत्याग के 6 वर्ष पश्चात 35 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध को बोधगया में निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान प्राप्ति हुई।
- सम्बोधि के पश्चात सिद्धार्थ गौतम बुद्ध, शाक्य मुनि तथा तथागत के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- बुद्ध का जन्म, ज्ञान, मृत्यु वैशाख पूर्णिमा के दिन हुए। इसलिए वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है।

✧ धर्मचक्रप्रवर्तन -

- ज्ञान प्राप्ति/सम्बोधि के पश्चात गौतम बुद्ध ने सारनाथ/मृगदाव/मृगुद्यान में कौडिन्य एवं उसके अन्य चार साथियों को प्रथम उपदेश दिया एवं संघ की स्थापना की।
- 'उद्यान में दाना चुगते हुए हंस' - प्रथम उपदेश के प्रतीक

✧ महापरिनिर्वाण - 80 वर्ष की अवस्था में सालउद्यान में हिरण्यवती नदी के किनारे कुशीनगर में गौतम बुद्ध की मृत्यु हो गई।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ -

1. चार आर्य सत्य -

1. दुःख है।
2. दुख का कारण है। (प्रतीत्य समुत्पद/अज्ञान/अविद्या)
3. दुख के कारण का निवारण है। (निर्वाण)
4. दुख निवारण का मार्ग है। (अष्टांगिक मार्ग)

2. प्रतीत्य समुत्पाद -

- यह बौद्ध धर्म का (कार्यकारण) कारणता सिद्धान्त है।
- भगवान बुद्ध के अनुसार दुःखों का कारण अविद्या या तृष्णा को बताया है।
- भगवान बुद्ध ने इसे “द्वादश निदान चक्र” द्वारा समझाया है।
- प्रतीत्य समुत्पाद का शाब्दिक अर्थ - “ऐसा होने पर वैसा होना है।”
- भगवान बुद्ध ने दूसरे आर्य सत्य के तहत इसका प्रतिपादन किया है।

3. निर्वाण -

- शाब्दिक अर्थ - ‘बुझ जाना’
- बौद्ध धर्म में यह जीवन का अंतिम लक्ष्य है।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की स्थिति का वर्णन नहीं किया है।
- भगवान बुद्ध ने तीसरे आर्य सत्य के तहत निर्वाण का प्रतिपादन किया है।
- निर्वाण का अर्थ यहाँ विज्ञानों के प्रवाह का रुक जाना है।

4. अष्टांगिक मार्ग -

- भगवान बुद्ध ने चौथे आर्य सत्य के तहत इसका प्रतिपादन किया है।
- यदि अष्टांगिक मार्ग का पालन किया जाए तो व्यक्ति का अज्ञान समाप्त हो जाता है।

1. सम्यक दृष्टि	5. सम्यक आजीव
2. सम्यक संकल्प	6. सम्यक व्यायाम
3. सम्यक वाक्	7. सम्यक स्मृति
4. सम्यक कर्मान्त	8. सम्यक समाधि

4. क्षणिकवाद/अनित्यवाद -

- भगवान बुद्ध के अनुसार इस जगत की सभी वस्तुओं का अस्तित्व क्षणभर/अस्थायी है।
- बुद्ध के अनुसार इस जगत में कुछ भी स्थायी नहीं है।
- प्रत्येक वस्तु और उसके गुण अस्थायी, अनित्य, क्षणिक है।
- बुद्ध के अनुसार कोई भी एक व्यक्ति एक नदी में दो बार स्नान नहीं कर सकता है।

5. अनात्मवाद -

- भगवान बुद्ध नित्य/शाश्वत आत्मा में विश्वास नहीं करते हैं।
- बुद्ध के अनुसार विज्ञानों, विचारों का प्रवाह ही आत्मा है।
- लेकिन यह प्रवाह बहुत तेज एवं सुसंगत है इसलिए इसे हमारे लिए नित्य माना जाता है।
- प्रत्येक विज्ञान/विचार मरने से पहले एक नए विज्ञान (विचार) को जन्म देता है।

➤ नोट -

- बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी धर्म है अर्थात् ईश्वर को नहीं मानते हैं।
- भगवान बुद्ध कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
- भगवान बुद्ध ने कुछ प्रश्नों का जवाब नहीं दिया, बुद्ध इन प्रश्नों पर मुस्करा दिया करते थे।
जैसे - निर्वाण, ईश्वर, परमतत्व आदि।
- बुद्ध ज्ञेयवादी (ज्ञातावादी) थे अर्थात् वे इन प्रश्नों का उत्तर जानते थे।
-

☑ बौद्ध संगीतियाँ -

क्र.सं.	समय	शासक	स्थान	अध्यक्ष
1.	483 BC	अजातशत्रु	सप्तपर्णि गुफा (राजगृह)	महाकस्सप/महाकश्यप
2.	383 BC	कालाशोक	वैशाली	सर्वकामी/साबकमीर
3.	251 BC	अशोक	पाटलिपुत्र	मोग्गलीपुत तिस्स
4.	1 st शताब्दी	कनिष्क	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (उपाध्यक्ष-अश्वघोष)

प्रथम बौद्ध संगीति -

1. सुतपिटक की रचना -

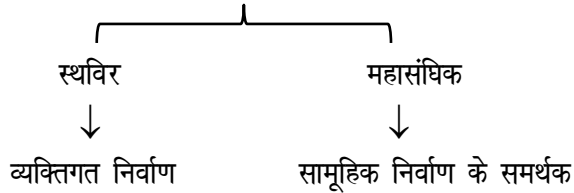
- रचनाकार - आनंद
- इसमें भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ एवं जीवन की घटनाएँ मिलती हैं।
- सुतपिटक के खुदकनिकाय में जातक कथाओं का उल्लेख मिलता है।
- जातक कथाएँ - भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों की कहानियाँ। (लगभग 500)

2. विनय पिटक की रचना -

- रचनाकार - 'उपालि'
- इसमें संघ के साधुओं के नियम व आचार-विचार मिलते हैं।

दूसरी बौद्ध संगीति -

- संघ दो भागों में विभाजित हो गया - (वैचारिक विभाजन)



तीसरी बौद्ध संगीति -

- अभिधम्मपिटक की रचना की गई।
- इसमें बौद्ध दर्शन का वर्णन मिलता है।
- पिटक का शाब्दिक अर्थ 'पिटारा' होता है।
- संयुक्त रूप से इन्हें त्रिपिटक कहा जाता है -
 1. सुतपिटक
 2. विनयपिटक
 3. अभिधम्म पिटक

चतुर्थ बौद्ध संगीति -

- संघ दो भागों में विभाजित हुआ - हीनयान तथा महायान

हीनयान	महायान
1. रूढ़िवादी	1. सुधारवादी
2. भगवान बुद्ध को महापुरुष मानते हैं।	2. भगवान बुद्ध को ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं।
3. देवी-देवताओं में विश्वास नहीं करते।	3. देवी-देवताओं को मानते हैं। जैसे - प्रज्ञा की देवी - तारा (प्रज्ञा - ज्ञान)
4. मूर्तिपूजा नहीं करते हैं।	4. मूर्तिपूजा करते हैं।
5. व्यक्तिवादी	5. मानवतावादी
6. परमपद - अर्हत (निर्वाण प्राप्त व्यक्ति)	6. परमपद - बोधिसत्व
7. भाषा - पालि	7. भाषा - संस्कृत
8. विस्तार - श्रीलंका, म्यांमार/बर्मा, थाइलैंड, कम्बोडिया, लाओस वियतनाम आदि।	8. विस्तार - चीन, जापान, नेपाल, कोरिया आदि।
9. हीनयान - सौतान्त्रिक ↓ संस्थापक - कुमारलब्ध वैभाषिक ↓ वसुमित्र	9. महायान - शून्यवाद/माध्यमिका ↓ संस्थापक - नागार्जुन विज्ञानवाद/योगाचार ↓ मैत्रेय

➤ नागार्जुन -

- नागार्जुन ने परम तत्व को शून्य बताया अर्थात् इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है।
- कालान्तर में शंकराचार्य ने ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, निर्विशेष, निर्वचनीय बताया है। इसलिए शंकराचार्य को **प्रच्छन्न बौद्ध** कहा जाता है।
- नागार्जुन ने 'सापेक्षता सिद्धान्त' दिया, इसलिए नागार्जुन को "भारत का आइन्सटीन" कहा जाता है।
- विज्ञानवाद/योगाचार - मैत्रेय के अनुसार इस जगत में केवल विज्ञानों या विचारों का अस्तित्व है।
- मैत्रेय - 'भविष्य के बुद्ध'
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न -
 - बुद्ध
 - संघ
 - धम्म

☑ बौद्ध धर्म का योगदान -

- भगवान बुद्ध ने एक सरल धर्म की व्याख्या की जो कर्मकाण्डों से रहित था।
- बुद्ध ने धार्मिक पाखण्ड, कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, वर्ण व्यवस्था, सामाजिक असमानता व पशु बलि का विरोध किया।
- बुद्ध ने सामाजिक समानता, नैतिक मूल्यों पर बल दिया।
- बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं दी।
- पंचशील अवधारणा का प्रतिपादन किया - हिंसा, चोरी, नशा, झूठ, व्याभिचार नहीं करना चाहिए।
- वास्तुकला में योगदान - बौद्धों द्वारा निर्मित स्तूप, विहार व चैत्य।
- स्तूप - पिपरहवा, धमेख
- विहार - सारनाथ, अजंता
- चैत्य - कार्ले चैत्य, अजन्ता चैत्य
- चित्रकला में योगदान - अजंता, ऐलोरा व बाघ की गुफाओं से बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र मिलते हैं।
- मूर्तिकला में योगदान - बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियाँ गांधार, मथुरा व अमरावती से मिलती हैं।
- भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया जो अत्यंत ही व्यावहारिक दर्शन हैं
- बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ी मात्रा में साहित्य की रचना की। जो कि ऐतिहासिक जानकारी का स्रोत है।
- बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए कई बौद्ध भिक्षु भारत आए। उनके यात्रा वृत्तांत के माध्यम से भारत के विषय में ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।
- विदेशों में भी बौद्ध धर्म का प्रसार-प्रचार हुआ। इस कारण भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व पटल पर फैल गई।
- भगवान बुद्ध ने कुछ आर्थिक सुधार किए जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को बल मिला। जैसे धन पर ब्याज का समर्थन किया।
- शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित विश्वविद्यालय - तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशीला

☑ बौद्ध धर्म के पतन के कारण -

- बौद्ध संघ अलग-अलग सम्प्रदायों में विभाजित हो गया था। जैसे - हीनयान व महायान
- बौद्ध संघ धन के केंद्र बन गए।
- बौद्ध भिक्षु भ्रष्ट हो गए थे।
- जिससे भिक्षुओं में नैतिक मूल्यों का पतन हो गया।
- कालांतर में बौद्ध धर्म में वज्रयान व कालचक्रयान समुदायों की उत्पत्ति हुई जो अतिवादी थे
- यह समुदाय मांस, मदिरा एवं मैथुन में विश्वास करते थे। एवं जादू, टोने, टोटके में भी विश्वास करते थे।
- राजकीय संरक्षण का अभाव।
- कुमारिलभट्ट तथा शंकराचार्य ने बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।
- कालांतर में सामंतवाद का उदय प्रारम्भ हुआ। जिससे बौद्ध धर्म को संरक्षण नहीं मिला।
- ब्राह्मणों ने भगवान बुद्ध को विष्णु अवतार घोषित किया।
- कई महत्वपूर्ण भिक्षु नेपाल, श्रीलंका, चीन, तिब्बत आदि स्थानों पर चले गए।
- विदेशी आक्रमण - तुर्क आक्रमण के दौरान सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा, विक्रमशीला विश्वविद्यालयों को जलाकर नष्ट कर दिया था।

जैन धर्म -

- संस्थापक - ऋषभदेव/आदिनाथ
- प्रतीक - वृषभ/बैल
- 21वें तीर्थंकर - नेमिनाथ जी
- 22वें तीर्थंकर - अरिष्टनेमि (यह भगवान कृष्ण के समकालीन थे।)
- केवल 23वें एवं 24वें तीर्थंकर की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।
- 23वें तीर्थंकर - पार्श्वनाथ जी
 - पिता - अश्वसेन (काशी के राजा)
 - माता - वामा
 - प्रतीक - सर्पफण/सर्प
 - पार्श्वनाथ जी को सम्मेद पर्वत (झारखण्ड) पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
 - सम्मेद पर्वत को शिखर जी कहा जाता है।
 - जैन मान्यताओं के अनुसार 20 तीर्थंकरों को सम्मेद पर्वत पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
 - इन्होंने चार व्रत (चातुर्याम) दिये-
 1. सत्य
 2. अहिंसा
 3. अस्तेय - चोरी नहीं करना
 4. अपरिग्रह - संचय नहीं करना
- 24वें तीर्थंकर - भगवान महावीर स्वामी -
 - बचपन का नाम - वर्धमान
 - जन्म - 540 BC (599 BC)
 - जन्म स्थान - कुण्डग्राम (बिहार)
 - पिता - सिद्धार्थ
 - माता - त्रिशला (यह लिच्छवी शासक चेटक की बहिन थी।)
 - पत्नि - यशोदा
 - पुत्री - प्रियदर्शना/अणोज्जा
 - वंश - ज्ञातुक
 - भाई - नन्दीवर्मन
 - महावीर स्वामी ने नन्दीवर्मन की अनुमति से गृह त्याग किया था
 - भद्रबाहु के 'कल्पसूत्र' के अनुसार भगवान महावीर ने गृहत्याग के 13 महीने पश्चात वस्त्र त्याग दिये थे।
 - भद्रबाहु के 'कल्पसूत्र' में जैन तीर्थंकरों की जीवनियाँ मिलती हैं।
 - 42 वर्ष की अवस्था में जुम्बिकाग्राम में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे वर्धमान को ज्ञान की प्राप्ति हुई।
 - ज्ञान प्राप्ति के पश्चात वर्धमान **महावीर स्वामी/केवलिन/निगंठनाथपुत्र/निग्रन्थ** के नाम से प्रसिद्ध हुए।
 - बौद्ध साहित्य में महावीर स्वामी को निगंठनाथपुत्र कहा गया है।
 - महावीर स्वामी ने सर्वप्रथम 11 ब्राह्मणों को पावा में उपदेश दिया जिन्हें गणधर कहा जाता है।
 - महावीर स्वामी की मृत्यु के समय केवल एक गणधर, सुधर्मन जीवित था।

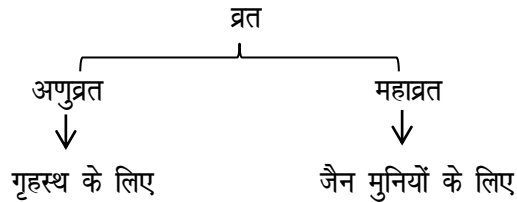
- महावीर स्वामी की मृत्यु की पश्चात सुधर्मन ने जैन धर्म का नेतृत्व किया था।
- महावीर स्वामी का प्रथम शिष्य - जामालि (महावीर स्वामी का दामाद था)
- महावीर स्वामी के विरुद्ध पहला विद्रोह भी जामालि ने किया था।
- महावीर स्वामी के विरुद्ध दूसरा विद्रोह तीसगुप्त ने किया था।
- 72 वर्ष की अवस्था में पावापुरी के शासक सस्तीपाल के महल में महावीर स्वामी को मोक्ष की प्राप्ति हुई।
- महावीर स्वामी को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

जैन धर्म की शिक्षाएँ -

☼ त्रिरत्न/रत्नत्रयी -

- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् दर्शन
- सम्यक् आचरण (चरित्र)

☼ भगवान महावीर ने पांचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य दिया एवं व्रतों को दो भागों में बांटा -



☼ ज्ञान के प्रकार -

मति	इंद्रियजनित ज्ञान
श्रुति	सुनकर होने वाला ज्ञान
अवधि	दूर देश का ज्ञान, भूत व भविष्य का ज्ञान
मनः पर्यय ज्ञान	किसी के मन की बात जान लेना।
केवल्य	अंतिम एवं सम्पूर्ण ज्ञान।

☼ जैन धर्म से संबंधित शब्दावली -

- जीव - चेतन तत्व/आत्मा
- पुद्गल - जड़ तत्व
- बंधन - जब कर्म पुद्गल जीव से चिपक जाते हैं तो जीव बंधन में पड़ जाता है।
- आस्रव - कर्म पुद्गलों का जीव की तरफ होने वाला प्रवाह
- संवर - जीव की तरफ होने वाले कर्म पुद्गलों के प्रवाह का रुक जाना
- निर्जरा - जीव से चिपके हुए कर्म पुद्गलों का झड़ना (पृथक् होना)
- मोक्ष - जब अंतिम कर्म पुद्गल जीव से अलग हो जाता है तो जीव सिद्धशीला (मुक्त आत्माओं का घर) पर जाकर विश्राम करता है एवं वह अनन्त चतुष्टय की अवस्था को प्राप्त करता है।
 - अनन्त चतुष्टय - अनन्त ज्ञान
 - अनन्त दर्शन
 - अनन्त वीर्य (बल)
 - अनन्त आनंद

❖ अनेकान्तवाद -

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धांत है।
- जैन धर्म के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं और प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण हैं।
- इन गुणों में से कुछ गुण नित्य होते हैं और कुछ गुण परिवर्तनशील होते हैं।

❖ स्यादवाद -

- यह जैन दर्शन का ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त है।
- यह जैन दर्शन का स्थिति आधारित अनुमान का सिद्धांत है।
- इसके अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं और प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण होते हैं।
- हम न तो इस जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकते हैं एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को जान सकते हैं।
- यह ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है।
- हमारा ज्ञान सदैव देश, काल, परिस्थिति के सापेक्ष होता है।
- जैन धर्म में स्यादवाद को सात जन्मांधों और एक हाथी के उदाहरण द्वारा समझाया गया है।

❖ सल्लेखना/संथारा/निष्प्रतिक्रमण -

- उपवास द्वारा कर्म फलों को समाप्त करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना।

➤ नोट -

- जैन धर्म एक अनीश्वरवादी धर्म है अर्थात् ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं।
- जैन कर्मफल सिद्धांत एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
- जैनों के अनुसार जगत की सभी वस्तुओं में आत्मा होती है एवं एक वस्तु में एक से अधिक आत्माएँ भी हो सकती हैं।

☑ जैन संगीतियाँ -

वर्ष	संरक्षण	स्थान	अध्यक्ष	उपाध्यक्ष
298 BC	चन्द्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	भद्रबाहु
512 AD		वल्लभी (गुजरात)	देवार्थि क्षमाश्रमण	

प्रथम जैन संगीति -

- इसमें जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया -

दिगम्बर	श्वेताम्बर
• संस्थापक - भद्रबाहु	• संस्थापक - स्थूलभद्र
• रूढ़िवादी	• सुधारवादी
• मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक है।	• मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागने की आवश्यकता नहीं होती।
• महिलाओं को इस जीवन में मोक्ष सम्भव नहीं है।	• महिलाओं का इस जीवन में मोक्ष सम्भव है।
• 19वें तीर्थंकर मल्लीनाथ जी को पुरुष मानते हैं।	• 19वें तीर्थंकर मल्लीनाथ जी को महिला मानते हैं।
• भगवान महावीर स्वामी को अविवाहित मानते हैं।	• भगवान महावीर स्वामी को विवाहित मानते हैं।
• आगम् साहित्य को प्रामाणिक नहीं मानते हैं।	• आगम् साहित्य को प्रामाणिक मानते हैं।
• केवल्य के पश्चात मनुष्य को भोजन की आवश्यकता नहीं होती है।	• केवल्य के पश्चात मनुष्य को भोजन की आवश्यकता होती है।

- सर्वाधिक विस्तार - दक्षिण भारत
- दक्षिण मुनि
- दिगंबर की शाखाएँ - तेरापंथी, बीसपंथी, तेरानपंथी

- सर्वाधिक विस्तार - उत्तर भारत
- उत्तरी मुनि
- श्वेतांबर की शाखाएँ - तेरापंथी, पुजेरा/मंदिरमार्गी स्थानकवासी/ढँढिया

द्वितीय जैन संगीति -

- इसमें जैन साहित्य का संकलन किया गया।
- जैन साहित्य को आगम साहित्य कहा जाता है।
- जैन साहित्य प्राकृत भाषा में लिखा गया है।

☑ बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में समानताएँ -

- दोनों अनीश्वरवादी दर्शन है।
- दोनों नास्तिक दर्शन है वेदों को प्रामाणिक नहीं मानते।
- दोनों कर्मफल सिद्धांत एवं पुनर्जन्म को मानते हैं।
- दोनों धर्मों के संस्थापक क्षत्रिय राजकुमार थे।
- दोनों ने पाखंड, कर्मकाण्ड और अनुष्ठान, अंधविश्वास का विरोध किया।
- दोनों धर्म वर्ण व्यवस्था में विश्वास नहीं करते थे।
- दोनों ने महिलाओं को संघ में प्रवेश दिया।
- दोनों ने आर्थिक सुधार किए। (धन पर ब्याज का समर्थन)
- दोनों धर्मों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया। (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह)
- दोनों धर्मों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

☑ बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में असमानताएँ -

क्र. सं.	बौद्ध धर्म	जैन धर्म
1.	मध्यम मार्ग का सिद्धांत दिया।	अतिवाद या कठोरवाद में विश्वास करते थे।
2.	अनित्य आत्मा में विश्वास करते थे।	नित्य आत्मा में विश्वास करते हैं अर्थात् आत्मा विज्ञानों का प्रवाह है।
3.	जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं करते हैं।	जाति व्यवस्था में विश्वास करते हैं।
4.	बुद्ध ने निर्वाण की व्याख्या नहीं की।	मोक्ष की व्याख्या की गई।
5.	भाषा - पालि	भाषा - प्राकृत
6.	क्षणिकवाद में विश्वास करते हैं।	नित्य व अनित्यवाद में विश्वास करते हैं।
7.	विस्तार - सम्पूर्ण विश्व में	विस्तार - केवल भारत में।

भागवत धर्म -

- संस्थापक - भगवान श्री कृष्ण
- अन्य नाम - वैष्णव धर्म
- श्री कृष्ण का पहला उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद् में मिलता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार श्री कृष्ण ही नारायण है।
- नारायण के अनुयायियों को पांचरात्रिक एवं धर्म को पांचरात्र कहा जाता है।
- **पांचरात्र प्रमुख -**
 1. श्री कृष्ण
 2. लक्ष्मी जी
 3. संकर्षण (बलराम)
 4. प्रद्युम्न
 5. अनिरुद्ध
- श्री कृष्ण को 'चतुर्व्यूह' के साथ में पूजा जाता है।
 1. संकर्षण - भाई
 2. प्रद्युम्न - पुत्र
 3. साम्ब - पुत्र
 4. अनिरुद्ध - पौत्र
- भागवत धर्म को दक्षिण भारत में 'आलवार' कहा जाता है।
- भगवद् गीता में अवतारवाद का उल्लेख है।
- कृष्ण को 'वृष्णि वंश' का, देवकी का पुत्र, अंगीरस का शिष्य बताया गया है।
- मत्स्य पुराण में भगवान विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख मिलता है।
 - 8वाँ अवतार - बलराम
 - 9वाँ अवतार - बुद्ध
 - 10वाँ अवतार- कल्कि (भविष्य का अवतार होगा।)
- विष्णु का पहला उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है।
- विष्णु का वराह अवतार सबसे प्रसिद्ध अवतार है।

➤ नोट - मोरा अभिलेख -

- ✓ मथुरा के निकट मोरा गाँव से प्रथम शताब्दी का एक अभिलेख मिलता है
- ✓ जिसमें 'तोस' नामक विदेशी महिला द्वारा श्रीकृष्ण, वसुदेव, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न एवं संकर्षण की पूजा किए जाने की जानकारी मिलती है।

शैव धर्म -

- शैव धर्म का विकास शुंग एवं सातवाहन वंश के समय हुआ।
- रेनुगुंटा (चैन्नई) से गुडिमल्लन शिव लिंग (वर्तमान - आंध्रप्रदेश) प्राप्त होता है।
- यह शिव की प्राचीनतम मूर्ति है।
- ऋग्वेद में रुद्र (शिव) का उल्लेख है।
- मत्स्य पुराण में शिव के 8 रूप मिलते हैं।
- शैव धर्म में कई सम्प्रदाय हैं -

1. पाशुपत पंथ -

- संस्थापक - लकुलिश
- ग्रंथ - पाशुपत सूत्र
- अनुयायियों को 'पंचार्थिक' कहा जाता है।
- यह प्राचीनतम शैव सम्प्रदाय है।
- लकुलिश के अनुयायी लकुलिश को भगवान शिव का अवतार मानते हैं।

2. कश्मीरी शैव -

- संस्थापक - वसुगुप्त
- यह दार्शनिक व ज्ञानमार्गी होते हैं।

3. नाथपंथ -

- संस्थापक - मत्स्येन्द्र नाथ/मछेंद्र नाथ
- शिष्य - गोरखनाथ
- गोरखनाथ जी ने नाथपंथ को लोकप्रिय किया।
- यह भगवान शिव को आदियोगी कहते हैं।
- मुख्य केंद्र - गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
- इसमें शैव, योग, बौद्ध मान्यताओं पर बल देते हैं।
- हिन्दू, बौद्ध एवं मुस्लिम भी इस सम्प्रदाय को मानते हैं।
- इस सम्प्रदाय को कनफटा वं कुण्डलधारी सम्प्रदाय भी कहा जाता है।

4. लिंगायत पंथ -

- संस्थापक - ऋषि अल्लभ एवं बसव राजा (वास्तविक संस्थापक)
- ये मूर्तिपूजा नहीं करते हैं। एवं केवल शिव में विश्वास करते हैं।
- यह शवों को दफनाते हैं।
- यह कर्नाटक में अधिक लोकप्रिय हैं।

5. कापालिक सम्प्रदाय -

- यह अतिवादी सम्प्रदाय है।
- यह भैरव को पूजते हैं।
- इनके साधुओं को अघोरी भी कहते हैं।

6. कालामुख पंथ - यह अतिवादी सम्प्रदाय है।

शाक्त धर्म -

- यह देवी को शक्ति के रूप में पूजते हैं।
- शक्ति का प्रमुख मंदिर कामाख्या (असम) में है।
- कश्मीर में देवी के सौम्य रूप “शारदा देवी” को पूजा जाता है।
- यह मंदिर वैष्णों देवी के नाम से प्रसिद्ध है।
- शाक्त धर्म के प्रमुख केंद्र -
 - ✓ कामाख्या
 - ✓ कश्मीर
 - ✓ कांची

आजीवक सम्प्रदाय -

- संस्थापक - मकखली पुत्र गोशाल
- यह भगवान महावीर के समकालीन थे। तथा दोनों ने 6 वर्ष एक साथ तपस्या की थी।
- यह भाग्यवादी और नियतिवादी सम्प्रदाय है।
- मौर्य शासक बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
- आजीवक कठोर जीवन व्यतीत करते एवं निर्वस्त्र रहते हैं।
- इस सम्प्रदाय में अशोक वृक्ष पवित्र होता है।
- आजीवकों को हत्थापलेखण, एक दण्डिन कहा जाता था।

अन्य विचारधाराएँ	संस्थापक
सन्देहवादी	संजय बेलपुत्र
उच्छेदवादी यह पुनर्जन्म को नहीं मानते हैं। यह भौतिकवादी दर्शन है।	अजीत केश कम्बलीन
अकर्मवादी	पूरण कश्यप
शाश्वतवाद	पकुधकच्छायन

फारस आक्रमण -

- हखामनी वंश के शासक डेरियस/दारा/दारयबाहु ने भारत पर आक्रमण किया। (520-515 BC के मध्य)
- डेरियस ने सिंध (भारत का उत्तर पश्चिमी क्षेत्र) के आसपास के इलाकों को विजित कर लिया एवं उसको अपना 20वां प्रांत घोषित किया।
- हेरोडोटस की पुस्तक हिस्टोरिका के अनुसार - सिंध प्रांत से उसे 360 टेलेण्ट सोना उसे राजस्व के रूप में प्राप्त होता था। जो उसके कुल राजस्व का $\frac{1}{3}$ था।
- हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहा जाता है।
- फारस आक्रमण की जानकारी डेरियस के तीन अभिलेखों से मिलती है -
 1. बेहिस्तून
 2. नक्श-ए-रुस्तम
 3. पार्सिपोलिस
- डेरियस के पुत्र जरखचीज ने भारतीय धनुर्धरों को अपनी सेना में नियुक्त किया।
- डेरियस तृतीय अंतिम फारसी शासक था।
- सिकन्दर/एलेक्जेंडर ने डेरियस तृतीय को पराजित किया था।
- **फारसी आक्रमणों के प्रभाव -**
 - फारसी लोगों ने सिंधु को हिन्दू कहा। अतः 6वीं शताब्दी ई. पू. फारसी लोगों द्वारा हिन्दू शब्द दिया गया था।
 - फारसियों ने उत्तर-पश्चिम भारत में 'अरामेइक लिपि/भाषा' का प्रयोग किया था।
 - कालांतर में अरामेइक भाषा के प्रभाव से 'खरोष्ठी भाषा' का विकास हुआ।
 - फारसियों ने महिलाओं को अंगरक्षक के रूप में नियुक्त किया जिससे भारतीय भी महिला अंगरक्षकों की नियुक्ति करने लगे।
 - सजा के रूप में गंजा किए जाने की प्रथा प्रारम्भ हुई।
 - उन्होंने 'क्षत्रप प्रणाली' (दोहरा शासन) शुरू की जिसे आगे शक व कुषाणों ने विकसित किया।

ग्रीक/यूनानी आक्रमण -

- आक्रमणकारी - एलेक्जेंडर/सिकन्दर
- यह मकदूनिया/मेसीडोनिया का शासक था।
- पिता - फिलिप
- गुरु - अरस्तु
- गांधार (तक्षशिला) के शासक आम्बी ने सिकंदर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
- **❖ झेलम/वितस्ता/हाइडेस्पीज का युद्ध - 326 ई.पू.**
 - सिकंदर व पोरस (पुरु) के मध्य लड़ा गया।
 - पोरस पराजित हुआ।
 - पोरस का राज्य झेलम एवं चिनाब नदी के मध्य स्थित था।
 - सिकंदर पोरस की बहादुरी से प्रभावित हुआ एवं उसे उसका राज्य पुनः लौटा दिया।

- सिकंदर 19 माह तक भारत रुका।
- सिकंदर व्यास नदी तक आया किंतु उसकी सेना ने व्यास नदी को पार करने से मना कर दिया।
- सिकंदर मंडनीस नामक दार्शनिक/साधु से मिला एवं उससे प्रभावित हुआ।
- वह कालानास नामक दार्शनिक को अपने साथ लेकर गया था।
- सिकंदर ने भारत में तीन शहर बसाए थे -
 1. निकेया
 2. बुकाफेला/बहुकाफेला
 3. अलेक्जेंड्रिया
- तीन इतिहासकार सिकंदर के साथ भारत आए थे -
 1. नियार्क
 2. आनेसिक्रेटस
 3. अरिस्टाबुलस
- भारत से लौटते समय 323 ई. पू. में बेबीलोनिया में सिकंदर की मृत्यु हो गई।
- **ग्रीक आक्रमण के प्रभाव -**
 - भारत में सोने के सिक्कों का प्रचलन ग्रीकों द्वारा शुरू किया गया।
 - ग्रीक शासकों ने लेखयुक्त सिक्के (राजा का नाम, राजचिह्न) का प्रचलन किया।
 - ग्रीक ज्योतिष से भारतीय ज्योतिष प्रभावित हुआ।
 - गार्गी संहिता के अनुसार - 'भारतीय ज्योतिष ग्रीकों/यूनानियों का ऋणी है।'
 - भारतीय नाट्यकला पर भी ग्रीक संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है।
 - रंगमंच के पर्दे को आज भी 'यवनिका' कहा जाता है।
 - भारत में सात दिनों के सप्ताह का प्रचलन ग्रीकों द्वारा शुरू किया गया।
 - नौ ग्रहों की जानकारी
 - कालीमिर्च को 'यवनप्रिया' कहा जाता है।
 - भारतीय मसाले ग्रीक व रोमन साम्राज्य में अत्यधिक प्रसिद्ध हुए।

मौर्य काल

मौर्य वंश –

- जैन व बौद्ध साहित्य के अनुसार – क्षत्रिय
- ब्राह्मण साहित्य के अनुसार – शूद्र
- विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस के अनुसार – वृषल (निम्न वर्गीय)
- रोमिला थापर के अनुसार – वैश्य
- सर्वाधिक मान्य मत – क्षत्रिय

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 - 298 BC) –

- चाणक्य ने इसे 1000 कार्षापण (चाँदी के सिक्के) में खरीदा।
- शिक्षा – तक्षशिला में प्राप्त की।
- चाणक्य भी तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य थे।
- यूनानी इतिहासकारों ने इसे सेण्ड्रोकोटस एवं एण्ड्रोकोटस के रूप में उल्लेखित किया है।
- कालांतर में विलियम जोन्स ने बताया कि चन्द्रगुप्त मौर्य ही सेण्ड्रोकोटस है।
- ग्रीक इतिहासकार जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना लुटेरी थी।
- 305 बी.सी. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने ग्रीक सेनापति (सिकन्दर का सेनापति) सेल्युकस निकेटर को पराजित किया। और सेल्युकस ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- निकेटर ने चन्द्रगुप्त मौर्य को निम्न प्रदेश दिए –

ग्रीक नाम	भारतीय नाम
1. ऐरिया	- हैरात क्षेत्र
2. अराकोसिया	- कंधार क्षेत्र
3. जेद्रोसिया	- बलूचिस्तान क्षेत्र
4. परोपनीसडाई	- काबुल क्षेत्र

- सेल्युकस निकेटर ने अपनी बेटी हेलेना/हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से करवाया।
- सेल्युकस निकेटर ने अपना दूत 'मेगस्थनीय' (पुस्तक – इण्डिका) को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- यूनानी इतिहासकार स्ट्रेबो एवं एप्पियानस विवाद एवं संधि की जानकारी देते हैं।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने निकेटर को 500 हाथी उपहार में दिये थे।
- 298 BC चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के साथ चन्द्रगिरी पहाड़ी, श्रवणबेलागोला (कर्नाटक) गया तथा वहां संथारा/संल्लेखना द्वारा अपने प्राण त्याग दिए।
- नोट – श्रवणबेलागोला की बाहुबलि की मूर्ति का निर्माण गंग वंश शासक चामुण्डराय ने करवाया।

बिन्दुसार (298 - 273 BC) –

- यूनानी इतिहासकारों ने इसे अमित्रोचेड्स (अमित्रघात) कहा है।
- जैन साहित्य में इसे सिंहसेन कहा गया है।

- तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ इसको महान शासक बताते हैं।
- इसने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया था।
- आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- इसके काल में तक्षशिला में दो विद्रोह हुए -
 - पहले का दमन अशोक ने किया
 - दूसरे का दमन सुशीम ने किया।
- इसके काल में नेपाल की खस जनजाति के विद्रोह को अशोक ने दबाया था।
- यूनानी इतिहासकार एथिनीयस के अनुसार इसने यूनान के शासक से तीन चीजें मंगवायी थी -
 1. मीठी शराब
 2. सूखे मेवे (अंजीर)
 3. दार्शनिक (सोफिस्ट)
- यूनानी शासक ने केवल मीठी शराब, सूखे मेवे भेज दिये परन्तु दार्शनिक नहीं भेजे।

अशोक मौर्य (273 -232 BC) -

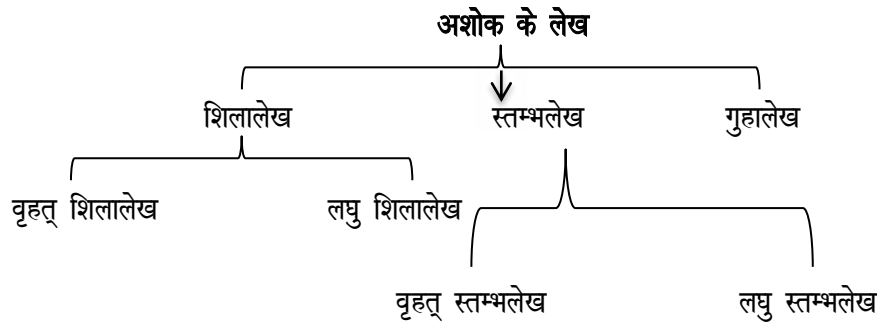
- बौद्ध साहित्य के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या के बाद सिंहासन प्राप्त किया।
- राज्याभिषेक - 269 BC
- अशोक का अपने भाईयों के साथ चार वर्ष तक उत्तराधिकार संघर्ष चला।
- अशोक का मुख्य प्रतिद्वंद्वी उसका भाई सुशीम था।
- माता - भीमा/सुभद्रांगी/धर्मा
- राजा बनने से पहले अशोक अवन्ति का गर्वनर था।
- अशोक की पत्नियाँ -
 1. देवी (इसके पुत्र महेंद्र एवं पुत्री संघमित्रा ने श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया।)
 2. कोरुवकी/कारुवकी (कारुवकी व इसके पुत्र तीवर का उल्लेख रानी के अभिलेख में मिलता है।)
 3. पद्मावती (पुत्र - कृणाल)
 4. तिस्यरक्षा (इसने कृणाल की आँखें फुड़वा दी थी इसलिए अशोक ने इसे जिन्दा जलवा दिया था।)
- अपने शासनकाल के 8वें वर्ष में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया।
- कलिंग की राजधानी तोशली थी।
- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार कलिंग का राजा नन्दराज था।
- इस युद्ध में एक लाख लोग मारे गये एवं 1.5 लाख लोगों को युद्धबंदी बनाया गया।
- इस युद्ध के पश्चात् अशोक ने 'युद्ध नीति/युद्ध घोष' के स्थान पर 'धम्म नीति' या 'धम्म घोष' को अपनाया।
- **अशोक का धर्म** - कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक भगवान शिव का भक्त था। उसने कश्मीर में श्रीनगर शहर बसाया (झेलम नदी के तट पर) एवं वहां शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- अशोक ने नेपाल में ललितपाटन एवं उसकी पुत्री चारुमती ने देवीपाटन शहर बसाया।
- दीपवंश एवं महावंश (सिंहल साहित्य) के अनुसार, सुशीम के पुत्र निग्रोथ ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
- अशोक मोग्गलीपुत तिसस के कारण बौद्ध धर्म से प्रभावित हुआ।
- दिव्यावदान (पुस्तक) व ह्वेनसांग (चीनी यात्री) के अनुसार, उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।

- अशोक ने अपने शासनकाल के 10वें वर्ष में बोधगया एवं 20वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की थी।
- भाब्रू अभिलेख के अनुसार अशोक के बौद्ध होने की जानकारी मिलती है।
- भाब्रू अभिलेख में अशोक बुद्ध, संघ, धम्म के शरण में जाने की बात करता है।

☑ अशोक का धम्म -

- धम्म, अशोक की आचार संहिता थी।
- धम्म, बौद्ध धर्म का हिस्सा नहीं था। लेकिन इस पर बौद्ध धर्म का प्रभाव था।
- द्वितीय वृहत् स्तंभ लेख में धम्म की परिभाषा मिलती है।
- इसमें माता-पिता की सेवा, अतिथि सत्कार, सबका कल्याण जैसी शिक्षाएँ मिलती हैं।
- अशोक ने धम्म यात्राओं का आयोजन करवाया। तथा प्रचार के लिए यात्राएँ कीं। इसमें स्वर्ग की झाँकियाँ निकाली जाती थीं।
- शासनकाल के 13वें वर्ष में अशोक ने धम्म 'महामात्य/महामात्र' की नियुक्ति की।
- धम्म महामात्य लोगों को दान देने के लिए प्रोत्साहित करता था।
- धम्म महामात्य मृत्यु की सजा प्राप्त व्यक्ति के परिवार के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता था।
- धम्म की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए अशोक ने अभिलेख लगवाए।

✳ अशोक के अभिलेख -



शिलालेख -

1. वृहत् शिलालेख -

- इन अभिलेखों की संख्या 14 है एवं यह आठ जगहों से प्राप्त हुए हैं।
- | | |
|---------------|---------------------|
| 1. शाहबाजगढ़ी | } पेशावर, पाकिस्तान |
| 2. मानसेरा | |
| 3. कालसी | उत्तराखण्ड |
| 4. जूनागढ़ | गुजरात |
| 5. सोपारा | महाराष्ट्र |
| 6. धौली | } ओडिशा |
| 7. जौगड़ | |
| 8. एरंगुड़ी | आन्ध्रप्रदेश |

✧ महत्वपूर्ण जानकारीयाँ -

1. दूसरा शिलालेख -
 - लोक कल्याणकारी कार्य (अस्पतालों का निर्माण)
 - पड़ोसी राज्यों का उल्लेख जैसे - केरलपुत।
2. पाँचवा शिलालेख - धम्म महामात्रों की नियुक्ति का उल्लेख।
3. बारहवा शिलालेख - धार्मिक सहिष्णुता का संदेश, माता-पिता, गुरुओं का आदर।
4. तेरहवा शिलालेख - कलिंग युद्ध का वर्णन।

✧ पृथक कलिंग प्रज्ञापन -

- अशोक के धौली एवं जौगढ़ में स्थापित वृहत् शिलालेख में कलिंग युद्ध की जानकारी नहीं मिलती है।
- इसके स्थान पर पृथक कलिंग प्रज्ञापन लिखवाया गया।
- इसमें अशोक कलिंग की प्रजा को अपनी संतान बताता है।

2. लघु शिलालेख -

- ✓ इनमें अशोक की व्यक्तिगत जानकारी मिलती है।
 - मास्की कर्नाटक
 - गुर्जरा मध्यप्रदेश
 - नेट्टुर कर्नाटक
 - उदेगोलम कर्नाटक

} इन अभिलेखों से अशोक के नाम की जानकारी मिलती है।
- ✓ अन्य अभिलेखों में अशोक की उपाधि 'देवानामप्रिय/देवानामप्रियदर्शी' का उल्लेख मिलता है।
 - सिद्धपुर
 - ब्रह्मगिरी
 - जटिंग
 - रामेश्वर

} कर्नाटक
धम्म का सारांश मिलता है।
- ✓ विद्वानों ने इन्हें द्वितीय लघु शिलालेख कहा है।

✧ भाबु अभिलेख - विराटनगर (जयपुर)

- अशोक स्वयं को मगध का सम्राट कहता है।
- अशोक अपनी आस्था बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों में प्रकट करता है। बुद्ध, धम्म, संघ

✧ शर-ए-कुन्हा (कंधार) अभिलेख - अफगानिस्तान

- यह अशोक का द्विभाषी अभिलेख है।
- दो भाषाएँ - ग्रीक एवं अरामेइक

स्तम्भलेख -

1. वृहत् स्तम्भलेख -

- इनकी संख्या 7 है एवं 6 स्थानों से प्राप्त होते हैं।

1. प्रयाग स्तम्भ -

- यह मूल रूप से कौशाम्बी में था।
- अकबर ने इसे प्रयाग (इलाहाबाद) में स्थापित करवाया।

- ✓ अशोक का वृहत् स्तम्भ लेख
- ✓ रानी का लेख (काखवकी पुत्र तीवर का उल्लेख)
- ✓ समुद्रगुप्त का लेख
- ✓ बीरबल का लेख
- ✓ जहाँगीर का लेख

2. टोपरा स्तम्भ - (हरियाणा)

- एकमात्र अभिलेख जिसमें पूरे सात अभिलेख प्राप्त होते हैं।
- मूल रूप से हरियाणा में स्थित था परन्तु फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया।
- सातवें अभिलेख में जैन (निग्रन्थों) धर्म व आजीवक सम्प्रदाय का उल्लेख मिलता है।

3. दिल्ली- मेरठ स्तम्भ - मूलरूप से मेरठ में था, परन्तु फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया।

4. लौरिया, नन्दनगढ़

5. लौरिया, अरराज

6. रामपुरवा

} बिहार

2. लघु स्तम्भलेख - इसमें अशोक की राजनीतिक आदेशों की जानकारी मिलती है।

जैसे -

▪ खम्बिनदेई अभिलेख - (लुम्बिनी, नेपाल)

- ✓ अशोक ने 20वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की।
- ✓ अशोक ने भू-राजस्व दर घटाकर 1/6 से 1/8 कर दिया।
- ✓ मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था की जानकारी देने वाला एकमात्र अभिलेख है।

▪ सांची अभिलेख, (मध्यप्रदेश) सारनाथ अभिलेख (उत्तर प्रदेश) -

- ✓ उपर्युक्त अभिलेखों में अशोक संघ में फूट डालने वाले बौद्ध भिक्षुओं को चेतावनी देता है और कहता है कि -
“जेल रहने लायक स्थान नहीं हैं। एवं कैदियों को सफेद वस्त्र धारण करने होते हैं।”

▪ निगाली सागर (निगलिवा) अभिलेख - नेपाल में स्थित।

- ✓ अशोक ने 14वें वर्ष में यहां यात्रा की।
- ✓ कनक मुनि स्तूप को दुगुना करवाया।

गुहा लेख -

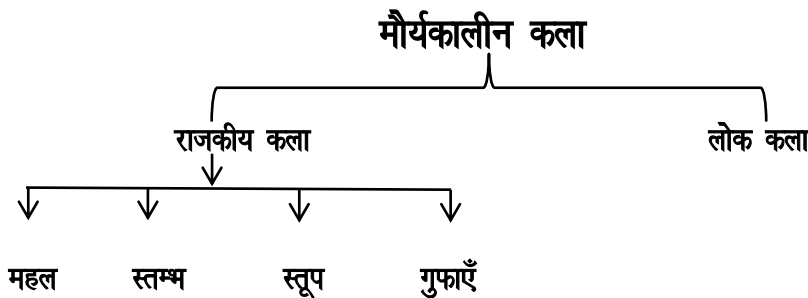
- अशोक ने आजीवक साधुओं हेतु गुफाओं का निर्माण करवाया। इन गुफाओं में अशोक के लेख मिलते हैं।
- गुफाओं के नाम -
 1. कर्ण चोपड़
 2. सुदामा
 3. विश्वज्ञोपड़ी

} बाराबर पहाड़ियाँ, बिहार
- अशोक के अभिलेखों की भाषा - प्राकृत (प्रादेशिक/स्थानीय)
- अशोक के अभिलेखों की लिपियाँ -
 1. ब्राह्मी लिपि (सर्वाधिक)
 2. खरोष्ठी

3. अरामेईक/अरामाईक

4. ग्रीक/यूनानी

- 1750 - टिफेन्थैलर ने अशोक के अभिलेखों की खोज की।
- 1837 - जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों की ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।
- डी. आर. भण्डारकर ने अशोक के अभिलेखों के आधार पर अशोक का इतिहास लिखा है।
- अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया था -
 1. दशरथ → पूर्वी भाग → राजधानी → पाटलिपुत्र
 2. सम्प्रति → पश्चिमी भाग → राजधानी → उज्जैन
- दशरथ आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- दशरथ ने देवानामप्रिय की उपाधि धारण की थी।
- सम्प्रति जैन धर्म का अनुयायी था।
- अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ था।
- बाणभट्ट की पुस्तक 'हर्षचरित' के अनुसार वृहद्रथ के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने वृहद्रथ की हत्या कर दी।



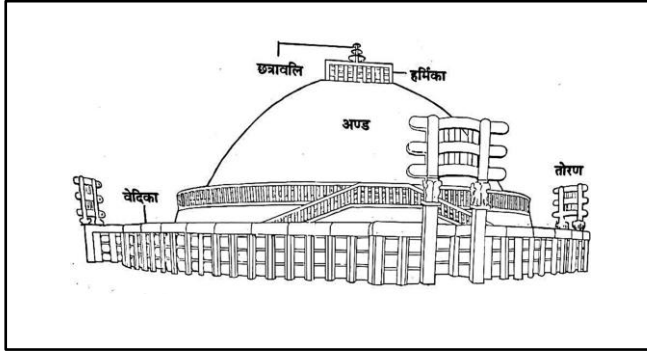
A. राजकीय कला -

1. महल -

- बुलन्दीबाग (पटना) से लकड़ी के महलों के साक्ष्य मिलते हैं।
- कुम्वराह (पटना) से मौर्यकालीन राजप्रासाद का साक्ष्य मिलता है।
- मेगस्थनीज तथा स्ट्रेबो ने पाटलिपुत्र एवं चन्द्रगुप्त के महलों की प्रशंसा करते हैं।
- 'एरियन' पाटलिपुत्र के महलों को एकवेतना (ईरान) एवं सुसा (ईरान) के महलों से अत्यधिक सुंदर बताता है।
- चीनी यात्री फाहयान के अनुसार 'इन महलों' का निर्माण दैत्य एवं देवताओं ने करवाया है।

2. स्तूप -

- बौद्ध साहित्य के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण करवाया।
- **स्तूप परिचय -**
 - शाब्दिक अर्थ - 'ढेर'
 - स्तूप का पहला उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
 - स्तूप वास्तु के विभिन्न अंग -



☼ स्तूपों का प्रकार -

(i) शारीरिक स्तूप -

- भगवान बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित जैसे - दाँत, हड्डियाँ आदि।
- इनकी संख्या - 8+1 है। (8 भगवान बुद्ध के अवशेष, 1 बर्तन)

(ii) पारिभोगिक स्तूप -

- भगवान बुद्ध द्वारा उपयोग में ली गई वस्तुओं पर निर्मित जैसे- भिक्षापात्र, पादुकाएँ आदि।

(iii) उद्देशिका स्तूप -

- भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थानों पर निर्मित।

(iv) पूजार्थक स्तूप -

- पूजा स्थल के रूप में निर्मित स्तूप।
- आस्था के प्रतीक ।

☼ प्रमुख स्तूप -

1. धर्मराजिका स्तूप - सारनाथ (उत्तर प्रदेश)
2. धर्मराजिका स्तूप - तक्षशिला, पंजाब (पाकिस्तान)
3. पिपरहवा स्तूप - उत्तर प्रदेश
4. सांची का स्तूप - मध्य प्रदेश

☑ सांची स्तूप की विशेषताएँ -

- निर्माण - मौर्यकाल में हुआ।
- पुनर्निर्माण - शुंग काल में हुआ।
- स्तूप अपने सुंदर तोरण द्वार के लिए प्रसिद्ध है।
- इसके तोरण द्वार पर भगवान बुद्ध के प्रतीक, शिक्षाएँ बुद्ध की घटनाओं का लौकिक चित्रण किया गया है।
- तोरणद्वार पर शालभंजिका की मूर्ति भी मिलती है।

• अन्य महत्वपूर्ण स्तूप -

1. पिपरहवा स्तूप - उत्तर प्रदेश
 - ✓ यह प्राचीनतम है।
 - ✓ यहां से भगवान बुद्ध के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
 - ✓ ईंटों से निर्मित स्तूप।

2. **भरहुत स्तूप - मध्यप्रदेश**
 - ✓ द्वितीय प्राचीनतम स्तूप।
 - ✓ मौर्यकाल में निर्माण एवं शुंगकाल में पुनर्निर्माण।
3. **धमेख स्तूप - सारनाथ (उत्तर प्रदेश)**
 - ✓ निर्माण - गुप्तकाल में
 - ✓ यह ईंटों से निर्मित है।
 - ✓ यह एक साधारण स्तूप है।
4. **अमरावती स्तूप - आंध्र प्रदेश**
 - ✓ यह सफेद संगमरमर से निर्मित।
 - ✓ निर्माण - तीसरी शताब्दी में व्यापारियों द्वारा करवाया गया।

✧ **चैत्य -**

- बौद्ध धर्म के पूजा गृह
- कालों के चैत्य प्रसिद्ध है। (महाराष्ट्र)

✧ **विहार - बौद्ध भिक्षुओं के आश्रम स्थल।**

3. **स्तम्भ -**

- कुछ इतिहासकारों के अनुसार अशोक के स्तम्भ डेरियस के स्तम्भों की नकल है।
- कारण -
 - दोनों पॉलिश युक्त थे।
 - दोनों पर कमल आकृति है।
 - दोनों शासकों ने 'देवानामप्रिय' की उपाधि धारण की।
- परन्तु दोनों में कई असमानताएँ थी।
- असमानताओं के कारण -

अशोक	डेरियस
• एकात्मक स्तम्भ	• कई पत्थरों को जोड़ कर बनाया गया।
• स्वतंत्र रूप से राज्य के विभिन्न कोनों में स्थापित	• डेरियस के महलों का ही अंग है।
• यह सपाट/समतल है।	• नालीदार/जिग-जैग
• अवांगमुखी (उल्टा) कमल	• सीधा कमल
• शीर्ष पर पशु आकृतियाँ निर्मित।	• शीर्ष पर मानव आकृतियाँ निर्मित।
• लेख युक्त स्तम्भ।	• लेख विहीन स्तम्भ।

1. **सारनाथ स्तम्भ -**

- इसके शीर्ष पर चार सिंह (शेर) बने हुए हैं।
- इसके फलक पर भगवान बुद्ध से संबंधित प्रतीक मिलते हैं। -
 - हाथी
 - सांड
 - घोड़ा
 - सिंह (शौर्य का प्रतीक)

- इसके फलक पर अशोक चक्र मिलता है जिसमें 32 तिल्लियाँ हैं।
- हमारे राष्ट्रीय ध्वज के अशोक चक्र में 24 तिल्लियाँ हैं।
- 26 जनवरी, 1950 को भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।
- सारनाथ स्तम्भ, अशोक स्तम्भ के रूप में लोकप्रिय है।
- यह सारनाथ संग्रहालय में रखा गया है।

2. सांची स्तम्भ	-	चार शेर
3. रामपुरवा स्तम्भ	-	एक बैल (नटुआ बैल)
4. लौरिया नंदनगढ़	-	एक शेर
5. संकिसा स्तम्भ	-	एक हाथी
6. वैशाली स्तम्भ	-	एक शेर
7. रुम्भिनदेई स्तम्भ	-	एक घोड़ा

4. गुफाएँ -

- अशोक ने आजीवक साधुओं के लिए बाराबर की पहाड़ियों में तीन गुफाओं का निर्माण करवाया।
 1. विश्वज्ञोपड़ी
 2. सुदामा
 3. कर्णचौपड़
- दशरथ ने बाराबर की पहाड़ियों में लोमहर्ष ऋषि की गुफा का निर्माण करवाया।
- दशरथ ने नागार्जुन की पहाड़ियों में गोपी, वापिका तथा पदथिक गुफाओं का निर्माण करवाया।

B. लोककला -

- इस काल में यक्ष व यक्षणियों की मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- मथुरा के समीप परखम से मणिभद्र नामक एक यक्ष की मूर्ति मिली है।
- मथुरा के पास बड़ोढ़ा/बरोड़ा से एक यक्ष की मूर्ति मिली है।
- पटना के पास दीदारगंज से एक यक्षिणी की मूर्ति मिलती है। जिसे 'चामार गृहिणी' या 'चंवरगृहिणी' कहा जाता है।
- राजघाट से त्रिमुखी यक्ष प्राप्त हुई व बेसनगर (मध्यप्रदेश) से भी यक्ष की मूर्ति प्राप्त हुई।
- बुलंदीबाग से नर्तकी की मूर्ति एवं रथ का एक पहिया प्राप्त हुआ।
- धौली (ओडिशा) में चट्टान को काटकर हाथी बनाया हुआ प्राप्त हुआ।

☑ मौर्यकालीन प्रशासन -

★ केंद्रीय प्रशासन -

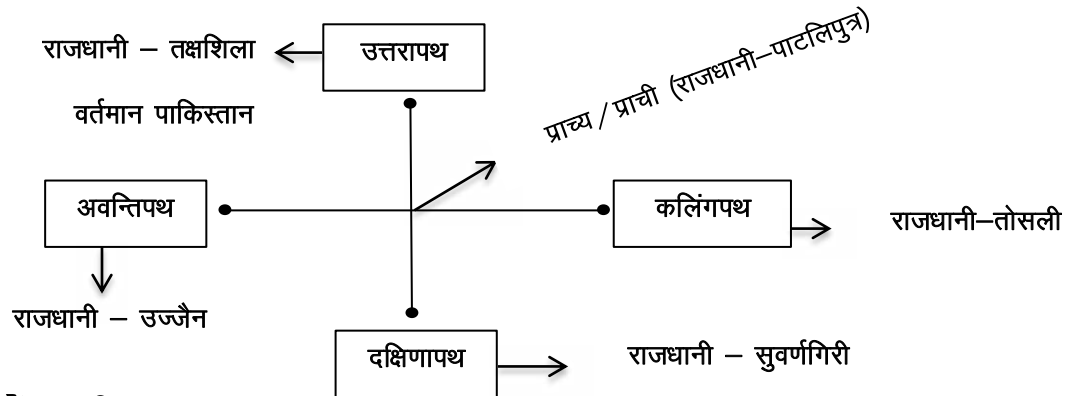
1. सम्राट -

- राजतंत्रात्मक, निरंकुश, केंद्रीकृत तथा वंशानुगत शासन व्यवस्था थी।
- चाणक्य का **सप्तांग सिद्धांत** प्रचलन में था।
 1. राजा
 2. अमात्य
 3. राष्ट्र
 4. दुर्ग
 5. कोष
 6. दण्ड/बल (सेना)
 7. मित्र (मित्र के पास उपर्युक्त सभी 6 चीजें होनी चाहिए।)
- शासक **राजत्व का दैवीय सिद्धांत** प्रचलन में था इसलिए शासकों ने देवानामप्रिय उपाधि धारण की थी।
- राजा की सहायता के लिए 18 मंत्री होते थे जिन्हें '**तीर्थ**' कहा जाता था।
- उपधा परीक्षण = तीर्थ या मंत्रियों के लिए आयोजित परीक्षा
- मंत्रिण = 3-4 प्रमुख मंत्री
- परिषा: = मंत्रिमंडल
- **प्रमुख तीर्थ -**
 - पुरोहित
 - युवराज
 - सेनानी
 - समाहर्ता - राजस्व अधिकारी
 - सन्निधाता - कोषाध्यक्ष
 - कर्मान्तिक - शाही कारखानों का प्रमुख
 - आन्तर्वेशिक - अंगरक्षक सेना का प्रमुख
 - आटविक - वन विभाग का प्रमुख
 - प्रशास्ता - पत्राचार विभाग का प्रमुख
 - दौवारिक - राजमहल की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला।
 - दुर्गपाल - दुर्गों का प्रमुख।
 - अंतपाल - सीमांत रक्षा प्रमुख।
 - प्रदेष्टा - न्यायाधीश (फौजदारी)
 - व्यावहारिक - न्यायाधीश (दीवानी)
- इन तीर्थ के अधीन 26 विभाग होते थे जिसके प्रमुख को अध्यक्ष कहा जाता था।
- **कुछ प्रमुख अध्यक्ष -**
 - मुद्राध्यक्ष - पासपोर्ट विभाग

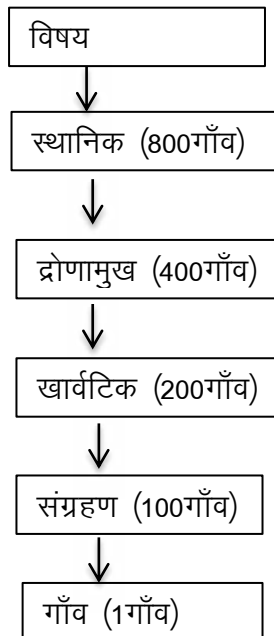
लक्षणाध्यक्ष	- टकसाल का प्रभारी
लवणाध्यक्ष	- नमक विभाग का प्रमुख
गणिकाध्यक्ष	- वैश्यावृत्ति विभाग
सूराध्यक्ष	- आबकारी विभाग
सूनाध्यक्ष	- बूचड़खाने का प्रमुख
महामात्यपसर्व	- गुप्तचर विभाग का प्रमुख
कूप्याध्यक्ष	- वन विभाग का प्रमुख
आकराध्यक्ष	- खान विभाग का प्रमुख

★ प्रांतीय प्रशासन -

- मौर्यकाल में 5 प्रांत थे।
- प्रांत को चक्र कहा जाता था।
- सामान्यतः राजकुमारों को प्रान्तपति नियुक्त किया जाता था।



✓ प्रांतों का विभाजन -



✓ सैन्य प्रशासन -

- मेगस्थनीज के अनुसार सेना का प्रशासन 6 समितियाँ संभालती थी।
- प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- सेना के विभिन्न अंग -
 1. पैदल सेना
 2. घुड़सवार सेना
 3. हाथी सेना
 4. रथ सेना
 5. नौसेना
 6. रसद सेना (आपूर्ति विभाग)

★ नगरीय प्रशासन -

- मेगस्थनीज के अनुसार नगर प्रशासन 6 समितियों द्वारा संचालित होता था।
- प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- एस्ट्रोनोमोई - नगर प्रशासक (मेयर)
- एग्रोनोमोई - राजमार्ग प्रशासक (सड़क या भवन निर्माण अधिकारी)।

★ न्याय प्रशासन -

- दीवानी न्यायालय - फौजदारी न्यायालय

↓

धर्मस्थीय

↓

व्यावहारिक (न्यायाधीश) -

↓

कण्टक शोधन

↓

प्रदेष्टा (न्यायाधीश)

- राजुक - जनपदीय/ क्षेत्रीय न्यायाधीश -
 - इसकी सर्वप्रथम नियुक्ति अशोक ने की थी।
 - मेगस्थनीज के अनुसार न्याय प्रक्रिया अच्छी एवं सरल थी।
 - भारतीय लोग ताले नहीं लगाते थे।
(मेगस्थनीज के अनुसार भारत में सोना पैदा करने वाली चिड़िया होती थी।)
- तीन मामलों में मृत्युदण्ड दिया जाता था -
 - ✓ राजद्रोह
 - ✓ कारीगर को नुकसान पहुँचाना
 - ✓ कर चोरी

★ गुप्तचर प्रशासन -

- गुप्तचर विभाग का प्रमुख - महामात्यपसर्व
- गुप्तचरों को गूढ़ पुरुष कहा जाता था।
- गुप्तचर दो प्रकार के होते थे -
 1. संस्था - एक ही स्थान पर रहकर सूचना एकत्रित करने वाले।
 2. संचार - घूम-घूमकर जासूसी करने वाले।

मौर्यकालीन सामाजिक स्थिति -

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार।
- समाज 4 भागों में विभाजित था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
- वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था जन्म आधारित थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार -
 - भारतीय समाज सात भागों में विभाजित थी -
 1. दार्शनिक
 2. किसान
 3. अहीर
 4. शिल्पी
 5. योद्धा
 6. निरीक्षक
 7. सभासद
 - भारतीय अपनी जाति नहीं बदल सकते थे।
 - वर्णसंकर वर्ग का अस्तित्व था तथा यह गाँव के बाहर निवास करते थे। जैसे - निषाद, स्वपाक, पार्श्व, अम्बष्ठ, चाण्डाल
 - भारत में दास प्रथा का प्रचलन नहीं था।
 - भारत में अकाल/सूखे नहीं पड़ते थे।
 - भारतीय देवताओं की मूर्तियाँ बनाते थे एवं मूर्तिकारों को **देवताकारु** कहा जाता था।
 - भारतीयों को लिखना नहीं आता था।
- महिलाओं की स्थिति संतोषजनक थी।
- चाणक्य के अर्थशास्त्र में कुलीन महिलाओं को '**अनिष्कासिनी**' कहा गया है।
- यूनानी इतिहासकारों के अनुसार भारतीय बिना दहेज विवाह नहीं करते थे।
- वैश्यावृत्ति का प्रचलन था राज्य के नियंत्रण में वैश्याओं को गणिका कहा जाता था।
- स्वतंत्र वैश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं को '**रूपाजीवा**' कहा जाता था।
- तलाक को मोक्ष कहते थे।
- वे महिलाएं जो पुनर्विवाह ना करके आजीवन अलग-थलग रहती थी उन्हें '**छन्दवासिनी**' कहा जाता था।
- पुरुष कलाकारों को **रंगोपजीवी** कहा जाता था, एवं महिला कलाकारों को **रंगोपजीविनी** कहा जाता था।
- कोटिल्य के अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है। (आहितक - अस्थायी दास को कहा जाता था)
- अशोक ने युद्धबंदियों को दास बनाया तथा उनको उत्पादन कार्यों में लगाया था।
- मेगस्थनीज ने शिव को डायोनिसस तथा कृष्ण को हेराक्लीज कहा है।
- शाहगौरा (उत्तर प्रदेश) तथा महास्थान (पश्चिम बंगाल) नामक अभिलेखों से अकाल राहत कार्यों की जानकारी मिलती है।

मौर्यकालीन आर्थिक स्थिति -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी।
- उदेवमातृक - बिना सिंचाई के साधनों के अच्छी फसल पैदा करने वाली भूमि।
- सीता भूमि - राजकीय भूमि। इस भूमि से 1/2 कर वसूला जाता था।
- भाग - भू-राजस्व कर को भाग कहा जाता था जो 1/6 था। (यूनानी इतिहासकारों के अनुसार 1/4 था।)
- सेतुबंद/उदुंगकर - सिंचाई कर जो 1/5 से 1/3 था।
- अधिकतर उद्योग राज्य के नियंत्रण में थे। (नमक, शराब, धातु आदि)
- सूती वस्त्र उद्योग प्रमुख उद्योग था।
- बेगार प्रथा को **विष्टी** कहा जाता था।
- व्यापार वाणिज्य उन्नत अवस्था में था एवं घरेलु व विदेशी दोनों प्रकार का व्यापार होता था।
- घरेलु व्यापार पर चार प्रतिशत एवं विदेशी व्यापार पर दस प्रतिशत कर लगता था।
- उत्तरापथ - मौर्यकालीन प्रमुख राजमार्ग जो सम्पूर्ण उत्तर भारत (तक्षशिला से ताम्रलिप्ति) में था।
- प्रमुख बंदरगाह -
 - ताम्रलिप्ति (पश्चिम बंगाल) - पूर्वी तट पर
 - भृगुकच्छ (गुजरात) - पश्चिमी तट पर
 - सोपारा (महाराष्ट्र) - पश्चिमी तट पर
- मुद्रा प्रणाली का आरम्भ हो चुका था मौर्यकाल में आहत सिक्कों का प्रचलन था -
 - सोने के सिक्कों - सुवर्ण
 - चाँदी के सिक्कों - कार्पाषण, धरण, पण
 - ताँबे के सिक्कों - भाषक/काकणी (यह सिक्के आहत/पंचमार्क कहलाते थे)
- सिक्कों की शुद्धता की जाँच करने वाले अधिकारी को रूपक/रूपदर्शक कहते थे।
- लोग स्वयं के सिक्के ढाल सकते थे।
- किसी को भी 13.5 प्रतिशत कर देकर मुद्रा जारी करने का अधिकार था।
- ब्याज पर मुद्रा का आदान-प्रदान किया जाता था सामान्य ब्याज दर 15 प्रतिशत थी। और समुद्री व्यापारियों के लिए 60 प्रतिशत होती थी।

नोट -

☆ अर्थशास्त्र -

- लेखक - कोटिल्य/चाणक्य/विष्णुगुप्त
- विषयवस्तु - राजनीतिक विज्ञान/शास्त्र पर आधारित प्राचीनतम पुस्तक
- इसे गद्य एवं पद्य दोनों में लिखा गया।
- यह पुस्तक प्रश्नोत्तर प्रारूप में लिखित है।
- जानकारी - बिन्दुसार एवं चंद्रगुप्त मौर्य से संबंधित।
- इस पुस्तक में 15 अध्याय हैं।
- अर्थशास्त्र में कुम्हार का उल्लेख नहीं मिलता।

✧ अन्य पुस्तकें -

- मैगस्थनीज - इंडिका
- एरियन - इंडिका
- पित्नी - नेचुरल हिस्ट्री/हिस्टोरिका
- टॉल्मी - ज्योग्राफी
- अज्ञात - पेरिपल्स ऑफ द एरिथ्रियन सी
(इसमें भारतीय बंदरगाहों, व्यापार-वाणिज्य की जानकारी मिलती है।)

मौर्योत्तर काल (185BC-319 AD)

☑ क्रमानुसार वंश -

1. शुंग वंश
2. कण्व वंश
3. सातवाहन वंश
4. इण्डो-ग्रीक वंश
5. शक वंश
6. कुषाण वंश
7. संगम काल (चेर वंश, चोल वंश, पाण्ड्य वंश)

1. शुंग वंश (185-75 BC) -

- संस्थापक - पुष्यमित्र शुंग
- शुंग वंश राजधानी - पाटलिपुत्र, विदिशा

☑ पुष्यमित्र शुंग -

- यह अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ का सेनानायक था।
- बौद्ध साहित्य में इसे बौद्ध धर्म का दुश्मन बताया गया है।
- बौद्ध साहित्य के अनुसार पुष्यमित्र ने 84,000 स्तूपों को तुड़वा दिया था इसने पाटलिपुत्र के कुक्कारा/कुक्काराम विहार को तोड़ने का असफल प्रयास किया।
- इसने विधर्व के शासक यज्ञसेन को पराजित किया।
- इसने ब्राह्मण धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
- इसने दो अश्वमेध यज्ञों का आयोजन करवाया।
- अश्वमेध यज्ञों के पुरोहित - पतंजलि
- पतंजलि की पुस्तकें -
 1. योगदर्शन
 2. योगसूत्र
 3. महाभाष्य - पाणिनी की अष्टाध्यायी पर टीका
- अश्वमेध यज्ञ की जानकारी धनदेव के आयोध्या अभिलेख से मिलती है।
- इसके शासनकाल के दौरान इण्डो-ग्रीक (यवनों) ने भारत पर आक्रमण किये।
- पुष्यमित्र शुंग के पौते तथा अग्निमित्र शुंग के पुत्र वसुमित्र ने ग्रीक आक्रमणकारियों को पराजित किया।
- इन आक्रमणों की जानकारी - कालिदास की मालविकाग्निमित्र, पतंजलि की महाभाष्य तथा गार्गी संहिता से मिलती है।

☑ भागभद्र -

- इस वंश का नौवां शासक था।
- इसके दरबार में यूनानी दूत **हेलियोडोरस** आया था।
- हेलियोडोरस ने भागवत धर्म को स्वीकार कर लिया। तथा इसने विदिशा के बेस-नगर में **गरुड़-स्तम्भ** स्थापित करवाया।

☑ **देवभूति -**

- शुंग वंश का अंतिम शासक।
- वासुदेव कण्व ने इसकी हत्या कर दी।

☉ **शुंग वंश की विशेषताएँ -**

- इस वंश ने ब्राह्मण धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
- इस काल में सांची स्तूप का विस्तार हुआ।

2. कण्व वंश (75 BC-30BC)

- संस्थापक - वासुदेव कण्व
- अंतिम शासक - सुशर्मा

3. सातवाहन वंश (शासन लगभग - 300 वर्ष)

☑ **सिमुक - संस्थापक**

☑ **शातकर्णी -**

- इस वंश का पहला प्रसिद्ध शासक।
- इसकी जानकारी नागणिका के नानाघाट अभिलेख से मिलती है।
- इसने दो अश्वमेध यज्ञ और एक राजसूय यज्ञ करवाया।
- 'पेरिपल्स ऑफ द इरिथ्रीयन सी' नामक पुस्तक में इसे 'एल्डर सारागोनस' कहा गया है।

☑ **हाल -**

- यह इस वंश का 17वां शासक था।
- यह विद्वान शासक था।
- पुस्तक - गाथा सप्तशती
 - ✓ विषय - 700 प्रेम कहानियाँ
 - ✓ भाषा - प्राकृत
- दरबारी विद्वान -
 1. गुणाढ्य - वृहत्कथा
 - वृहत्कथा पर आधारित पुस्तकें -

रचयिता	पुस्तकें
✓ क्षेमेंद्र	वृहत्कथामंजरी
✓ सोमदेव	कथा चरित सागर
 2. सर्ववर्मन - कातन्त्र (विषयवस्तु - संस्कृत व्याकरण)
- हाल के सेनापति विजयपाल ने श्रीलंका पर आक्रमण किया।
- हाल ने श्रीलंका की राजकुमारी लीलावती से विवाह किया।

☑ गौतमी पुत्र शातकर्णी -

- उपाधियाँ -
 1. आगमन-निलय
 2. वेणुकटक स्वामी
 3. अद्वितीय ब्राह्मण
 4. त्रिसमुद्रतोयपितावाहन
- इसके घोड़े तीन समुद्रों का पानी पीते थे।
- इसने वैदिक मार्ग एवं वर्ण व्यवस्था को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।
- अंतरजातीय विवाह पर प्रतिबंध लगाया।
- वेणुकटक नामक शहर बसाया।
- इस शासक की जानकारी उसकी माता गौतमी बलश्री की नासिक प्रशस्ति से मिलती है।
- इसने शक शासक नहपान को पराजित किया एवं उसके सिक्कों पर अपना नाम लिखवाया था।
- यह एक धर्मनिरपेक्ष शासक था।
- इसने नासिक बौद्ध संघ को अजकालकिय गाँव तथा कार्ले बौद्ध संघ को करजक गाँव भेंट किए थे।

☑ वशिष्ठी पुत्र पुलमावी -

- सातवाहन वंश का 24वां शासक था।
- इसे पुराणों में पुलोमा कहा गया है।
- प्रथम शासक जिसके अभिलेख आंध्रप्रदेश से मिलते हैं।
- अभिलेखों में इसे दक्षिणापथेश्वर कहा गया है।
- शक शासक रुद्रदामन ने इसे दो बार पराजित किया था।
- इसने रुद्रदामन की पुत्री से विवाह किया था।
- इसने नवगगर नामक शहर बसाया था।

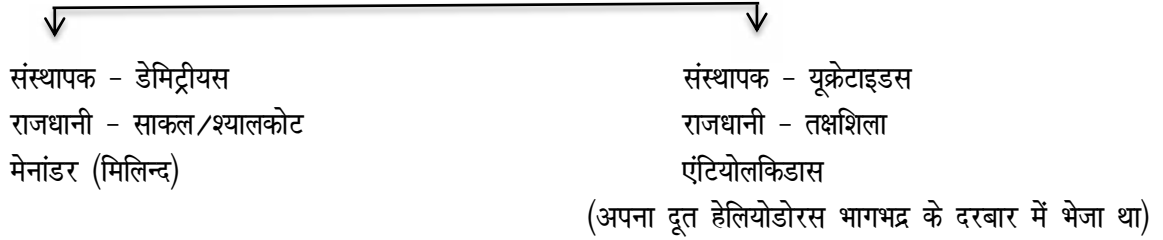
☑ यज्ञ श्री शातकर्णी -

- यह सातवाहन वंश का 27वां शासक था।
- इसके सिक्कों पर जहाज, नाव, मछली, सीप आदि के चित्र मिलते हैं।
 - इसने समुद्री व्यापार पर अधिक ध्यान दिया था।

☉ सातवाहन वंश की विशेषताएँ -

1. राजधानी - प्रतिष्ठान (पैठन-महाराष्ट्र)
2. पुराणों में इन्हें 'आन्ध्र भृत्य' कहा गया है।
3. मातृसत्तात्मक समाज।
4. शासक अपने नाम के आगे माता के गौत्र का प्रयोग करते थे।
5. इन्होंने सीसे/पोटिन के सिक्के चलाएँ।
6. इस वंश की भाषा - प्राकृत
7. सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिया जिसके कारण कालांतर में सामंती प्रथा की शुरुआत हुई।

4. इण्डो-ग्रीक -



☑ मेनांडर -

- इसने नागसेन बौद्ध भिक्षु के साथ वार्तालाप किया था।
- मेनांडर ने नागसेन से कई सवाल पूछे।
- इन प्रश्नों व उत्तरों पर एक पुस्तक का संकलन किया गया जिसका नाम 'मिलिन्दपन्हो' है।
- मेनांडर ने सर्वप्रथम सोने के सिक्कों का अंकन शुरू किया।
- मथुरा से मेनांडर के सिक्के प्राप्त होते हैं।

☑ हर्मियस - अन्तिम इण्डो ग्रीक शासक था जिसे शकों द्वारा पराजित किया गया था।

5. शक वंश -

- शक मध्य एशिया की बर्बर जनजाति थी।
- यूची कबीले ने इन्हें पराजित किया।
- चीनी साहित्य में शकों को सर्ई/सर्ईवांग कहा जाता था।
- भारतीय साहित्य में इन्हें सिथियन कहा जाता है।
- डेरियस के 'नक्श-ए-रुस्तम' अभिलेख में शकों का उल्लेख मिलता है।
- शकों ने भारत में चार शाखाएँ स्थापित की थी -
 - ✓ तक्षशिला } उत्तरी शक
 - ✓ मथुरा } उत्तरी शक
 - ✓ नासिक } पश्चिमी शक
 - ✓ उज्जैन } पश्चिमी शक

☑ रुद्रदामन -

- सबसे प्रसिद्ध शक शासक था।
- इसने वशिष्ठी पुत्र पुलवामी को दो बार पराजित किया था।
- जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार इसने 'सुदर्शन झील' का पुनर्निर्माण करवाया।
- जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत भाषा का प्रथम बड़ा अभिलेख है।
- जूनागढ़ अभिलेख में रुद्रदामन को संगीतज्ञ बताया गया है।
- शकों ने संस्कृत भाषा को संरक्षण दिया था।

☑ रुद्रसिंह तृतीय -

- यह शक वंश का अन्तिम शासक था

6. कुषाण वंश (30AD-375AD)

- यह मध्य एशिया के यूची कबीले के कुई शुआंग शाखा से संबंधित थे।
- यह शकों के पीछे भारत आए थे।
- कुई शुआंग भी मध्य एशिया की बर्बर जनजाति थी।

☑ कुजुल-कड़फिसस -

- कुषाण वंश का संस्थापक था।
- इसे प्रथम कड़फिसस भी कहा जाता है।

☑ विमकड़फिसस -

- इसे दूसरा कड़फिसस कहा जाता है।
- इसने भारत में कुषाण वंश की स्थापना की।
- यह भगवान शिव का अनुयायी था। (उपाधि - महेश्वर)
- इसके सिक्कों पर शिव, त्रिशुल, नंदी, डमरू के चित्र मिलते हैं।
- यह पहला कुषाण शासक था, जिसने भारत में शुद्ध सोने के सिक्के चलाये।

☑ कनिष्क -

- इस वंश का सबसे महान शासक था।
- राज्याभिषेक - 78 ई. (शक संवत् आरम्भ हुआ - भारत का राजकीय संवत् है।)
- राजधानियाँ -
 1. पुरुषपुर/पेशावर
 2. मथुरा - उत्तर भारत पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु।
- इसने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया।
- पाटलिपुत्र से इसे बुद्ध का भिक्षापात्र, अनोखामुर्गा एवं अश्वघोष मिले।
- कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार इसने कश्मीर पर आक्रमण किया एवं वहां कनिष्कपुर नामक शहर बसाया।
- इसने कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- कनिष्क ने मध्य एशिया पर अधिकार कर लिया अतः भारत का रेशम मार्ग पर अधिकार हो गया।
- कनिष्क ने पान चाओं के नेतृत्व वाली चीनी सेना को पराजित किया। (जानकारी - राबाटक अभिलेख)
- कनिष्क महायान शाखा का अनुयायी था।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति पर महायान शाखा का प्रभाव था।
- इसके सैनिकों ने इसकी हत्या कर दी।
- दरबारी विद्वान -
 1. वसुमित्र - विभिषाशास्त्र
 2. नागार्जुन - माध्यमिक कारिका
 3. अश्वघोष -
 1. बुद्धचरित - इसे बौद्ध धर्म का 'एनसाइक्लोपीडिया' कहा जाता है।
 2. सारिपुत्र प्रकरण
 3. सूत्रालंकार
 4. सौन्दरानन्द

4. चरक - चरक संहिता (विषयवस्तु - आयुर्वेद पर आधारित)
5. सुश्रुत - सुश्रुत संहिता (विषयवस्तु - शल्य चिकित्सा पर आधारित)
 - ✓ यह कनिष्क के समकालिन नहीं थे।
 - ✓ यह एक शल्य चिकित्सक थे।

☑ हूविष्क -

- यह भागवान विष्णु का अनुयायी था।
- इसके सिक्कों पर चतुर्भुज विष्णु के चित्र मिलते हैं।

☑ कुषाण शासकों की विशेषताएँ -

- कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के चलाये।
- कुषाण शासक देवपुत्र, देवप्रिय उपाधियाँ धारण करते थे।
- कुषाण शासक मंदिरों में अपनी मूर्तियाँ स्थापित करवाते थे।
- सिले हुए कपड़ों एवं चमड़े के जूतों का प्रचलन।
- घोड़े के लगाम लगाना। (काठी लगवाना)

☑ मौर्योत्तर कालीन व्यापार-वाणिज्य -

- यह काल व्यापार एवं वाणिज्य का स्वर्णकाल था।

कारण -

- रेशम मार्ग पर भारत का नियंत्रण था।
- भारत एक मध्यस्थ के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। (राजस्थान भी)
- रोमन साम्राज्य अपने चरम सीमा पर था एवं रोमन साम्राज्य भारत के साथ व्यापार करता था।
- भारत में मुद्रा प्रणाली विकसित हो गई थी।
- कई नगर विकसित हो गए थे। एवं वहाँ के शासकों के रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध थे।
- दक्षिण भारत में संगम काल चला रहा था।
- दक्षिणी भारत में समुद्री व्यापार होता था।
- दक्षिण भारत में बंदरगाहों की प्रचुरता थी।
- अरिकामेडू (पांडिचेरी) से रोमन सिक्के प्राप्त होते हैं
- 46 ई. में हिप्पालस (यूनानी नाविक) ने व्यापारिक पवनों की खोज की थी।

☑ मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला -

- मौर्योत्तर काल में विभिन्न मूर्तिकला शैलियों का विकास हुआ।
- यह काल मूर्तिकला का स्वर्णकाल था।
- मूर्तियों का निर्माण सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ हो गया था लेकिन उनमें सुन्दरता एवं तकनीक का अभाव था।
- कुषाण एवं सातवाहन शासकों ने मूर्तिकला को संरक्षण प्रदान किया था।
- इस काल में निर्मित मूर्तियों में तकनीकी का अनुठा समावेश है।
- मौर्योत्तर काल में रोमन, ग्रीक, पारसी प्रभाव बढ़ा।
- बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण इस काल में बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण अधिक मात्रा में हुआ।

- इस समय तीन मूर्तिकला शैलियों का विकास हुआ-
 1. गांधार शैली
 2. मथुरा शैली
 3. अमरावती शैली

1. गांधार मूर्तिकला शैली -

- इस शैली को कुषाण शासकों ने राजकीय संरक्षण प्रदान किया था।
- यह यथार्थवादी एवं भौतिकवादी शैली है।
- इस पर ईरानी, यूनानी एवं रोमन शैलियों का प्रभाव है। इसे विदेशी कला भी कहा जाता है।
- भगवान बुद्ध को ग्रीक देवता भगवान 'अपोलो' के समान दिखाया गया है जिसमें भगवान बुद्ध को बलिष्ठ शरीर व घुंघराले बालों में दिखाया गया है।
- भगवान बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियाँ इसी शैली में निर्मित हैं।
- बुद्ध की अधिकतर मूर्तियाँ खड़ी अवस्था में हैं।
- बुद्ध की मूर्तियों पर लंबे व सुंदर वस्त्रों का अंकन है।
- इसमें गेरुआ बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है।
- प्रमुख केन्द्र -
 - तक्षशिला - पाकिस्तान
 - बामियान - अफगानिस्तान
 - भीमरान
 - हद

2. मथुरा मूर्तिकला शैली -

- कुषाण शासकों ने राजकीय संरक्षण प्रदान किया परन्तु इसका वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।
- यह स्वदेशी मूर्तिकला शैली है।
- इसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियों का विकास हुआ।
- भगवान बुद्ध की प्रथम मूर्ति इसी शैली में निर्मित है।
- अधिकतर मूर्तियाँ पद्मासन अवस्था में हैं।
- यह आध्यात्मिक मूर्तिकला शैली है।
- भगवान बुद्ध को दुबला-पतला व साधु के समान दिखाया गया है लेकिन बुद्ध के चेहरे पर अत्यधिक तेज दिखाया गया है।
- इस शैली में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है।
- प्रमुख केन्द्र -
 - मथुरा - उत्तर प्रदेश
 - सारनाथ - उत्तर प्रदेश
 - सांची - मध्य प्रदेश
 - अजंता - महाराष्ट्र

3. अमरावती मूर्तिकला शैली -

- यह स्वदेशी मूर्तिकला शैली है।
- इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था परन्तु वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।
- इसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म व बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियाँ बनीं।
- इसमें सफेद संगमरमर से मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- इस शैली में धार्मिक एवं गैर-धार्मिक मूर्तियों का निर्माण हुआ है।
- प्रमुख केन्द्र -
 1. अमरावती - आंध्र प्रदेश
 2. नागार्जुन कोंडा - आंध्र प्रदेश
 3. घंटशाल

गुप्तकाल (319 - 550 AD)

☑ श्री गुप्त (240-280 AD) -

- गुप्त वंश का संस्थापक
- चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार पाटलिपुत्र में मंदिर का निर्माण करवाया।
- प्रभावती गुप्त के पूना ताम्रपत्र अभिलेख में इसका उल्लेख मिलता है।
- इसने महाराज की उपाधि धारण की थी।
- महाराज उस समय सामन्तों की उपाधि थी।

☑ घटोत्कच (280-319 AD) -

- इसकी जानकारी प्रभावती गुप्त के पूना ताम्रपत्र से मिलती है।

☑ चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 AD)-

- गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- यह प्रथम गुप्त शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319/320 ई. में गुप्त संवत् आरम्भ किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी/कुमारी देवी से विवाह किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने सिक्कों पर श्री कुमारी देवी का नाम लिखवाया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने विभिन्न सिक्के चलाए -
 1. राजा-रानी प्रकार के सिक्के
 2. विवाह प्रकार के सिक्के
 3. श्री सिक्के
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने पुत्र समुद्रगुप्त के लिए अपना सिंहासन त्याग दिया।

☑ समुद्रगुप्त (335-375 AD) -

- इस वंश का सबसे शक्तिशाली एवं महान शासक था।
- उपाधियाँ -
 - ✓ लिच्छवी दोहित्र
 - ✓ धरणीबन्ध (पृथ्वी को एकसूत्र में बांधने वाला)
- जानकारी - हरिषेण की 'प्रयाग प्रशस्ति' से मिलती है।
 - यह चम्पू शैली (गद्य-पद्य) में लिखी गई।
 - प्रयाग प्रशस्ति की भाषा - संस्कृत
 - प्रयाग प्रशस्ति की लिपि - ब्राह्मी
- प्रयाग प्रशस्ति में इसे 'कविराज' बताया गया।
- हरिषेण समुद्रगुप्त का 'महासन्धिविग्रहक' था।

- प्रथम चरण में समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के 9 शासकों को पराजित किया। समुद्रगुप्त ने इन शासकों के खिलाफ 'प्रसभोद्धरण' नीति अपनाई थी। (प्रसभोद्धरण - किसी वंश को समूल नष्ट करना)
- दूसरे चरण में इसने दक्षिण भारत के 12 शासकों को पराजित किया एवं उनके लिए 'ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति' को अपनाया। (ग्रहणमोक्षानुग्रह - राजस्व वसूली के पश्चात उनका राज्य वापस दे देना)
- समुद्रगुप्त ने शक, कुषाण और सभी विदेशी आक्रमणकारियों को पराजित किया।
- समुद्रगुप्त ने कामरूप (असम), राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश के गणराज्यों को पराजित किया।
- समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार के सिक्के चलाए -
 1. गरुड़ सिक्के -
 - सबसे प्रसिद्ध सिक्का
 - गुप्त शासकों का राजकीय धर्म - भागवत धर्म था।
 - गुप्त वंश का प्रतीक गरुड़ था।
 2. अश्वमेध सिक्के -
 - समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया था।
 - अश्वमेध की जानकारी प्रयाग प्रशस्ति से नहीं मिलती है।
 - अश्वमेध यज्ञ की जानकारी इन सिक्कों से मिलती है।
 3. वीणावादन सिक्के -
 - संगीत प्रकार के सिक्के
 - समुद्रगुप्त स्वयं वीणा बजाया करता था।
 - प्रयाग प्रशस्ति में इसे 'कविराज' बताया गया।
 4. व्याघ्रहन्ता सिक्के - शेर के शिकार का अंकन।
 5. परशु सिक्के - कुल्हाड़ी का अंकन।
 6. धनुर्धर सिक्के -
- ✓ न्यूमिसमेटिक्स - सिक्कों का अध्ययन/संकलन

नोट -

- इस काल के काच नामक व्यक्ति के सिक्के भी मिलते हैं।
- काच संभवतः समुद्रगुप्त या उसके किसी महत्वाकांक्षी भाई का नाम था।
- इतिहासकार स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
- बौद्ध साहित्य के अनुसार श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त से गया में एक मंदिर की अनुमति मांगी थी।
- मेघवर्मन ने गया में एक विहार का निर्माण करवाया। अतः कहा जा सकता है कि समुद्रगुप्त धर्म निरपेक्ष शासक था।

☑ रामगुप्त -

- विशाखादत्त की 'देवीचन्द्रगुप्तम्' के अनुसार रामगुप्त की पत्नी का नाम 'ध्रुवस्वामिनी' / ध्रुवदेवी था।
- शक शासक रुद्रसिंह तृतीय ने रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी की मांग की। एवं पाटलिपुत्र पर आक्रमण करने का प्रयास किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने रुद्रसिंह तृतीय एवं रामगुप्त की हत्या कर दी एवं ध्रुवस्वामिनी से विवाह किया और शासक बन गया।
- रामगुप्त की जानकारी राष्ट्रकूट शासकों के अभिलेखों से मिलती है।
- एरण (मध्य प्रदेश) व भीलसा (मध्य प्रदेश) से रामगुप्त के सिक्के मिलते हैं।

☑ चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-414 AD) -

उपाधियाँ-

- विक्रमादित्य
- शकारि - अंतिम शक शासक रुद्रसिंह तृतीय की हत्या की एवं शकारि उपाधि धारण की।
- महारौली के लौह अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बहालिकों को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक के शासक रुद्रसेन द्वितीय से किया।
- रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात शासन प्रभावती गुप्त के पास आ गया।
- लौह स्तम्भ का संबंध चन्द्रगुप्त से है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न/विद्वान थे -
 1. कालिदास
 2. वराहमिहिर
 3. धनवन्तरी
 4. अमरसिंह
 5. वेताल भट्टी
 6. शंकु
 7. घटकपर्प
 8. क्षपणक
 9. वररुची
- 399 AD में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया।
- फाह्यान स्थल मार्ग से भारत आया था।
- वह जहाज द्वारा ताम्रलिप्ति बंदरगाह (पश्चिम बंगाल) से वापस चीन लौटा था।
- फाह्यान चन्द्रगुप्त के नाम का उल्लेख नहीं करता है।
- फाह्यान चन्द्रगुप्त द्वितीय की प्रशंसा करता है।
- फाह्यान बौद्ध धर्म की जानकारी प्राप्त करने के लिए भारत आया। (फाह्यान की पुस्तक - 'फो-क्वो-की')

☑ कुमारगुप्त (414-454 AD) -

- कुमारगुप्त की उपाधियाँ -
 - ✓ शक्रादित्य
 - ✓ महेन्द्रादित्य
- यह भगवान कार्तिकेय का भक्त था।
- इसने 'मयूर शैली' के सिक्के चलाये।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार शक्रादित्य (कुमार गुप्त) ने नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया था।
- इसने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया। इस यज्ञ के घोड़े को पुष्यमित्र ने पकड़ लिया था।
- स्कंदगुप्त के भीतरी अभिलेख के अनुसार - कुमारगुप्त के पुत्र स्कंदगुप्त ने पुष्यमित्रों को पराजित किया था।
- गुप्त शासकों में सर्वाधिक सोने के सिक्के कुमारगुप्त के मिलते हैं
- बयाना (भरतपुर) से गुप्त सिक्कों का ढेर मिलता है।
- गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के मिलते हैं।

❖ प्राचीन भारत के सिक्कों पर टिप्पणी -

- भारत के आरम्भिक सिक्कों को **आहत/पंचमार्क** सिक्के कहते हैं।
- ग्रीक/यूनानियों ने सोने के लेखयुक्त सिक्के चलाए।
- कुषाण - शुद्ध सोने के सिक्के चलाये।
- सातवाहन - सीसे एवं पोटिन के सिक्के चलाये।
- शक - विशेषता चाँदी के सिक्के
- गुप्त - सर्वाधिक सोने के सिक्के
- मौर्यकालीन सिक्के -
 - सुवर्ण - सोने का सिक्का
 - कार्षापण, धरण, पण - चाँदी के सिक्के
 - भाषक, काकनी - ताँबे के सिक्के
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने चाँदी के सिक्के चलाये।
- कुमारगुप्त ने सर्वाधिक सोने के सिक्के चलाये।
- कुमारगुप्त ने मयूर शैली के सिक्के चलाये।

☑ स्कन्दगुप्त (454-467 AD) -

- यह एक यौद्ध था। इसके शासनकाल में हूणों ने गुप्त साम्राज्य (भारत) पर आक्रमण किया।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार इसने हूणों को पराजित किया।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था। तथा इस झील के समीप विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया।
- स्कन्दगुप्त का उत्तराधिकारी पुरुगुप्त था।

☑ विष्णुगुप्त - इस वंश का अंतिम शासक था।

❖ हूण -

- हूण मध्य एशिया की जंगली एवं बर्बर जनजाति थी।
- हूणों ने हर हर महादेव का प्रसिद्ध नारा दिया था।
- 1. तिगिन - संस्थापक
- 2. तोरमण
- 3. मिहिरकुल -
 - ✓ यह तोरमण का पुत्र था।
 - ✓ भगवान शिव का अनुयायी था।
 - ✓ कोटा के पास बाड़ौली में शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
 - ✓ बाड़ौली, रावतभाटा (चित्तौड़गढ़) के पास स्थित है।
- मालवा शासक यशोधर्मन ने हूणों (मिहिरकुल) को पराजित किया था। यह जानकारी यशोधर्मन के मंदसौर अभिलेख से मिलती है।
- कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार मिहिरकुल क्रूर शासक था। हाथियों को पहाड़ों से नीचे फेंकना उसकी रुचि थी।
- चीनी यात्री सोन युंग के अनुसार यह एक नास्तिक व्यक्ति था।

सुदर्शन झील (काठियावाड़-गुजरात)	
निर्माण/पुनर्निर्माण	गवर्नर
निर्माण - चन्द्रगुप्त मौर्य	पुष्यगुप्त वेश्य
पुनर्निर्माण - अशोक मौर्य	तुशास्क
पुनर्निर्माण - रुद्रदामन(शक)	सुविशाख
पुनर्निर्माण - स्कंदगुप्त	चक्रपालिक (पर्णदत्त का पुत्र) - स्कंदगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख से जानकारी मिलती है।

रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से जानकारी

- मौर्यकालीन शासकों ने जनकल्याणकारी कार्यों के तहत सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- मौर्य शासकों ने सिंचाई प्रणाली विकसित की।
- अशोक मौर्य ने नहरों का निर्माण करवाया था।

☑ गुप्तकालीन साहित्य -

⊛ धार्मिक साहित्य -

1. रामायण

- रचनाकार - वाल्मीकि
- आरंभ में 6]000 श्लोक थे।
- वर्तमान में 24,000 हो गये। इसलिए इसे 'चतुर्विंशसहस्र संहिता' कहा जाता है।
- रामायण के अध्याय को 'काण्ड' कहते हैं।
- रामायण में 7 काण्ड है -
 1. बालकाण्ड - भगवान श्री राम के जन्म व शिक्षा की जानकारी।
 2. अयोध्या काण्ड - श्री राम की प्रशासनिक दक्षता की जानकारी।
 3. अरण्य काण्ड - श्री राम के विवाह व उनके गुरु विश्वामित्र की जानकारी।
 4. किष्किन्धा काण्ड - वनवास, सबरी, सुग्रीव, बाली आदि की जानकारी।
 5. सुन्दर काण्ड - भगवान श्री हनुमान जी एवं उनके जीवन की जानकारी।
 6. लंका काण्ड/ युद्ध काण्ड - लंका आक्रमण की जानकारी।
 7. उत्तर काण्ड - दीपावली पर्व, लव-कुश आदि की जानकारी।
- रामायण में पारिवारिक मूल्यों एवं कर्तव्यों पर अधिक बल दिया गया है।
- रामायण में आदर्श स्थापित किए गए हैं। जैसे -
 - आदर्श पत्नि - उर्मिला
 - आदर्श भाई - लक्ष्मण
 - आदर्श मित्र - सुग्रीव
 - आदर्श भक्त - हनुमान

2. महाभारत -

- रचनाकार - वेदव्यास
- धार्मिक मान्यतानुसार भगवान श्री गणेश ने इसे लिखा था।
- महाभारत के अध्याय को 'पर्व' कहा जाता है।
- आरम्भ में 8,000 श्लोक थे तब इसे "जयसंहिता" कहा जाता था।
- कालान्तर में 24,000 श्लोक हो गये तब इसे "भारत संहिता" कहा जाता था।
- वर्तमान में लगभग 1,00,000 (1 लाख) श्लोक हो गये तब इसे "महाभारत या शतसहस्र संहिता" भी कहा जाता है।
- महाभारत में 18 पर्व हैं।
- महाभारत का छठा पर्व भीष्म पर्व है।
- भगवद् गीता, भीष्म पर्व का भाग है।
- भगवद् गीता में पहली बार अवतारवाद का उल्लेख मिलता है।
- भगवद्गीता में 18 अध्याय हैं।
- निष्कर्ष - षड्यंत्र, अच्छाई की बुराई पर जीत, पांडव-कौरव युद्ध

❖ गैर धार्मिक साहित्य -

1. कालिदास -

दो काव्य -

1. रघुवंश - भगवान राम के वंश की जानकारी।
2. कुमार संभव - भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कार्तिकेय/कुमार की कहानी।
- देवता एवं दानवों के युद्ध की जानकारी।

दो अर्द्धकाव्य -

1. मेघदूत - एक पति की विरह वेदना की कहानी।
2. ऋतुसंहार - एक पत्नि की विरह वेदना की कहानी।

नाटक -

1. मालविकाग्निमित्रम् - पुष्यमित्र शुंग के राजकुमार अग्निमित्र व मालविका की कहानी।
2. विक्रमोर्वशीयम् - राजकुमार पुरुरवा एवं उर्वशी की कहानी।
3. अभिज्ञान शाकुन्तलम् -
 - कालिदास की सर्वश्रेष्ठ एवं अन्तिम रचना
 - राजा दुष्यन्त एवं उनकी पत्नि शकुन्तला तथा पुत्र भरत की कहानी।
 - प्रथम भारतीय पुस्तक जिसका यूरोपीय भाषा में अनुवाद हुआ।

2. भास -

पुस्तकें -

1. स्वप्नवासवदत्ता -

- अवन्ति के शासक प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता एवं वत्स के शासक उदियन की कहानी।
- यह भारत का प्रथम नाटक था।

2. प्रतिज्ञायोगन्धरायण - यह स्वप्नवासवदत्ता का द्वितीय भाग है।

3. चारुदत्तम् - यह काल्पनिक घटनाओं पर आधारित पुस्तक है।

3. अमरसिंह - अमरकोष
4. चन्द्रगोमिन - चन्द्रगोमिन व्याकरण
5. वात्स्यायन - कामसूत्र
6. विष्णु शर्मा - पंचतंत्र (विषयवस्तु - कूटनीति/राजनीति)
7. वेताल भट्टी - रावणवध
8. माघ - 'शिशुपालवध' (कवि माघ भीनमाल - जालौर के निवासी थे।)
9. कामन्दक - नीतिसार
10. क्षेमेन्द्र - वृहत्तकथामंजरी
11. शुद्रक - मृच्छकटिकम्
 - मृच्छकटिकम् का अर्थ मिट्टी की गाड़ी है।
 - इसका नायक चारुदत्त ब्राह्मण है। जो व्यापार करता था।
 - प्रथम पुस्तक जिसमें एक आम आदमी को नायक बताया गया है।
 - पुस्तक की घटनाएँ आपदधर्म की अवधारणाओं पर आधारित है।

☼ गुप्तकालीन साहित्य की विशेषताएँ -

- गुप्तकालीन साहित्य के अनुसार शुद्र एवं महिलाएँ प्राकृत भाषा बोलते थे। और अन्य पात्र संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे।
- पुस्तकों में सुखद अंत दर्शाया गया है।
- गुप्तकाल में साहित्य में नैतिक मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है।

☑ गुप्तकालीन चित्रकला -

- अजन्ता एवं बाघ की गुफाओं से गुप्तकालीन चित्र मिलते हैं।
- यहाँ से टेम्पेरा एवं फ्रेस्को चित्र प्राप्त होते हैं।
- इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का अत्यधिक सुंदरता से मिश्रण एवं प्रयोग किया गया है।

☼ अजन्ता की गुफाएँ - (महाराष्ट्र)

- अजन्ता की गुफाओं की खोज मद्रास प्रेसीडेंसी के सैनिकों ने की थी।
- अजन्ता में 29 गुफाएँ हैं। (NCERT के अनुसार) जबकि ASI के अनुसार यहां 30 गुफाएँ हैं।
- गुफा संख्या 1, 2, 9, 10 एवं 16, 17 के चित्र सुरक्षित मिलते हैं।
- अजन्ता और चैत्य और विहार मिले हैं।

☼ विहार - बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान।

☼ चैत्य - बौद्ध भिक्षुओं का पूजा घर। (कार्ले चैत्य, महाराष्ट्र एक प्रसिद्ध चैत्य है।)

- अजन्ता की गुफाएँ यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल हैं।
- अजन्ता की गुफाएँ एकाश्म गुफाएँ हैं
- मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध एवं वाघुर नदी के किनारे स्थित हैं।
- गुफा संख्या - 1, 2
 - सबसे नवीन गुफाएँ हैं।
 - उत्तरकालीन छठी व सातवीं शताब्दी की हैं।
 - गुफा संख्या 01 में चालुक्य शासक पुलकेशिन II को फारस के दूत का स्वागत करते हुए दिखाया गया है।

- गुफा संख्या 01 में पदमपाणि, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर का चित्र मिलता है।
- **गुफा संख्या - 9, 10**
 - सबसे प्राचीनतम गुफाएँ हैं।
 - मौर्योत्तर काल की हैं।
 - यह गुफाएँ सातवाहन शासकों की हैं।
- **गुफा संख्या - 16, 17**
 - यह गुप्तकालीन गुफाएँ हैं।
 - इनका निर्माण वाकटक नरेश हरिषेण के मंत्री वराहदेव ने करवाया था।
 - गुफा संख्या 16 में एक **मरणासन्न राजकुमारी** का चित्र मिलता है। जो संभवतः आनन्द की पत्नि सौधरा का है।
 - गुफा संख्या 17 में एक **माता एवं शिशु का चित्र** मिलता है। जो भगवान बुद्ध की पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल का है।
 - गुफा संख्या 17 में भगवान बुद्ध से संबंधित घटनाओं जैसे कि महाभिनिष्क्रमण, महापरिनिर्वाण के चित्र मिलते हैं।
 - गुफा संख्या 17 को **‘चित्रशाला’** कहा जाता है।

❖ **बाघ की गुफाएँ - (मध्यप्रदेश)**

- खोज ‘डेंजर फील्ड’ ने की।
- बाघ की गुफाओं की संख्या 9 है।
- इनमें बौद्ध जैन व हिन्दू धर्म से संबंधित चित्र मिलते हैं।
- गुफा संख्या 4 को रंगमहल कहा जाता है।

☑ **गुप्तकालीन मूर्तिकला -**

- गुप्तकाल की मूर्तियाँ धातु, शैलखड़ी (पत्थर), टेराकोटा द्वारा निर्मित थीं।
- उत्तर प्रदेश के सुल्तानगंज से धातु की आठ फीट लम्बी मूर्ति प्राप्त होती है।
- इस काल में हरिहर, त्रिदेव, मकरवाहिनी गंगा, कुर्मवाहिनी यमुना, अर्द्धनारीश्वर की मूर्तियाँ बननी आरंभ हुईं।
- यह मूर्तियाँ मौर्योत्तर कालीन मूर्तियों जितनी सुंदर नहीं थी परन्तु इनमें नग्नता का अभाव है।
- गुप्तकालीन मंदिरों से दशावतार, अप्सराओं की मूर्तियाँ भी बड़ी मात्रा में मिलती हैं।
- **प्रमुख केंद्र -**
 - मथुरा
 - सारनाथ
 - काशी
 - सांची
 - अजंता
 - एलौरा

☑ **गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य कला -**

- गुप्तकाल में उत्तर भारत में मंदिरों का निर्माण आरम्भ हुआ।
- आरंभिक मंदिर चबूतरानुमा हुआ करते थे। जिन्हें जगति कहते थे।
- चबूतरे के ऊपर एक कक्ष बनाया जाने लगा जिसे ‘गर्भगृह’ कहा जाता है। उसके ऊपर ‘शिखर’ एवं गर्भगृह से जुड़ा हुआ ‘प्रदक्षिणा पथ’ बनाया जाने लगा।

- चबूतरे के चारों ओर चीढ़ियाँ होती थी।
- इस समय पंचायतन शैली में भी मंदिरों का निर्माण होने लगा।
- गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण झाँसी के पास देवगढ़ का दशावतार मंदिर है।
- **इसके अन्य प्रसिद्ध मंदिर -**
 1. विष्णु मंदिर - भीतरी गाँव - उत्तरप्रदेश
 - यह ईंटों से निर्मित है।
 - 'ईंटों का मंदिर' भी कहा जाता है।
 2. शिव मंदिर - भूमरा - मध्यप्रदेश
 3. पार्वती मंदिर - नचना कुठार - मध्यप्रदेश
 4. विष्णु मंदिर - तिगवा - मध्यप्रदेश
 5. लक्ष्मण मंदिर - सिरपुर - छत्तीसगढ़
 6. भीम की चौरी - मुकुन्दरा - कोटा, राजस्थान

☑ गुप्तकालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी -

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के दृष्टिकोण से गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था।
- महारौली (दिल्ली) से चन्द्रगुप्त द्वितीय का लौह स्तम्भ मिलता है। जो गुप्तकालीन रसायन विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसे कभी जंग नहीं लगता।

☼ आर्यभट्ट -

- जन्म - पाटलिपुत्र (कुसुमपुर)
- इन्होंने गणित एवं खगोल विज्ञान को अलग-अलग किया।
- इसने सर्वप्रथम बताया कि सूर्य सौरमण्डल का केन्द्र है एवं पृथ्वी व अन्य गृह उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं।
- चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्र लगाता है।
- पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा हैं।
- आर्यभट्ट ने सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण के कारण को भी बताया।
- इन्होंने बताया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूर्णन करती है तथा चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है।
- इसने पृथ्वी की त्रिज्या बताई। (व्यास) जो आज भी प्रासंगिक है।
- इसने पाई (π) का मान दिया।
- इसने त्रिभुज के क्षेत्रफल का मान दिया।
- प्रथम व्यक्ति जिसने अपने नाम पर पुस्तक लिखी -
- आर्यभट्ट की पुस्तकें -
 1. आर्यभट्टियम्
 2. दशगीतिकासूत्र
 3. सूर्यसिद्धान्त - इसमें त्रिकोणमिति की जानकारी मिलती है।

❖ वराहमिहिर -

- इसने फलित ज्योतिष एवं कुण्डली पर कार्य किया।
- पुस्तकें -

- | | |
|---------------------|---------------|
| 1. पंच सिद्धान्तिका | 3. वृहत् जातक |
| 2. वृहत् संहिता | 4. लघु जातक |

❖ ब्रह्मगुप्त -

- ये भीनमाल (जालौर) के निवासी थे।
- ब्रह्मगुप्त ने दशमलव प्रणाली विकसित की।
- यह अरब देशों में अत्यधिक लोक प्रिय हुए।
- अरबों ने इनकी पुस्तकों का अनुवाद अरबी में किया।
- पुस्तकें -

1. ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त - अल-सिंध-हिंद (अरबी नाम)
2. खण्डन खाद्य - अल-अरकन्द (अरबी नाम)

❖ भास्कराचार्य प्रथम -

- इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तकों पर कार्य किया एवं उनकी व्याख्या की।
- पुस्तकें - 1. वृहत्भास्कर्य
2. लघुभास्कर्य

❖ भास्कराचार्य द्वितीय -

- यह महान गणितज्ञ थे।
- यह 12वीं शताब्दी के थे।
- पुस्तक - सिद्धान्त शिरोमणी

इसके 4 संस्करण हैं-

1. बीजगणित
2. गणिताध्ययन
3. गोलाध्ययन
4. लीलावती -

- ✓ भास्कराचार्य की पुत्री थी।
- ✓ लीलावती स्वयं गणितज्ञ थी।
- ✓ लीलावती का फारसी भाषा में अनुवाद फैजी ने किया था।

❖ वाग्भट्ट -

- पुस्तक - अष्टांगहृदय (आयुर्वेद पर आधारित दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक माना जाता है।)

❖ पालकाप्य -

- पुस्तक - हस्ति आयुर्वेद (हाथियों की चिकित्सा की जानकारी)

❖ अज्ञात लेखक -

- पुस्तक - नवनीतकम (आयुर्वेद शिक्षा)

भारतीय दर्शन

आस्तिक दर्शन (षड्दर्शन)

1. पूर्व मीमांसा
2. उत्तर मीमांसा
3. सांख्य
4. योग
5. न्याय
6. वैशेषिक

नास्तिक दर्शन

1. बौद्ध दर्शन
2. जैन दर्शन
3. चार्वाक दर्शन

⊛ आस्तिक दर्शन -

- वे दर्शन जो वेदों को नित्य और प्रामाणिक मानते हैं। आस्तिक दर्शन कहलाते हैं।
- इनकी संख्या 6 है इसलिए इन्हें षड्दर्शन कहा जाता है।
- षड्दर्शन का पूर्णतः विकास गुप्तकाल में हुआ।

⊛ नास्तिक दर्शन -

- वे दर्शन जो वेदों को नित्य एवं प्रामाणिक नहीं मानते हैं, नास्तिक दर्शन कहलाता है।
- इनकी संख्या तीन है।

☑ आस्तिक दर्शन -

1. पूर्व मीमांसा -

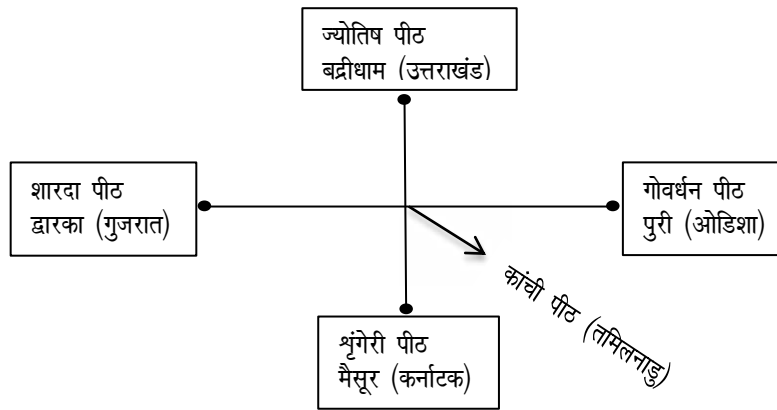
- संस्थापक - जैमिनी
- प्रमुख आचार्य -
 1. कुमारिल भट्ट
 2. प्रभाकर
- यह अनीवश्वरवादी दर्शन है। अर्थात् ईश्वर को नहीं मानते हैं।
- यह कर्मकाण्ड में विश्वास करते हैं।
- इनके अनुसार यदि सही विधि विधान से यज्ञ किया जाये तो फल अवश्य मिलता है।
- इनका दर्शन मुख्य रूप से वेदों एवं ब्राह्मण साहित्य पर आधारित है।

2. उत्तर मीमांसा -

- संस्थापक - बादरायण (पुस्तक - ब्रह्मसूत्र)
- यह ज्ञान मार्ग में विश्वास करते हैं।
- प्रस्थानत्रयी - ब्रह्मसूत्र + भगवद गीता + उपनिषद्
- इनका दर्शन मुख्य रूप से आरण्यक एवं उपनिषद्ों पर आधारित है।
- इस दर्शन में रहस्यात्मक ज्ञान तथा दार्शनिक तत्वों पर बल दिया गया है।
- प्रमुख आचार्य - शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य

✓ शंकराचार्य -

- इन्होंने अद्वैतवाद मत/दर्शन का प्रतिपादन किया।
- शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म को निर्गुण, निराकर, निर्विशेष व निर्वचनीय बताते हैं।
- शंकराचार्य ने ब्रह्म एवं जगत में तीनों भेदों सजातीय भेद, विजातीय भेद, स्वगत भेद को अस्वीकार किया है।
- शंकराचार्य के अनुसार 'ब्रह्म सत्य एवं जगत मिथ्या है।'
- माया के कारण हमें जगत का आभास होता है।
- परमार्थ के माध्यम से सत्यार्थ की अवस्था को पाया जा सकता है।
- शंकराचार्य ब्रह्म को सत्-चित् एवं आनन्द (सच्चिदानन्द) के आस-पास की अवस्था बताते हैं।
- **मंडन मिश्र -**
 - शंकराचार्य ने कुमारिल भट्ट के शिष्य मंडन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ किया।
 - कालांतर में मंडन मिश्र शंकराचार्य के शिष्य बन गए थे।



✓ रामानुजाचार्य -

- जन्म - श्री पेराम्बदुर (तमिलनाडु)
- मुख्यालय - श्रीरंगम (तमिलनाडु)
- सम्प्रदाय - श्री सम्प्रदाय
- इन्होंने विशिष्ट अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया।
- रामानुजाचार्य ब्रह्म व जगत में सजातीय व विजातीय भेद को अस्वीकार करते हैं।
- रामानुज ब्रह्म एवं जगत में स्वगत भेद को स्वीकार करते हैं।
- इन्होंने भक्ति की अवधारणा पर बल दिया।
- यह सगुण भक्ति को मानते हैं।
- कालांतर में श्री तिरुपति बालाजी को अपना मुख्य केंद्र बनाया।
- राजस्थान में केंद्र - गलता जी, जयपुर

- ✓ माध्वाचार्य - द्वैतवाद
- ✓ निम्बार्काचार्य - द्वैताद्वैतवाद
- ✓ वल्लभाचार्य - शुद्धाद्वैतवाद

3. सांख्य दर्शन -

- संस्थापक - कपिल मुनि (कोलायत, बीकानेर)
- सांख्य का शाब्दिक अर्थ - सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
- यह एक अनीश्वरवादी दर्शन है। अर्थात् ईश्वर को नहीं मानते हैं।
- यह द्वैतवादी दर्शन है।
- यह दर्शन पुरुष एवं प्रकृति को मानता है।
- इस दर्शन के अनुसार पुरुष एवं प्रकृति दोनों मिलकर जगत का निर्माण करते हैं।
- यह विकासवादी दर्शन है।
- यह योगदर्शन का जुड़वाँ दर्शन है।

4. योग दर्शन -

- संस्थापक - पतंजलि
- योग का शाब्दिक अर्थ - जोड़ना होता है।
- आत्मा का परमात्मा से मिलन।
- गीता में श्री कृष्ण के अनुसार 'कर्मों में कुशलता लाना ही योग है।'
- पतंजलि के अनुसार 'चित्तवृत्ति का निरोध ही योग है।'
- चित्त = मन + बुद्धि + अहंकार
- यह सांख्य दर्शन का जुड़वाँ दर्शन है।
- यह एक आस्तिक दर्शन है।
- चित्तवृत्ति निरोध हेतु पतंजलि अष्टांगिक मार्ग बताते हैं।
 1. यम - सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य
 2. नियम - शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान
 3. आसन
 4. प्राणायाम
 5. प्रत्याहार
 6. धारणा
 7. ध्यान
 8. समाधि

5. न्याय दर्शन -

- संस्थानक - गौतम ऋषि
- न्याय दर्शन को 'भारतीय दर्शन का तर्कशास्त्र' कहा जाता है।
- न्याय दर्शन ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण देता है।
- इसे 'वैशेषिक दर्शन का जुड़वाँ दर्शन' कहा जाता है।
- यह अपनी ज्ञान मीमांसा के लिए प्रसिद्ध है।
- यह (न्याय) ज्ञान के चार साधनों को मानते हैं-
 1. प्रत्यक्ष - इंद्रियजनित ज्ञान
 2. अनुमान - अनुमान आधारित ज्ञान

3. शब्द - पुस्तकें
4. उपमान - आधा ज्ञान पहले एवं आधा ज्ञान बाद में

6. वैशेषिक दर्शन -

- संस्थापक - कणाद ऋषि/उलूक
- इसे 'औलुक्य दर्शन' भी कहा जाता है।
- कणाद ने परमाणुवाद का सिद्धान्त दिया।
- यह न्याय दर्शन का जुड़वाँ दर्शन है।

☑ नास्तिक दर्शन -

☆ चार्वाक -

- संस्थापक - बृहस्पति
- चारु + वाक = चार्वाक
- इन्होंने दानवों को दिग्भ्रमित करने हेतु यह दर्शन दिया।
- इसे 'लोकायत दर्शन' भी कहा जाता है।
- यह अनीश्वरवादी दर्शन है।
- यह आत्मा, कर्मफल पुनर्जन्म को नहीं मानते ।
- आत्मा को 'पान' के उदाहरण द्वारा समझाया है।
- केवल चार तत्वों को मानते हैं - (आकाश को नहीं मानते)
 1. पृथ्वी
 2. जल
 3. वायु
 4. अग्नि
- ज्ञान प्राप्ति का केवल एक साधन प्रत्यक्ष को मानते हैं।
- केवल दो पुरुषार्थ को मानते हैं-
 1. अर्थ (धन)
 2. काम
- यह भौतिकवादी एवं सुखवादी दर्शन है।
- यह 'खाओ, पीओ और विवाह करो' में विश्वास रखते हैं।

“यावम जीवेत सुखम जीवेत । ऋणम कृत्वा घृतम पिबेत्” ॥

जैसे भी जीयो, सुख से जीयो, उधार लेकर घी पीयो ॥

☑ गुप्तकालीन प्रशासन -

⊛ राजनैतिक प्रशासन -

- सम्राट सभी शक्तियों का केंद्र होता था।
- सम्राट की उपाधियाँ - महाराजधिराज, परमेश्वर
- राजतंत्रात्मक, वंशानुगत शासन, निरंकुश शासन व्यवस्था थी।
- सामंती व्यवस्था विकसित हो चुकी थी।
- राजा के प्रमुख मंत्री -
 - महादण्डनायक - मुख्य न्यायाधीश
 - दण्डपाशिक - मुख्य पुलिस अधिकारी
 - महाअक्षपटलिक - आय एवं व्यय का मंत्री
 - करणिक - बाबू
 - महासन्धिविग्रहक - युद्ध एवं शान्ति का मंत्री
 - ध्रुवादि करणिक - राजस्व अधिकारी
 - विनयस्थितिस्थापक - धार्मिक एवं नैतिक मामलों का प्रमुख
 - महाबलाधिकृत - सेनापति

⊛ प्रान्तीय शासन -

गुप्तकाल शब्दावली	वर्तमान शब्दावली
▪ राष्ट्र	- देश
▪ भुक्ति	- राज्य
▪ विषय	- संभाग
▪ वीथि	- जिला
▪ पेठ	- तहसील
▪ ग्राम	- गाँव कहा जाता था।

गुप्तकालीन सामाजिक स्थिति -

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार थे।
- समाज 4 वर्णों में विभाजित था।
- जातिवाद अपने चरम पर था।
- जातीय व्यवस्था जन्म आधारित थी।
- अस्पृश्यता और सामाजिक असमानता थी।
- शुद्रों को वार्ता का अधिकार था। (वार्ता = कृषि + पशुपालन + व्यापार)

- इस समय आपद्धर्म (आपात स्थिति में अन्य वर्गों के काम भी किए जा सकते थे) की अवधारणा प्रसिद्ध हुई। जैसे -
 - इंदौर ताम्रपत्र के अनुसार क्षत्रिय घोड़ों का व्यापार करते थे।
 - मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त ब्राह्मण था लेकिन वह व्यापार करता था।
 - चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार सिंध, कच्छ एवं मालवा में शुद्रों का शासन था।
- गुप्तकाल में कलिवज्ये की अवधारणा विकसित हुई। (कलिवज्ये - समुद्री यात्रा से धर्म भ्रष्ट माना जाता था)
- अधिकारी सेवाओं के बदले भूमि और वेतन प्राप्त करते थे जिसके कारण एक नयी जाति/वर्ग का उदय हुआ जिसे कायस्थ कहा जाता था। कायस्थ शब्द प्रथम उल्लेख याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है।
- विधवा विवाह को बुरा माना जाने लगा।
- नियोग प्रथा नहीं थी।
- सती प्रथा का प्रारम्भ हो चुका था।
- **एरण अभिलेख - 510 ई. (मध्यप्रदेश)**
 - सती प्रथा का पहला उल्लेख एरण अभिलेख से मिलता है।
 - यह अभिलेख भानुगुप्त से संबंधित है।
 - इसमें सेनापति गोपराज की पत्नि के सती होने की जानकारी मिलती है।
- संभवतः महिलाओं को शिक्षा का अधिकार नहीं था।
- बाल विवाह, पर्दा प्रथा, वेश्यावृत्ति, देवदासी प्रथा आदि का प्रचलन था।
- वृद्ध वेश्याओं को 'कुटिनी' कहा जाता था।

गुप्तकालीन आर्थिक स्थिति -

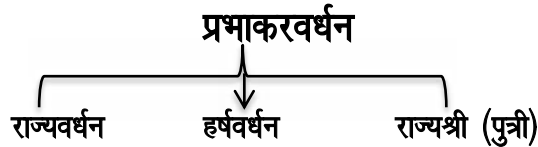
- गुप्तकाल में विदेशी व्यापार में गिरावट आयी, क्योंकि रोमन साम्राज्य का पतन हो गया था।
- घरेलु व विदेशी व्यापार होता था।
- चीन एवं पूर्वी देशों के साथ व्यापार होता था।
- ये व्यापार केवल वस्तु विनिमय द्वारा होता था, क्योंकि तत्कालीन समय की भारत से एक भी विदेशी मुद्रा नहीं मिलती है।
- श्रीलंका विदेशी व्यापार में मध्यस्थ की भूमिका निभाता था।
- गुप्तकालीन सोने के सिक्के बड़ी मात्रा में प्राप्त होते हैं।
- सिक्कों का प्रयोग उपहार व धन संचय हेतु किया जाता था।
- चाँदी एवं ताँबे के सिक्के कम मात्रा में मिलते हैं।
- फाह्यान के अनुसार भारत में कौड़ियों से व्यापार होता था। जैसे - दीनार (सोने का सिक्का) रूपिका - (चाँदी का सिक्का)
- फाह्यान के अनुसार घरेलु व्यवसाय अच्छी स्थिति में था।

गुप्तकालीन धार्मिक स्थिति -

- गुप्त शासकों ने भागवत धर्म को संरक्षण दिया लेकिन गुप्त शासक सहिष्णु थे।
- समुद्रगुप्त ने श्रीलंका के शासक मेघवर्मन को बोधगया में विहार बनाने की अनुमति प्रदान की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का महासंधिविग्राहक वीरसेन भगवान शिव का अनुयायी था। उसने उदयगिरी के शिव मंदिर को दान दिया था।
- गुप्तकाल में भागवत धर्म के साथ-साथ शैव धर्म, शाक्त धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म का विकास हुआ।

- इस काल में हरिहर की मूर्ति, अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति, कुर्मवाहिनी यमुना, मकरवाहिनी गंगा, त्रिदेव, एकमुखी शिवलिंग, चतुर्मुखी शिवलिंग की मूर्तियाँ बनना आरम्भ हुई।
- षड्दर्शन का विकास भी इसी समय हुआ।

☑ **हर्षवर्धन (606-647 AD) -**



- वंश - पुष्यभूति वंश
- राजधानी - स्थानेश्वर/थानेश्वर (हरियाणा)
- प्रभाकरवर्धन ने राजस्थान पर आक्रमण किया।
- प्रभाकर की बीमारी से आहत होकर उसकी पत्नी यशोमती ने आत्महत्या कर ली।
- प्रभाकर ने अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह कन्नौज के शासक गृहवर्मा से करवाया। (मौखरी वंश)
- कालांतर में प्रभाकर की मृत्यु हो गई।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने गृहवर्मा की हत्या कर दी।
- बंगाल के गौड़ शासक शशांक ने देवगुप्त का समर्थन किया था
- शशांक ने राज्यवर्धन की हत्या करवा दी थी।
- हर्षवर्धन ने कन्नौज पर आक्रमण किया एवं अपनी राज्यश्री की रक्षा की।
- हर्षवर्धन ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को जीत लिया था।
- संभवतया: शशांक की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन ने गौड़(बंगाल) को भी जीत लिया।
- शशांक भगवान शिव का अनुयायी था।
- शशांक ने बोधिवृक्ष को कटवाकर गंगा नदी में फिकवा दिया था।
- हर्ष ने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया था।
- चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को नर्मदा नदी के तट पर पराजित किया।

एहोल अभिलेख - कर्नाटक

- लेखक - रवि कीर्ति
- चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय व हर्ष के बीच युद्ध की जानकारी मिलती है
- इस अभिलेख में हर्ष को 'उत्तरापथस्वामी' कहा गया है।
- हर्षवर्धन ने कन्नौज में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन करवाया।
- सर्वधर्म सम्मेलन की अध्यक्षता ह्वेनसांग ने की, जिसका ब्राह्मणों ने विरोध किया था।
- हर्ष प्रत्येक पाँच वर्ष पश्चात् प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन करवाता था।
- 6वाँ महामोक्ष परिषद् में ह्वेनसांग ने भाग लिया था।
- हर्ष प्रयाग में अपनी समस्त संपत्ति दान में देता था।

• चीनी यात्री ह्वेनसांग -

- यह 629 ई. में स्थल मार्ग से भारत आया था।
- हर्ष के समय भारत आया था।
- यह बौद्ध धर्म की शिक्षा हेतु भारत आया था।
- इसने नालंदा विश्वविद्यालय में तीन वर्ष अध्ययन किया एवं कालान्तर में वहां अध्यापन/अध्यापक का कार्य किया।
- इसके अनुसार शक्रादित्य (कुमारगुप्त) ने नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया था।
- हर्षवर्धन ने इसे संरक्षण प्रदान किया था।
- इसने दक्षिण भारत की यात्रा की थी।
- इसको भारत में दो बार लूटा गया था फिर भी यह हर्षवर्धन के शासन की प्रशंसा करता है।
- इसने भीनमाल की यात्रा की। (पुस्तक - सी-यू-की)
- इसने अपनी पुस्तक हर्षवर्धन को 'शिलादित्य' कहा।
- इसने चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय व पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम का भी उल्लेख करता है।
- ह्वेनसांग की उपाधियाँ -

1. प्रिंस ऑफ ट्रेवलर/यात्रियों का राजकुमार
2. द्वितीय शाक्यमुनि
3. नीति पंडित

• हर्षवर्धन की पुस्तकें -

- ✓ नागानन्द - पुस्तक
- ✓ प्रियदर्शिका - नाटक
- ✓ रत्नावली - नाटक

• हर्षवर्धन के दरबारी विद्वान -

1. बाणभट्ट -
 1. हर्षचरित
 2. कादम्बरी
 3. चण्डीशतक
2. मयूर - सूर्यशतक
3. मातंग दिवाकर - यह दलित थे।

संगम काल

- संगम का शाब्दिक अर्थ संघ या परिषद् होता है।
- संगमों का आयोजन पाण्ड्य शासकों ने करवाया था।
- तमिल साहित्य का संकलन करने के लिए तीन संगमों का आयोजन किया गया।
- किसी भी तमिल साहित्य को प्रकाशित करने से पहले संगम से अनुमति लेनी पड़ती थी।
- तीन संगमों का आयोजन किया गया था।
- संगमकाल पहली - तीसरी शताब्दी तक।
- संगम साहित्य में चेर, चोल, पाण्ड्य वंश की जानकारी मिलती है।

★ प्रथम संगम -

- अध्यक्ष - आगस्त्य ऋषि
- स्थान - मदुरै
- संरक्षण - पाण्ड्य शासकों द्वारा।
- इस संगम की एक भी पुस्तक नहीं मिलती।
- अगस्त्य ऋषि एवं कौडिन्य ब्राह्मण को वैदिक संस्कृति सर्वप्रथम दक्षिण भारत ले जाने का श्रेय जाता है।

★ द्वितीय संगम -

- अध्यक्ष - अगस्त्य ऋषि, तोल्लकापियर
- स्थान - कपाटपुरम
- संरक्षण - पाण्ड्य शासकों द्वारा।
- पुस्तक - तोल्लकापियम् (तमिल व्याकरण)

★ तृतीय संगम -

- अध्यक्ष - नक्कीरर
- स्थान - उत्तरी मदुरै
- संरक्षण - पाण्ड्य शासकों द्वारा।
- पुस्तक -
 - ऐतुतोके - आठ भजनों का संकलन
 - पतुपातु - दस भजनों का संकलन

संगमकालीन साहित्य -

- | लेखक | पुस्तक |
|---|--|
| 1. इलंगो आदिगल | - शिल्पादिकारम <ul style="list-style-type: none"> इसमें कण्गी (पत्नी) एवं कोवलन (पति) की कहानी है। महिला प्रधान पुस्तक है। इस पुस्तक को नुपूर की कहानी भी कहते हैं। यह पुस्तक तमिल भाषा का प्रथम महाकाव्य मानी जाती है। इस पुस्तक में मुख्य पात्र कण्गी है। कण्गी के सम्मान में आज भी दक्षिण भारत व श्रीलंका में पत्तिनी पूजा होती है। |
| 2. सितले सत्तनार | - मणिमेखले <ul style="list-style-type: none"> मणि कोवलन व माधवी की पुत्री थी जो बौद्ध भिक्षुणी बन गई। यह पुस्तक शिल्पादिकारम का अगला भाग है। |
| 3. तिरुन्तक देवर/तेवर | - जीवक चिन्तामणि <ul style="list-style-type: none"> यह एक जैन साधु था। जीवक एक चोल राजकुमार था। जीवक ने आठ विवाह किए व अंत में साधु बन गया। इस पुस्तक को विवाह ग्रंथ भी कहते हैं। तमिल भाषा में इस पुस्तक को मणनूल कहा जाता है। |
| 4. तिरुवल्लुवर (एक समाज सुधारक व साधु था) | - 'कुरुल' (तमिल व्याकरण की जानकारी) <ul style="list-style-type: none"> संगम साहित्य से चेर, चोल और पाण्ड्य राजवंश के बारे में जानकारी मिलती है। संगम साहित्य में बौद्ध एवं जैन धर्म के बारे में भी जानकारी मिलती है। |

☑ चेर वंश -

- राजधानी - वांजि
- प्रतीक - धनुष
- यह दक्षिण भारत का सबसे प्राचीनतम वंश है।
- संगमकालीन/तमिल साहित्य में सर्वाधिक उल्लेख चेर वंश का मिलता है।
- पुराणों एवं अशोक के अभिलेखों में इन्हें '**केरलपुत**' कहा गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण एवं महाभारत में भी चेर वंश का उल्लेख मिलता है।
- चेर वंश के महत्वपूर्ण शासक -

☼ उद्यिन जेरल -

- इसने एक विशाल पाकशाला का निर्माण करवाया।
- इसने महाभारत के सभी योद्धाओं को भोज पर बुलाया था।

☼ नेदुन जेरल - इसने यवन व्यापारियों को बन्दी बना लिया था एवं उनको मुक्त करने के बदले में बड़ी मात्रा में धन वसूला।

☼ शेन गदुवन -

- यह चेर वंश का प्रसिद्ध शासक था। इसे **लाल चेर** या **भला चेर** कहा जाता था।
- इसने दक्षिण भारत में **पत्तिनी पूजा** शुरू की थी।

☑ चोल वंश -

- राजधानी - उरैयूर
- प्रतीक - बाघ

⊗ करिकाल -

- संगमकाल एवं चोल वंश का महान शासक था।
- करिकाल का शाब्दिक अर्थ - 'जले हुए पैर वाला'
- संगम साहित्य के अनुसार इसने हिमालय क्षेत्रों तथा श्रीलंका पर भी आक्रमण किया था।
- इसने कावेरी नदी पर ग्रेड एनिकट का निर्माण करवाया। जो विश्व के चार प्राचीनतम जल संरक्षण स्थलों में से एक है।
- पाणिनी की अष्टध्यायी में चोल वंश का उल्लेख मिलता है।
- इसने पुहार (कावेरीपत्तनम) शहर बसाया ।

☑ पाण्ड्य वंश -

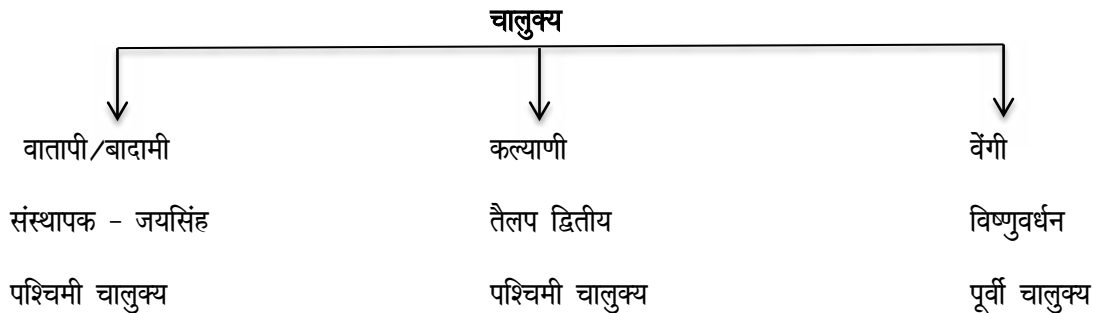
- राजधानी - मदुरै
- प्रतीक - कार्प/मछली
- मेगस्थनीज पाण्ड्य राज्य का उल्लेख करता है, एवं उसे 'मावर देश' कहता है।
- मावर देश मोतियों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।
- मेगस्थनीज के अनुसार, मावर देश में हेराक्ट की पुत्री का शासन था।

☑ संगमकालीन व्यापार-वाणिज्य -

- व्यापार-वाणिज्य अच्छी अवस्था में था।
- रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार होता था।
- अरिकामेडू (पांडिचेरी) से रोमन सिक्के मिलते हैं।
- प्रमुख बन्दरगाह - तोण्डी, मुशीरी, उरैयूर, बन्दर, अरिकामेडू, पुहार, शालियुर इत्यादि।
- आयातित वस्तुएँ - सोना, चाँदी, जवाहरात, घोड़े, शराब, काँच।
- निर्यातित वस्तुएँ - भारतीय मसाले (काली मिर्च), सूती वस्त्र, लकड़ी, कछुएँ, हाथी दाँत इत्यादि।

चालुक्य-पल्लव संघर्ष (550—750 ई.)

☑ चालुक्य वंश -



⊕ वातापी/बादामी के चालुक्य -

- संस्थापक - जयसिंह
- ✓ **रणराग** - यह गदायुद्ध में निपुण था।
- ✓ **कीर्तिवर्मन** - वातापी शहर का निर्माता।
- ✓ **मंगलेश** - इसके भतीजे पुलकेशन द्वितीय ने इसकी हत्या कर दी।
- ✓ **पुलकेशन द्वितीय** -
 - इस वंश का सबसे महान व शक्तिशाली शासक है।
 - इसने पल्लव वंश के शासक महेन्द्रवर्मन को पराजित किया और उसके साम्राज्य के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया।
 - अपने छोटे भाई विष्णुवर्धन को उत्तरी भाग का शासक बनाया जिन्हें वेंगी के चालुक्य कहा जाता है।
 - विष्णुवर्धन द्वारा स्थापित नई शाखा को चालुक्यों की वेंगी शाखा कहा जाता है।
 - इसने हर्षवर्धन को पराजित किया एवं परमेश्वर की उपाधि धारण की।
(यह जानकारी - रविकीर्ति के ऐहोल अभिलेख से मिलती है।)
 - **ऐहोल अभिलेख - कर्नाटक**
 - लेखक - रवि कीर्ति
 - भाषा - संस्कृत
 - लिपि - दक्षिणी ब्राह्मी
 - ऐहोल अभिलेख से महाभारत की जानकारी भी मिलती है।
 - ऐहोल अभिलेख में रवि कीर्ति ने स्वयं की तुलना कालिदास तथा भारवि से की है।
- ✓ **कीर्तिवर्मन द्वितीय** -
 - इस वंश का अंतिम शासक।
 - दन्तिदुर्ग ने इसकी हत्या करके राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।

❖ कल्याणी के चालुक्य -

✓ तैलप द्वितीय - संस्थापक

- कन्नड़ साहित्य में इसे 'कृष्ण का अवतार' कहा गया है।

✓ विक्रमादित्य VI -

- दरबारी विद्वान -

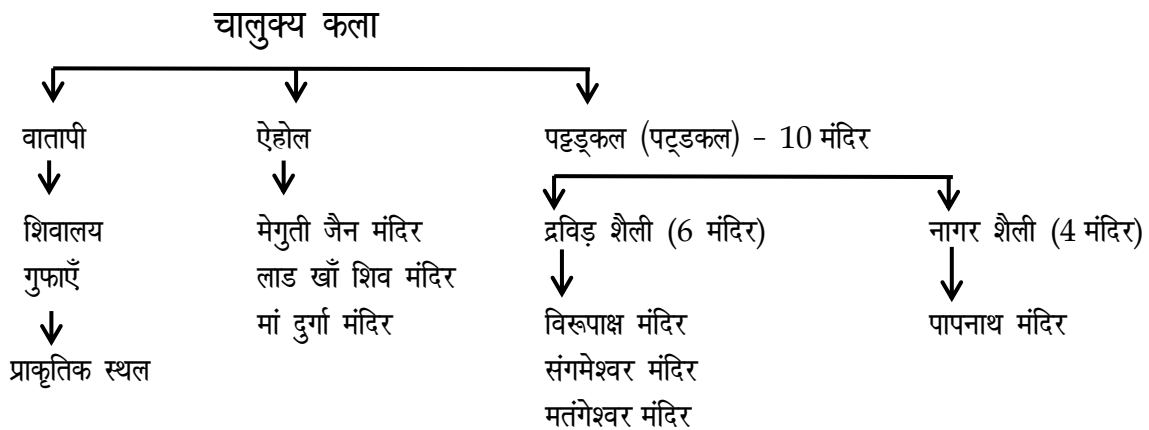
1. विल्हण - विक्रमांकदेवचरित
2. विज्ञानेश्वर - मिताक्षरा - यह याज्ञवल्क्य स्मृति पर टीका है।

✓ सोमेश्वर तृतीय -

- यह एक विद्वान शासक था।
- पुस्तक - मानसोल्लास
 - शिल्पशास्त्र पर आधारित
 - भोजन बनाने की विधियों का उल्लेख।
 - संगीत

☑ चालुक्य शासकों का सांस्कृतिक योगदान

- चालुक्य कला के तीन प्रमुख केन्द्र हैं।



- ऐहोल को 'मंदिरों की शहर' कहा जाता है।
- ऐहोल में 70 मंदिर हैं।
- मेगुती जैन मंदिर का निर्माण रविकीर्ति ने करवाया था।
- पट्टडकल यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने चालुक्यों को शिक्षा के व्यसनी बताया है।
- पुलकेशिन द्वितीय के मंत्री गंगराज दुर्विनीत ने 'शब्दावतार' पुस्तक (व्याकरण) की रचना की।
- पण्डित उदयदेव ने 'जैनेन्द्र व्याकरण' की रचना की।
- सोमदेव सूरी ने 'नीति वाक्यामृत' की रचना की।

पल्लव वंश

- पल्लव शब्द का मतलब पान (पत्ता) या झाड़ी होता है।
- उत्पत्ति स्थल - तोंडमण्डल
- राजधानी - कांची
- पल्लवों के प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में एवं बाद वाले संस्कृत में मिलते हैं।
- पल्लव शासकों को 'भारद्वाज गौत्रीय ब्राह्मण' माना जाता है।
- पल्लवों ने अपने अभिलेखों में स्वयं को क्षत्रिय बताया है।

✓ सिंहवर्मन/सिंहवर्मा -

- पल्लव वंश का संस्थापक

✓ विष्णुगोप -

- हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त ने विष्णुगोप को पराजित किया था।

✓ सिंहविष्णु -

- किरातार्जुनियम् का लेखक भारवि इसके दरबार में था।
- भारवि की पुस्तक किरातार्जुनियम् विषयवस्तु - भगवान शिव (किरात), अर्जुन की कहानी का उल्लेख है।
- यह संस्कृत की प्रसिद्ध कविता है।

✓ महेन्द्रवर्मन -

- यह विद्वान शासक था।
- उपाधि - 'मतविलास'
- पुस्तकें -
 1. मतविलास प्रहसन -
 - भारत की प्रथम व्यंग्य आधारित पुस्तक।
 - इसमें बौद्ध भिक्षुओं एवं कापालिकों पर व्यंग्य किया गया है।
 2. भगवतज्जुदियम प्रहसन - व्यंग्यात्मक पुस्तक

✓ नरसिंहवर्मन प्रथम -

- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक।
- उपाधियाँ - मामल्ल, वातापीकोण्ड
- इसने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित किया एवं वातापीकोण्ड की उपाधि धारण की।
- इसने मामल्लपुरम नामक शहर बसाया जिसे वर्तमान में महाबलिपुरम कहा जाता है।

✓ नरसिंहवर्मन द्वितीय -

- उपाधि - राजसिंह
- इसके समय पल्लव मंदिर स्थापत्य कला का तीसरा चरण आरम्भ हुआ।

✓ नन्दीवर्मन द्वितीय - इसके समय पल्लव मंदिर स्थापत्य कला का चौथा चरण आरम्भ हुआ।

☑ पल्लवकालीन कला -

- द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैली का आरम्भ पल्लव वंश से माना जाता है।
- पल्लव शैली को तीन भागों में विभाजित किया जाता है-

1. मण्डप
2. रथ मंदिर
3. मंदिर

- पल्लव कला का विकास चार चरणों में हुआ -

1. महेन्द्रवर्मन/मतविलास शैली -

- इस समय गुफाओं का निर्माण किया गया जिन्हें मंडप कहा जाता था।
- प्रत्येक मण्डप में दो से तीन कक्ष होते थे।

2. नरसिंहवर्मन प्रथम/मामल्ल शैली -

- इसके काल में मण्डपों व रथ मंदिरों का निर्माण आरम्भ हुआ।
- प्रत्येक मण्डप में तीन से चार कक्ष होते थे।
- इसके काल में महाबलिपुरम में रथ मंदिरों का निर्माण हुआ।
- यह एकाक्षम मंदिर है। (एक ही पत्थर को काटकर बनाए गए) जिन्हें 'सप्तपैंगौड या पाण्डवरथ' कहा जाता है।
- इन मंदिरों की संख्या आठ है - (अंतिम मंदिर 2004 की सुनामी के दौरान मिला।)
 1. युधिष्ठिर रथ मंदिर - सबसे सुन्दर रथ मंदिर
 2. अर्जुन रथ मंदिर
 3. भीम रथ मंदिर
 4. नकुल-सहदेव रथ मंदिर
 5. द्रौपदी रथ मंदिर - सबसे साधारण रथ मंदिर
 6. पीदारी रथ मंदिर
 7. गणेश रथ मंदिर
 8. वलैय रथ मंदिर

3. नरसिंहवर्मन द्वितीय/राजसिंह शैली -

- इस काल में स्वतंत्र मंदिरों का विकास हुआ।
- यह काल पल्लव मंदिर स्थापत्य कला का स्वर्णकाल था।
- महाबलीपुरम का तटीय मंदिर इस शैली का प्रथम मंदिर है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है।
- अन्य प्रसिद्ध मंदिर -
 1. बैकुंठ पैरीमल मंदिर - कांची
 2. कैलाशनाथ मंदिर - कांची

4. नन्दीवर्मन द्वितीय शैली -

- पल्लव स्थापत्य कला में गिरावट आयी।
- इस समय छोटे-छोटे मंदिरों का निर्माण आरम्भ हालांकि अलंकरण पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।
- प्रमुख मंदिर - मंतगेश्वर/मुक्तेश्वर मंदिर (कांची)

नोट -

- अर्जुन की तपस्या/गंगावतरण शैली महाबलिपुरम में स्थित है।
- श्री कृष्ण की मक्खन की गेंद/बटर बॉल महाबलिपुरम में स्थित है।
- महाबलिपुरम यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है।
- पल्लव शासकों ने शिक्षा के केन्द्रों का निर्माण किया, जिन्हें 'महाघंटिका/घंटिका' कहा जाता है।
- पल्लव काल में कांची शिक्षा का केंद्र था।
- पल्लव शासकों ने विद्वानों को संरक्षण दिया था। जैसे -
 - भारवि - किरातार्जुनियम
 - दण्डिन - दशकुमार चरित, काव्यादर्श, अवन्ति सुंदरी
- पल्लव शासकों के समय आलवार तथा नयनार संतों ने भक्ति आंदोलन को आरम्भ किया।
- भक्ति आंदोलन का प्रथम चरण था।

★ अपराजित शैली -

- इस शैली का विकास पल्लव नरेश अपराजित के काल में हुआ था।
- इस शैली का प्रमुख उदाहरण बाहुर का मंदिर है।
- तंजौर का मंदिर (राज मंदिर/ राजराजेश्वर/वृहदेश्वर मंदिर)

चोल वंश

✓ विजयालय -

- चोल वंश का संस्थापक
- राजधानी - तंजौर/तंजावुर

✓ आदित्य प्रथम -

- इसने पल्लवों को पराजित कर, चोलों की स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

✓ परान्तक प्रथम -

- इसका 'उत्तरमेखुर अभिलेख' मिलता है, जिसमें स्थानीय स्वशासन की जानकारी मिलती है।
- ब्राह्मणों को भूमि का अनुदान दिया जाता था, जिसके प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन गांव स्वयं करता था।
- गाँव को 30 वार्डों में विभाजित किया जाता था।
- 30 सदस्यों की इस समिति को सभा/वरियम/उर कहा जाता था।

- सदस्य बनने हेतु कुछ योग्यताएँ -
 - ✓ कम से कम 1.5 एकड़ जमीन हो
 - ✓ स्वयं का मकान
 - ✓ वेदों का ज्ञान हो
 - ✓ आपराधिक प्रकृति का ना हो
 - ✓ आयु 35 से 70 वर्ष तक
 - ✓ एक सदस्य एक बार ही चयनित
 - ✓ लॉटरी का चयन बच्चों द्वारा

✓ **परान्तक द्वितीय** - सुन्दर चोल के रूप में प्रसिद्ध।

✓ **उत्तम चोल** - इसने सोने के सिक्के चलाए।

✓ **अरिमोलीवर्मन** -

- उपाधि - राजराज
- इसने 'लौह एवं रक्त की नीति' को अपनाया।
- श्रीलंका के शासक महेंद्र पंचम को पराजित किया एवं श्रीलंका की राजधानी अनुराधापुर को तहस-नहस कर दिया।
- उत्तरी श्रीलंका पर अधिकार कर उसका नाम 'मुंडीचोल मंडलम' कर दिया।
- तंजौर में वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया, जिसे **राजराजेश्वर मंदिर** भी कहा जाता है।
- यह मंदिर 1010 ई. में बनकर तैयार हुआ था।
- वर्ष 2010 में भारत सरकार ने तंजौर में एक कार्यक्रम आयोजित किया था तथा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने वृहदेश्वर मंदिर पर 1000 रुपये का सिक्का जारी किया।
- राजराजेश्वर मंदिर अपने विमान (शिखर) के लिए प्रसिद्ध है।

✓ **राजेन्द्र प्रथम (1014-1044 AD)-**

- इस वंश का सबसे महान शासक
- इसने चालुक्य, पाण्ड्य तथा चेर शासकों को पराजित किया था।
- इसने अपने पिता की 'लौह एवं रक्त की नीति' को जारी रखा।
- इसने महेंद्र पंचम की हत्या कर सम्पूर्ण श्रीलंका पर अधिकार कर लिया।
- इसने मालदीव तथा अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह को जीत लिया।
- जावा, सुमात्रा, बाली (इंडोनेशिया) तथा सुदीमन (सिंगापुर) को जीत लिया।
- थाईलैंड, कंबोडिया तथा बर्मा के शासकों को भी पराजित किया था।
- इसके समय में बंगाल की खाड़ी को 'चोलों की झील' कहा जाता था।
- इसने गंगा नदी तक सभी राज्यों को जीता।
- पाल वंश के शासक महिपाल को पराजित किया।
- इसने **गंगेकोण्ड की उपाधि** धारण की और **गंगेकोण्डचोलपुरम** नामक शहर बसाया तथा उसको अपनी राजधानी बनाया।
- गंगेकोण्ड चोलेश्वर मंदिर तथा गंगेचोलम तालाब का निर्माण करवाया।
- इसने वृहत्तर भारत के सपने को पूरा किया तथा भारतीय संस्कृति को दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैलाया।

- इसने कुछ मंत्रों की रचना की थी।
- यह स्वयं भगवान शिव का अनुयायी था।
- इसे 'भारत का सिकन्दर' कहा जाता है।

✓ राजाधिराज -

- इसने कई चोल अभियानों का नेतृत्व किया था।

☼ कोप्पम का युद्ध -

- राजाधिराज व सोमेश्वर (चालुक्य) के बीच
- युद्ध भूमि पर राजाधिराज की मृत्यु हो गई।
- सोमेश्वर पराजित हुआ।
- चोल शासक राजाधिराज विजय हुआ।
- राजाधिराज के लिए कहा जाता है कि वह राजा जिसकी मृत्यु हाथी की पीठ पर हुई थी।
- यह दक्षिण भारत के लोक देवता है।

✓ राजेंद्र द्वितीय - इसका राज्याभिषेक युद्ध के मैदान में हुआ था।

✓ अधिराजेन्द्र - जनता ने इसकी हत्या कर दी।

✓ कुलोतुंग द्वितीय -

- यह खड़िवादी व कट्टर शासक था।
- इसने भगवान विष्णु/गोविंदराज की मूर्ति को समुद्र में फिकवा दिया था।
- इस मूर्ति को रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकालकर पुनः तिरुपति बालाजी मंदिर में स्थापित करवाया।
- कालांतर में विजयनगर साम्राज्य के मंत्री रामराय ने मूर्ति को हम्पी में पुनः स्थापित किया।

☑ चोल वंश की विशेषताएँ -

- स्थानीय स्वशासन
- शैव धर्म को संरक्षण
- नटराज की मूर्ति इस समय बनना प्रारम्भ हुई।
- बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील कहा जाता था। (विशाल नौसेना)

☑ चोल शासकों का सांस्कृतिक योगदान

पल्लव प्रभाव

- विजयालय ने नाथमलाई (नात्तमलाई) नामक स्थान पर चोलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- परान्तक प्रथम ने श्रीनिवास नल्लुर नामक स्थान पर कोरंगनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।
 - कोरंगनाथ मंदिर (तमिलनाडु) 4 मंजिला है
 - यह मंदिर मां सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा की सुंदर तक्षण मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

चोल प्रभाव

- अरिमोलिवर्मन ने तंजौर में मंदिर-वृहदेश्वर का निर्माण करवाया। (राजराजेश्वर मंदिर भी कहा जाता है।)
- यह मंदिर दक्षिण भारत का सबसे ऊँचा मंदिर, विशाल विमान के लिए प्रसिद्ध, बिना नींव के ग्रेनाइट से निर्मित।
- राजेन्द्र प्रथम ने गंगेकोण्डचोलपुरम में गंगेकोण्डचोलेश्वर मंदिर एवं गंगेचोलम तालाब का निर्माण करवाया।

❖ चोल काल के अन्य प्रसिद्ध मंदिर -

- एरातेश्वर मंदिर - दारासुरम, कुम्भकोणम (तमिलनाडु)
- कम्पारेश्वर मंदिर - थिरुभुवनम (तमिलनाडु)

नोट -

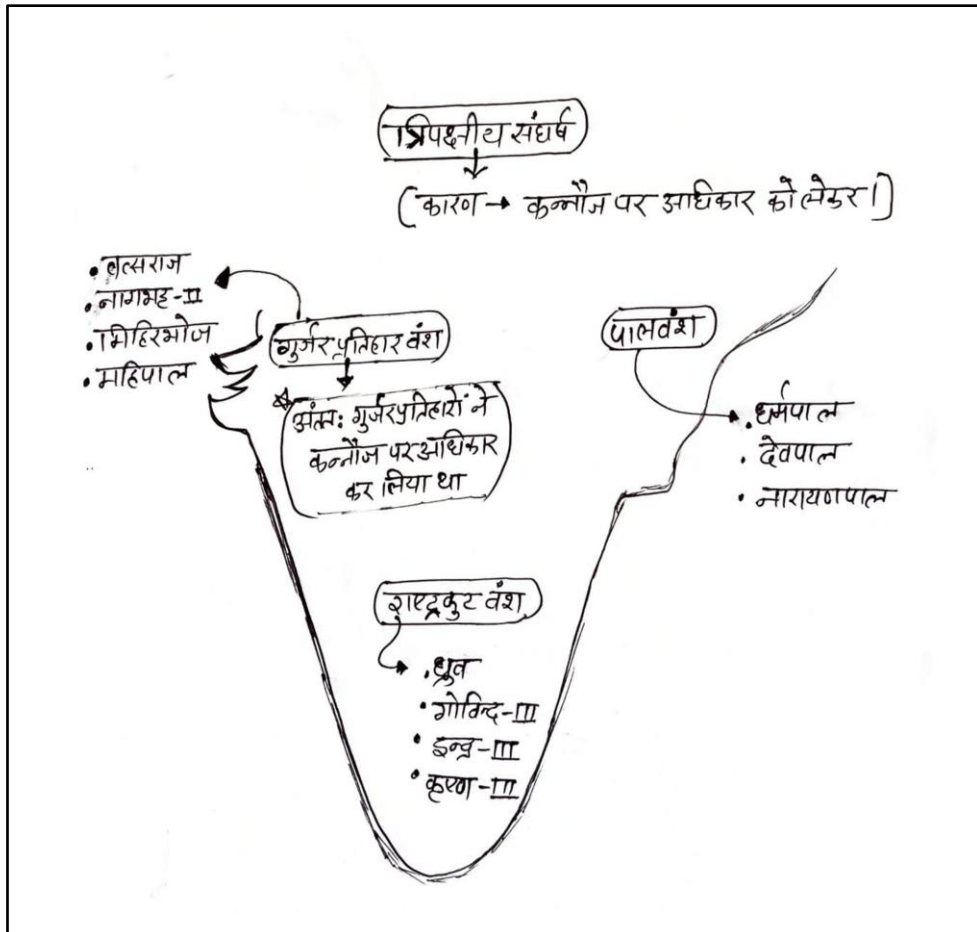
- दारासुरम विशाल मूर्तियों का केंद्र था।
- इस काल में भगवान शिव की मूर्तियों का निर्माण अधिक हुआ।
- नटराज की मूर्ति इस काल की प्रमुख विशेषता है।
- मंदिरों की दीवारों से रामायण, महाभारत, भगवान शिव से संबंधित धार्मिक चित्र मिलते हैं।
- चोल कालेश्वर मंदिर यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है।

त्रिपक्षीय संघर्ष

गुर्जर प्रतिहार - गुजरात, राजस्थान
पाल - बंगाल
राष्ट्रकूट - दक्षिण भारत

त्रिपक्षीय संघर्ष

- हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज में राजनीतिक शून्यता आ गई थी।
- कन्नौज पर आयुध वंश के शासक चक्रायुध व इन्द्रायुध का शासन था।
- इन दोनों भाईयों में सत्ता को लेकर संघर्ष था।
- कन्नौज पर अधिकार को लेकर गुर्जर प्रतिहार वंश, पाल वंश, तथा राष्ट्रकूट वंश में त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ।



☑ त्रिपक्षीय संघर्ष के छः चरण -

⊛ प्रथम चरण -

✓ प्रथम युद्ध -

- वत्सराज (गुर्जर प्रतिहार) व धर्मपाल (पाल वंश) के मध्य
- वत्सराज की जीत हुई।

✓ द्वितीय युद्ध -

- वत्सराज (गुर्जर प्रतिहार) व ध्रुव (राष्ट्रकूट) के मध्य
- ध्रुव की जीत हुई।

⊛ द्वितीय चरण -

✓ प्रथम युद्ध -

- नागभट्ट द्वितीय (गुर्जर प्रतिहार) व धर्मपाल (पाल वंश) के मध्य
- नागभट्ट द्वितीय की जीत हुई।

✓ द्वितीय युद्ध -

- नागभट्ट द्वितीय (गुर्जर प्रतिहार) व गोविन्द तृतीय (राष्ट्रकूट) के मध्य
- गोविन्द तृतीय की जीत हुई।

⊛ तृतीय चरण -

- मिहिरभोज (गुर्जर प्रतिहार) व देवपाल (पाल वंश) के मध्य युद्ध हुआ।
- देवपाल की जीत हुई।

⊛ चतुर्थ चरण -

- मिहिरभोज (गुर्जर प्रतिहार) व नारायणपाल (पाल वंश) के मध्य युद्ध हुआ।
- मिहिरभोज की जीत हुई।

- राष्ट्रकूटों ने तीसरे व चौथे चरण में भाग नहीं लिया।

⊛ पंचम चरण -

- महिपाल (गुर्जर प्रतिहार) व इन्द्र तृतीय (राष्ट्रकूट) के मध्य युद्ध हुआ।
- इन्द्र तृतीय की जीत हुई।

⊛ छठा चरण -

- महिपाल (गुर्जर प्रतिहार) व कृष्ण तृतीय (राष्ट्रकूट) के मध्य युद्ध हुआ।
- कृष्ण तृतीय की जीत हुई।
- पाल शासकों ने पंचम व छठे चरण में भाग नहीं लिया।

नोट -

1. कृष्ण तृतीय ने कन्नौज को तहस-नहस कर दिया तथा पुनः दक्षिण भारत लौट गया था।
2. त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूट व पाल शासक आपस में कभी नहीं लड़े।
3. राष्ट्रकूट वंश की इस संघर्ष में कभी हार नहीं हुई।
4. अंततः गुर्जर प्रतिहारों ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- संस्थापक - हरिश्चन्द्र
- प्रतिहार का शाब्दिक अर्थ - द्वारपाल
- गुर्जर प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण का वंशज मानते थे।
- प्राम्भिक राजधानी भीनमाल थी तथा कालांतर में मण्डौर (जोधपुर) भी उनकी राजधानी रही।

✓ नागभट्ट प्रथम -

- यह गुर्जर प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट ने अरबों को पराजित किया।

✓ वत्सराज - इसके समय त्रिपक्षीय संघर्ष आरम्भ हुआ।

✓ मिहिरभोज -

- यह विद्वान शासक था।
- उपाधियाँ -
 1. भोज
 2. प्रभास
 3. आदिवराह - यह भगवान विष्णु का अनुयायी था।
- इसके समय अरब यात्री सुलेमान ने भारत की यात्रा की।
- सुलेमान, मिहिरभोज को अरबों का स्वाभाविक शत्रु बताया है।
- सुलेमान ने देवपाल को उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है।

✓ महेंद्रपाल -

- गुरु - राजशेखर
- राजशेखर की पुस्तकें -
 1. काव्यमीमांसा
 2. विशालभञ्जिका
 3. कर्पूरमंजरी
 4. बालरामायण
 5. हरविलास

✓ महिपाल - इसने कन्नौज पर अधिकार कर लिया था।

✓ यशपाल - इस वंश का अंतिम शासक था।

☑ गुर्जर-प्रतिहारों का सांस्कृतिक योगदान -

- मिहिरभोज के समय ग्वालियर किले में तेली के मंदिर का निर्माण।
- तेली के मंदिर का निर्माण तेल व्यापारियों की श्रेणी ने करवाया।
- तेली के मंदिर के आस-पास से गुर्जर-प्रतिहार काल की मूर्तियाँ एवं स्तम्भ मिलते हैं।
- ग्वालियर के पास बटेश्वर मंदिर समूह (200) मिलते हैं।
- बाड़ौली (कोटा) में आठ मंदिरों का एक समूह मिलता है, जिसमें गटेश्वर मंदिर, गणेश मंदिर, शिव मंदिर, त्रिमूर्ति मंदिर प्रसिद्ध हैं।
- गुर्जर प्रतिहार काल में 'मारु/मरुगुर्जर मंदिर स्थापत्य शैली' विकसित हुई। यह नागर शैली की उपशैली है।
- ओसिया (जोधपुर ग्रामीण) जैन मंदिर मारुगुर्जर शैली में निर्मित है।
- इस काल में ग्वालियर में जैन धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया।

राष्ट्रकूट वंश

✓ दंतिदुर्ग -

- संस्थापक शासक
- राजधानी - मान्यखेत/मालखेड़ा (कर्नाटक)

✓ कृष्ण प्रथम -

- इसने एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया। यह एकाक्षम मंदिर है।
- यह भारतीय मंदिर स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण है।
- राष्ट्रकूट शासकों ने एलोरा में 34 गुफाओं का निर्माण करवाया। जिसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र हैं।

✓ ध्रुव -

- उपाधि = धारावर्ष
- इसके समय त्रिपक्षीय संघर्ष आरम्भ हुआ।

✓ गोविन्द तृतीय -

✓ अमोघवर्ष -

- यह जैन धर्म का अनुयायी व माता लक्ष्मी का भक्त था।
- इसने अपनी अंगूली काटकर माता लक्ष्मी को अर्पित की थी।
- एक विद्वान शासक था।
- पुस्तकें -
 - कविराजमार्ग - कन्नड़ भाषा की प्रथम कविता/पुस्तक
 - रत्नमलिका - कन्नड़ भाषा में रचित।
- दरबारी विद्वान/कवि -
 1. जिनसेन - आदिपुराण
 2. महावीराचार्य - गणितसारसंग्रह
 3. शक्तायन - अमोघवृत्ति

- अमोघवर्ष की पुत्री चन्द्रोवल्लभे को रायचूर दोआब का राजस्व मिलता था।
- अरब यात्री सुलेमान ने इसे विश्व के चार सर्वश्रेष्ठ शासकों में से एक बताया।
- सुलेमान के अनुसार अमोघवर्ष के पास सर्वाधिक संपत्ति थी।

✓ इन्द्र तृतीय -

✓ कृष्ण तृतीय -

- इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक प्रथम को पराजित किया।

पाल वंश

✓ गोपाल -

- इसने पाल वंश की स्थापना की।
- इसको बंगाल की जनता द्वारा चुना गया था।
- पाल वंश अंतिम वंश था, जिसने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
- गोपाल पहले एक विहार में कार्य करता था तथा इसने ओदन्तपुरी विहार (बिहार) का निर्माण करवाया।

✓ धर्मपाल -

- इस वंश का सबसे महान शासक था।
- इसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया। (कालांतर में बख्तियार खिलजी ने इसे तुड़वा दिया था)
- इसने नालंदा विश्वविद्यालय में कुछ सुधार किये। (बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को तुड़वा दिया था)
- बख्तियार खिलजी मोहम्मद गौरी का सेनापति था।
- सोमपुरी विहार/पहाड़पुर विहार (बांग्लादेश) का निर्माण करवाया।
- गुजराती कवि सोड़ड़ल ने इसे 'उत्तरापथस्वामी' कहा है।

✓ देवपाल -

✓ नारायणपाल

✓ महिपाल - पाल वंश का दूसरा संस्थापक

✓ रामपाल -

- इसके दरबार में सन्ध्याकार नन्दी नामक विद्वान थे, जिन्होंने 'रामपाल चरित' की रचना की।
- रामपालचरित में 'कैवर्त किसान विद्रोह' का उल्लेख मिलता है।

☑ भारतीय मंदिर स्थापत्य कला/निर्माण शैलियाँ -

1. नागर शैली -

- मंदिर के प्रमुख भाग -
 - गर्भगृह
 - परिक्रमा पथ
 - शिखर
 - अंतराल - गर्भगृह व मण्डप को जोड़ने वाला हिस्सा।
 - महामण्डप - गर्भगृह के सामने स्तम्भों पर टिका हुआ भाग
 - अर्द्धमण्डप
 - मण्डप
- मुख्य विशेषताएँ -
 - ऊँचा चबूतरा
 - शिखर जो क्रमशः उपर की ओर छोटा होता जाता है।
 - वर्गाकार गर्भगृह
- प्रमुख मंदिर -
 1. कंदारिया महादेव मंदिर
 2. लक्ष्मण मंदिर
 3. मतंगेश्वर महादेव मंदिर
 4. सहस्रबाहु मंदिर (सास-बहू) - ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

} खजुराहो, मध्यप्रदेश
- खजुराहो मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों ने करवाया था।
- खजुराहो चंदेल शासकों की धार्मिक राजधानी थी।
- चंदेल शासकों की राजनीतिक राजधानी - महोबा, उत्तर प्रदेश
- चौसठ योगिनी मंदिर - मुरैना, मध्यप्रदेश
 - इसका निर्माण कच्छपात वंश के शासक देवपाल ने करवाया था।
 - भारतीय संसद भवन इस मंदिर से प्रभावित है।

2. द्रविड़ शैली -

- मंदिर के मुख्य भाग -
 - गर्भगृह
 - परिक्रमा पथ
 - विमान - यह अष्टकोणीय एवं पिरामिडाकार होता है।
 - अंतराल
 - महामण्डप/मण्डप
 - अर्द्धमण्डप

- विशेषताएँ -
 - विमान - गर्भगृह का उपरी भाग, पिरामिडाकार संरचना, अष्टकोणीय आकार
 - गोपुरम - प्रवेश द्वार, गोपुरम पाण्ड्य वंश की विशेषता है।
 - वर्गाकार गर्भगृह
 - विशाल प्रांगण - मुख्य मंदिर के समीप अन्य छोटे मंदिर
 - पानी का तालाब
 - मंदिर में विभिन्न रंगों का प्रयोग
- मुख्य मंदिर -
 - मीनाक्षी मंदिर - मदुरई, तमिलनाडु
 - विरूपाक्ष मंदिर - हम्पी, कर्नाटक
 - चोल, पाण्ड्य, चालुक्यों द्वारा निर्मित मंदिर।

3. बेसर शैली -

- यह एक मिश्रित शैली है जिसमें मंदिर निर्माण नागर शैली एवं अलंकरण द्रविड़ शैली में किया गया है।
- मुख्य मंदिर -
 1. होयसलेश्वर मंदिर - हालेविडु (कर्नाटक)
 2. चन्ना केशव मंदिर - बैल्लूर
 3. केशव मंदिर - सोमनाथपुरी

नोट -

1. उपर्युक्त तीनों मंदिरों को वर्ष 2023 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।
2. इन मंदिरों को संयुक्त रूप से होयलेश्वर मंदिर कहा जाता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य

वेदांग सूत्र तथा स्मृति साहित्य

- वेदों को सही ढंग से समझने के लिए वेदांगों की रचना की गई।
- वेदांगों की कुल संख्या छः है - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष
- शैली - गद्य
- कल्प का अर्थ - कर्मकाण्ड अर्थात् विधि/नियम
 - श्रोत सूत्र
 - गृह्य सूत्र
 - धर्म सूत्र
- धर्म सूत्र से सामाजिक व्यवस्था जैसे - वर्णाश्रम पुरुषार्थ की जानकारी मिलती है।
- धर्म सूत्र के प्रणेता स्रोत आपस्तम्ब माने जाते हैं।
- प्रमुख सूत्रकार - गौतम, आपस्तम्ब, बोधायन वशिष्ठ, सांख्यायन, आश्वलायन।

क्षेत्र	विकास/रचयिता
शिक्षा	पाणिनी, काव्यायन
व्याकरण	अष्टध्यायी
निरुक्त	निघण्टु
ज्योतिष	लगध, आर्यभट्ट
छंद	पिंगल
कल्प	गौतम, बोधायन, आपस्तम्ब

- स्मृतियाँ हिन्दू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं, ये अधिकांशः पद्य शैली में लिखी गई हैं।

प्रमुख स्मृतियाँ	रचनाकाल
मनुस्मृति	200BC-200AD
याज्ञवल्क्य स्मृति	100BC-300AD
नारद स्मृति	300BC-400AD
पाराशर स्मृति	300BC-500AD
कात्यायन स्मृति	400BC-600AD
देवल स्मृति	पूर्व मध्यकालीन

संस्कृत साहित्य

- ✓ रामायण - वाल्मीकि
- ✓ महाभारत - वेदव्यास
- ✓ पुराण - महर्षि लोमहर्ष व उनके पुत्र उग्रश्रवा।
- ✓ कल्हण - राजतरंगिणी
- ✓ विल्हण - विक्रमांकदेव चरित
- ✓ जयदेव - गीत गोविंद
- ✓ कालिदास - कुमारसंभव, रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्

- ✓ भारवि - किरातार्जुनियम्
- ✓ अश्वघेष् - बुद्ध चरित, सौन्दरानन्द
- ✓ माघ - शिशुपाल वध
- ✓ भट्टनारायण - वेणीसंहार

☑ प्राचीन भारत की प्रमुख पुस्तकें -

क्र.सं.	पुस्तक	लेखक
1.	महाभाष्य	पतंजलि
2.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
3.	मालविकाग्निमित्र	कालिदास
4.	अर्थशास्त्र	कौटिल्य
5.	नीतिसार	कामंदक
6.	काव्यालंकार	भामह
7.	सांख्यकारिका	ईश्वरकृष्ण
8.	नाट्यशास्त्र	भरत मुनि
9.	सरस्वती कंठाभरण	राजाभोज
10.	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
11.	कीर्ति कौमुदी	सोमेश्वर
12.	स्वप्नवासवदत्तम	भास
13.	कामसूत्र	वात्स्यायन
14.	ब्रह्म सिद्धांत	ब्रह्मगुप्त
15.	प्राकृत पैंगलम	आचार्य हेमचंद्र
16.	पदार्थ धर्म संग्रह	आचार्य प्रशस्तापाद
17.	सिद्धांत शिरामणि	भास्कराचार्य
18.	ब्रह्मस्फुट सिद्धांत	ब्रह्मगुप्त
19.	पंचसिद्धांतक महाकाव्य	वराहमिहिर
20.	अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट
21.	आर्य भट्टीयम, दशगीतिका सूत्र	आर्यभट्ट

पालि और प्राकृत साहित्य -

- बौद्ध धर्म का वैधानिक साहित्य पालि में है, जिसे त्रिपिटक कहा जाता है।
- त्रिपिटक - विनयपिटक, सुतपिटक, अभिधम्म पिटक
- जातक कथा भी इन्हीं पिटक साहित्य का भाग है।
- बौद्धों की गीता नाम से प्रसिद्ध धम्मपद का संबंध भी सुतपिटक नामक दूसरे बौद्ध महाग्रंथ से है।
- आचार्य नागसेन द्वारा दार्शनिक संकाय की विषयवस्तु पर आधारित - मिलिन्दपन्हो पिटकेतर साहित्य में सर्वश्रेष्ठ है।
- प्राकृत भाषा में जैनो का प्रचुर साहित्य लेखन हुआ जिसे जैन आगम कहते हैं।
- जैन आगम में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंदसूत्र, 4 मूल सूत्र, अनुयोग सूत्र व नंदी सूत्र शामिल हैं।

तमिल साहित्य -

- तमिल साहित्य के त्रिरत्न - कंबन, ओट्टुकुटन व पुगलेनिद।
 1. कंबन -
 - तमिल रामायण का रचनाकार।
 - तमिल रामायण, तमिल साहित्य का महाकाव्य कहलाता है।
 2. ओट्टुकुटन-
 - तमिल रामायण के उत्तरकांड की रचना की।
 - पिल्लई तमिल व ओवई की रचना की।
 - इसके तक्कयागप्पराणी में युद्ध अभियान तथा मूवर डल में विजय प्राप्त सैनिकों की शोभा यात्रा का वर्णन है।
 3. पुगलेनिद -
 - नलदमयन्ती कथा को नलवेणबा नाम से तमिल में अनुवादित किया।
 - कंबन व ओट्टुकुटन व शोक्किलार कुलान्तंग द्वितीय के शासनकाल में थे।
 - तमिल में अबईयार नाम से तीन कवयित्रियाँ हुई।
 - अब्बे द्वितीय, कुलान्तुंग प्रथम के समय में कवयित्री थी, यह अपने हास्य व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध थी, इसने नन्नूर कौवे तथा कलविओ लुक्कम नामक काव्य ग्रंथों की रचना की।
- नोट - पेरुनदेवनार नाम से तीसरे संगम में भी एक अन्य कवि हुए थे।
- अमृतसागर ने छन्दशास्त्र पर दो ग्रंथ लिखे -
 - याप्पसुंगलम
 - याप्पसुंगलक्करिगै
- तिरुन्तकदेवर - जीवक चिन्तामणि
- तोलामिली - शूलमणि
- कल्लाडनार - कल्लाडम
- जयन्गोदार - कलिंगत्तुपर्णि
- पावानान्दि - नन्नूल नामक व्याकरण ग्रंथ

नोट - तमिल साहित्य का स्वर्णकाल = चोल काल